धींधवाल पब्लिकेशन

DHP-01

Dhindhwal Publication

निःशुल्क नवीनतम राजस्थान मानचित्र

नवगठित जिलों के अनुसार

राजस्थान का भूगोल एवं अर्थव्यवस्था

(6 वां संशोधित संस्करण) 2023-24

- राजस्थान बजट- 2023-24
- आर्थिक समीक्षा रिपोर्ट 2022-23
- नवीनतम आंकड़े व योजनाएँ
- रंगीन मानचित्र
- गत परीक्षाओं के प्रश्नों सहित

होशियार सिंह

उप निरीक्षक, राजस्थान पुलिस

धींधवाल पब्लिकेशन

परीक्षा में सफलता हेतु इन पुस्तकों का अध्ययन करें

हमारे प्रकाशन की अन्य पुस्तकें

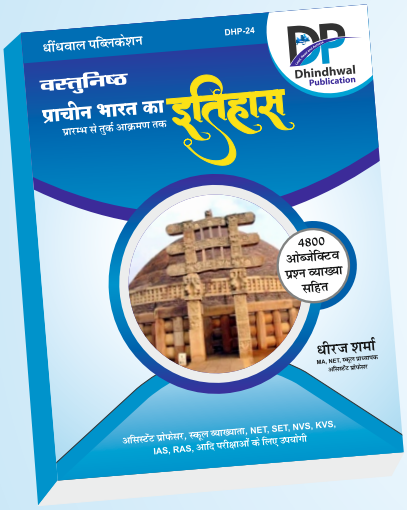

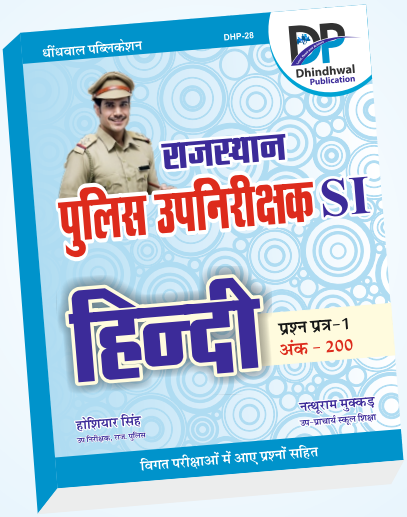

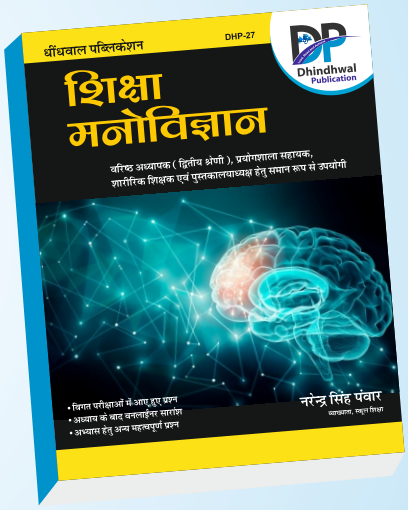

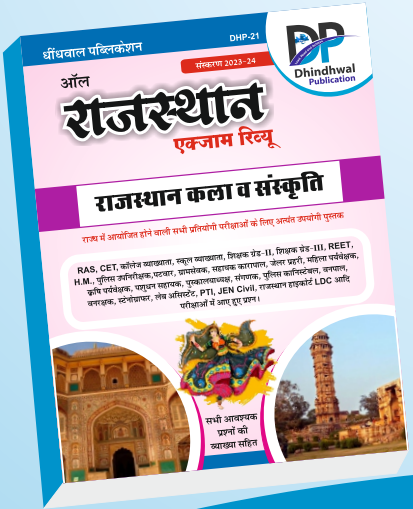

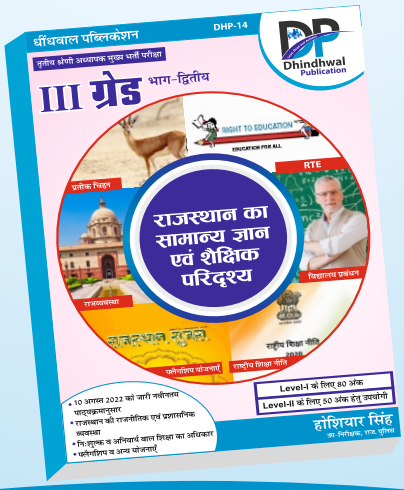

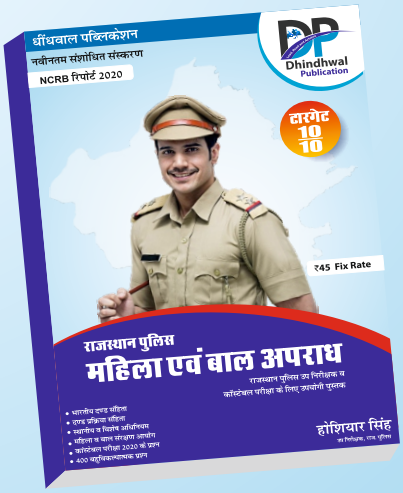

धींधवाल पब्लिकेशन

बी-22, वैष्णो विहार, बीकानेर मोबाइल : 8306733800

धींधवाल पब्लिकेशन

सदैव छात्र हितार्थ

जुड़िए पब्लिकेशन के टेलीग्राम चैनल से

Dhindhwal Publication

@DHINDHWAL2021GK

- नि:शुल्क मार्गदर्शन
- नि:शुल्क टैस्ट सीरीज (पीडीएफ फॉर्मेट में)
- विज्ञप्ति सिलेबस व परिणाम संबंधी जानकारी
- शैक्षणिक समाचार
- डाउट क्लियर करने के लिए पब्लिकेशन के लेखकों से सीधा संवाद
- भूगोल जैसे विषय के अद्यतन आँकड़े

टेलीग्राम में जाकर धींधवाल पब्लिकेशन/Dhindhwal Publication सर्च करके इसे जोइन कर सकते हैं।
टेलीग्राम ग्रुप का लिंक प्राप्त करने के लिए 8306733800 पर वाट्सअप मैसेज करें।

होशियार सिंह

उप निरीक्षक, राज. पुलिस

: लेखक परिचय :

होशियार सिंह का जन्म ग्राम रतनपुरा तहसील राजगढ़ जिला चुरू (राजस्थान) में हुआ। आपने स्नातक करने के दौरान ही वर्ष 2003 से प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी आरम्भ की, राजस्थान पुलिस (जिला बीकानेर वर्ष 2008) में कानिस्टेबल के पद पर चयन के साथ ही 2008 में तृतीय श्रेणी अध्यापक के पद पर चयन हुआ। आपने 5 वर्ष तक जिला राजसमंद में तृतीय श्रेणी अध्यापक के रूप में अपनी सेवाएँ दी, तत्पश्चात् द्वितीय श्रेणी शिक्षक (हिन्दी) 2013 में चयन होने पर आपने राजकीय माध्यमिक विद्यालय, कतरियासर (बीकानेर) में अपनी सेवाएँ दी, तत्पश्चात् राजस्थान पुलिस उपनिरीक्षक 2014 में चयन हुआ, वर्तमान में आप राजस्थान पुलिस में उप निरीक्षक हैं, आपको राजस्थान की विभिन्न प्रतिष्ठित कोचिंग संस्थानों में अध्यापन व मार्गदर्शन का गहन अनुभव है।

लेखक की अन्य पुस्तकें

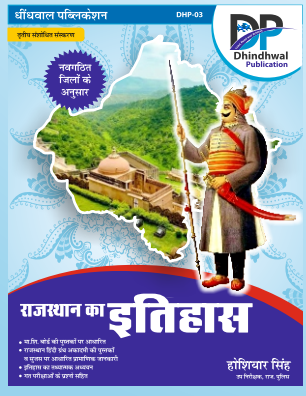

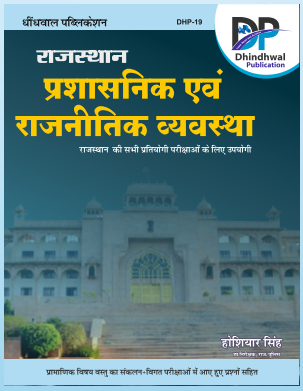

धींधवाल पब्लिकेशन
बी-22, वैष्णो विहार, बीकानेर मोबाइल : 8306733800

धींधवाल पब्लिकेशन

प्रस्तुत करते हैं-

नवगठित जिलों के अनुसार

Dhindhwal Publication

राजस्थान का भूगोल एवं अर्थव्यवस्था

- नवगठित जिलों के अनुसार
- नवीनतम आंकड़ों व रंगीन मानचित्रों संहित
- राजस्थान बजट-2023 व कृषि बजट-2023
- राजस्थान आर्थिक समीक्षा रिपोर्ट : 2022-23 पर आधारित आंकड़ें
- वर्ष 2022-23 की परीक्षाओं में आए हुए 1150 से अधिक प्रश्न
- अध्यायवार व्यवस्थित पठन सामग्री

RAS, कॉलेज व्याख्याता, स्कूल व्याख्याता, शिक्षक IInd ग्रेड, शिक्षक IIIrd ग्रेड, REET, CET, H.M., पुलिस उपनिरीक्षक, पटवार, ग्रामसेवक, राजस्थान पुलिस कानिस्टेबल, राजस्थान हाइकोर्ट, वनरक्षक, वनपाल, पुस्तकालयाध्यक्ष व राजस्थान की अन्य सभी प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए समान रूप से उपयोगी पुस्तक।

धींधवाल पब्लिकेशन
B-22, वैष्णो विहार, बीकानेर
मो.- 8306733800

लेखक :- होशियार सिंह
(उप निरीक्षक, राजस्थान पुलिस)

प्रकाशक:-

धींधवाल पब्लिकेशन

B-22, वैष्णो विहार, बीकानेर

मो.- 8306733800

- Dhindhwal Publication

- धींधवाल पब्लिकेशन

- Hoshiyar singh Examwala

बुक कोड- DHP-01

© सर्वाधिकार- लेखक

मूल्य- ₹ 580.00

छठा संशोधित संस्करण

■ संस्करण : 2023-24

मुद्रक-

पिंकसिटी ऑफसेट, जयपुर

इस पुस्तक के किसी भी अंश का लेखक तथा प्रकाशक की पूर्वानुमति के बिना मुद्रित करना, कराना तथा इस पुस्तक की व इसके किसी भाग की फोटोकॉपी, स्केनिंग, इलेक्ट्रोस्टेट, मशीनी टंकण अथवा किसी भी तरीके से पुन: उपयोग करना, पी.डी.एफ बनाकर वाट्सअप या टेलीग्राम आदि पर प्रसारित करना पूर्णत: वर्जित है।

इस पुस्तक को तैयार करने में पूर्ण सावधानी बरती गई है पुस्तक में दिये गये तथ्य व विवरण उचित व विश्वसनीय स्रोतों से प्राप्त किये गये हैं, फिर भी इसमें किसी प्रकार की त्रुटि, गलती, कमी अथवा लोप रह जाना संभव है। अत: ऐसी किसी भी त्रुटि, गलती, कमी अथवा लोप के कारण हुई क्षति अथवा क्लेश के लिए लेखक, प्रकाशक, सम्पादक, मुद्रक, विक्रेता व कर्मचारीगण का कोई उत्तरदायित्व नहीं होगा। आप उपर्युक्त सभी शर्तों को स्वीकार करते हुए स्वेच्छा से पुस्तक खरीद रहे हैं अत: दायित्व आपका स्वयं का होगा। सभी प्रकार के परिवादों का न्यायिक क्षेत्र बीकानेर होगा।

भूमिका

प्रिय परीक्षार्थियों,

राजस्थान का भूगोल एवं अर्थव्यवस्था के प्रथम पाँच संस्करणों की शानदार सफलता के बाद इस पुस्तक का 'छठा नवीनतम संस्करण' आपके समक्ष प्रस्तुत है। प्रस्तुत पुस्तक राजस्थान की सभी प्रतियोगी परीक्षाओं के पाठ्यक्रम को आधार बनाकर अद्यतन की गई है।

☞ पुस्तक की प्रमुख विशेषताएँ–

- पुस्तक को राजस्थान के नवगठित जिलों के अनुसार अद्यतन किया गया है।
- पुस्तक की भाषा शैली सरल, सहज और ग्राह्य बनायी गई है।
- राजस्थान बजट : 2023–24 व कृषि बजट : 2023–24
- आर्थिक समीक्षा रिपोर्ट : 2022–23 पर आधारित आंकड़ें
- सीमाओं, भौगोलिक विभाजन, नदियों, परिवहन व जलवायु प्रदेशों के रंगीन मानचित्र
- वर्ष 2022–23 में हुई विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं में आए हुए 1150 से अधिक प्रश्नों का समावेश किया गया है।
- प्रत्येक अध्याय के बाद सारगर्भित विवरण व सारणियाँ
- इस पुस्तक को पढ़ने के बाद राजस्थान का भूगोल के लिए किसी कोचिंग की आवश्यकता नहीं होगी।

मैं ईश्वर और अपने माता–पिता के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करता हूँ। मैं अपने सहयोगियों मुकेश कुमावत, मनीराम, अशोक जाखड़, लालचन्द जाट, विक्रम सिंह राठौड़, दिनेश कूकणा, सुन्दरलाल विश्नोई, मोहम्मद रफीक (टाईपिस्ट), असलम (टाईपिस्ट) का आभार व्यक्त करता हूँ, जिनके अथक परिश्रम से पुस्तक को अद्यतन करना संभव हो पाया।

पुस्तक के आगामी संस्करणों में इसे और अधिक उपयोगी बनाने के लिए आपके अमूल्य सुझावों का हार्दिक स्वागत है।

''अवसर छोटा हो या बड़ा, आलस की वजह से छोड़ना नहीं चाहिए
छोटे–छोटे अवसरों की मदद से ही बड़ा अवसर मिलता है।''

होशियार सिंह
उप निरीक्षक, राजस्थान पुलिस
मो.– 8118833800

अनुक्रमणिका

1. राजस्थान: एक सामान्य परिचय पेज नं. 1–13

- राजस्थान का नामकरण
- राजस्थान की स्थिति
- सीमाएँ एवं विस्तार
- जिलों का निर्माण एवं सम्भागीय व्यवस्था
- जिलों का आकार
- प्रतियोगी परीक्षाओं में आये हुए महत्वपूर्ण प्रश्न

2. राजस्थान का भौतिक विभाजन पेज नं. 14–33

- पश्चिमी मरूस्थलीय प्रदेश
  - शुष्क मरूस्थलीय प्रदेश
  - अर्द्धशुष्क मरूस्थलीय प्रदेश
  - मरूस्थलीय शब्दावली
- अरावली पर्वतीय प्रदेश
- पूर्वी मैदानी प्रदेश
- दक्षिणी पूर्वी पठारी प्रदेश
- राष्ट्रीय भूवैज्ञानिक स्मारक स्थल
- प्रतियोगी परीक्षाओं में आये हुए महत्वपूर्ण प्रश्न

3. प्राचीन नाम व भौगोलिक उपनाम पेज नं. 34–38

4. राजस्थान में जल संरक्षण एवं जल प्रबन्धन पेज नं. 39–41

5. राजस्थान की जलवायु पेज नं. 42–52

- राजस्थान की जलवायु की विशेषताएँ
- जलवायु को प्रभावित करने वाले कारक
- ग्रीष्म ऋतु
- तापमान, वाष्पोत्सर्जन, हवाएँ
- वर्षा ऋतु
- दक्षिणी पश्चिमी मानसून
- बंगाल की खाड़ी शाखा
- अरब सागर की शाखा
- आर्द्रता
- शीत ऋतु, मावठ
- राजस्थान के जलवायु प्रदेश
- ब्लादिमीर कोपेन का जलवायु वर्गीकरण
- थॉर्नवेट का जलवायु वर्गीकरण
- ट्रिवार्था का जलवायु वर्गीकरण
- प्रतियोगी परीक्षाओं में आये हुए महत्वपूर्ण प्रश्न

6. राजस्थान में मिट्टियाँ, अपरदन व मरूस्थलीकरण पेज नं53–61

- राजस्थान की मिट्टियाँ
- मिट्टी से संबंधित समस्याएँ
- मृदा अपरदन, जल अपरदन, अवनालिका अपरदन
- सेम की समस्या, भूमि संरक्षण
- मरुस्थलीकरण, प्रमुख कारण व रोकने के उपाय
- भूमि से सम्बन्धित शब्दावली
- प्रतियोगी परीक्षाओं में आये हुए महत्वपूर्ण प्रश्न

7. राजस्थान में सूखा, अकाल व आपदा पेज नं. 62–64

- प्रमुख अकाल व टिड्डी आक्रमण
- सूखे व अकाल से सम्बन्धित सरकारी योजनाएँ
- प्रतियोगी परीक्षाओं में आये हुए महत्वपूर्ण प्रश्न

8. राजस्थान की वन सम्पदा एवं पर्यावरण पेज नं. 65–79

- वनों का प्रशासनिक वर्गीकरण
- ISFR रिपोर्ट 2021
- वनों का जलवायु के आधार पर वर्गीकरण
- प्रमुख वन उपजें
- वानिकी परियोजनाएँ
- वनों से सम्बन्धित संस्थाएँ
- प्रसिद्ध पार्क व उद्यान
- वानिकी पुरस्कार
- राष्ट्रीय हरित प्राधिकरण
- प्रतियोगी परीक्षाओं में आये हुए महत्वपूर्ण प्रश्न

9. जैव विविधता, वन्य जीव एंव अभयारण्य पेज नं.80–95

- जैव विविधता व रामसर अभिसमय स्थल
- वन्यजीव संरक्षण, चिंकारा व गोडावण
- राजस्थान के राष्ट्रीय उद्यान व टाईगर प्रोजेक्ट
- वन्य जीव अभयारण्य
- मृगवन, जन्तुआलय व जैविक उद्यान
- कन्जर्वेशन रिजर्व
- आखेट निषिद्ध क्षेत्र एवं जिलेवार वन्यजीव
- प्रतियोगी परीक्षाओं में आये हुए महत्वपूर्ण प्रश्न

10. राजस्थान में पशुपालन पेज नं 96–110

- 20वीं पशुगणना–आँकड़े
- प्रमुख पशु नस्लें
- पशु मेले
- दुग्ध व डेयरी विकास
- पशुपालन संस्थाएँ
- पशुधन विकास की योजनाएँ
- प्रतियोगी परीक्षाओं में आये हुए महत्वपूर्ण प्रश्न

11. राजस्थान में कृषि पेज नं. 111–140

- राजस्थान में कृषि की विशेषताएँ
- राजस्थान में कृषि सम्बन्धी नवीनतम आंकड़ें
- प्रमुख कृषि पद्धतियाँ
- राज्य की प्रमुख फसलें
- खाद्यान्न फसलें
- दलहनी फसलें
- तिलहनी फसलें
- वाणिज्यिक फसलें
- राजस्थान में कृषिगत संस्थाएँ
- राजस्थान के कृषि विश्वविद्यालय
- कृषि विकास की योजनाएँ
- कृषि विकास हेतु किये गये नवीनतम प्रयास
- राजस्थान के कृषि जलवायु प्रदेश
- जैविक खेती, 10 वीं कृषि गणना
- राजस्थान में भू उपयोग, उर्वरक उपभोग
- विशिष्ट कृषि जिन्स मंडियाँ, कृषि क्रांतियाँ
- कृषि बजट–2023
- प्रतियोगी परीक्षाओं में आये हुए महत्वपूर्ण प्रश्न

12. राजस्थान में अपवाह व नदियाँ पेज नं. 141–159

- राजस्थान का अपवाह तंत्र
- बंगाल की खाड़ी का अपवाह तंत्र
- अरब सागर का अपवाह तंत्र
- आन्तरिक अपवाह तंत्र
- प्रमुख नदी प्रणाली और उनका जलग्रहण क्षेत्र
- त्रिवेणी संगम, जल प्रपात, नदियों किनारे शहर
- नदियों किनारे दुर्ग व सभ्यताएँ
- प्रतियोगी परीक्षाओं में आये हुए महत्वपूर्ण प्रश्न

13. राजस्थान की झीलें व बावड़ियाँ पेज नं. 160–170

- झीलों के प्रकार
- खारे पानी की झीलें
- मीठे पानी की झीलें (सम्भाग वार)
- राजस्थान की प्रमुख बावड़ियाँ
- प्रतियोगी परीक्षाओं में आये हुए महत्वपूर्ण प्रश्न

14. प्रमुख बाँध, सिंचाई परियोजनाएँ व जल संसाधन योजनाएँ पेज नं. 171–186

- राजस्थान में प्रमुख जल स्रोत, सिंचाई सम्बन्धी आँकड़ें
- बहुउद्देशीय सिंचाई परियोजनाएँ
- वृहद् एवं मध्यम सिंचाई परियोजनाएँ
- प्रमुख बाँध एवं तालाब
- जल संसाधन सम्बन्धी योजनाएँ
- प्रमुख संस्थाएँ एवं डार्क जोन
- प्रतियोगी परीक्षाओं में आये हुए महत्वपूर्ण प्रश्न

15. राजस्थान की नहरें पेज नं. 187–192

- इन्दिरा गाँधी नहर परियोजना
- अन्य प्रमुख नहरें
- प्रतियोगी परीक्षाओं में आये हुए महत्वपूर्ण प्रश्न

16. राजस्थान के उद्योग पेज नं. 193–215

- राजस्थान का औद्योगिक परिदृश्य, निर्यात सम्बन्धी आंकड़ें, औद्योगिक नीतियाँ
- केन्द्रीय औद्योगिक उपक्रम
- राजस्थान के प्रमुख उद्योग
- प्रमुख औद्योगिक संस्थाएँ
- प्रमुख औद्योगिक बस्तियाँ व सहकारी उपक्रम
- विशेष औद्योगिक पार्क व कॉम्प्लेक्स
- पचपदरा रिफायनरी, भौगोलिक चिन्हीकरण
- उद्योगों को बढ़ावा देने वाली योजनाएँ
- दिल्ली मुम्बई इण्डस्ट्रीयल कॉरिडोर (DMIC)
- प्रतियोगी परीक्षाओं में आये हुए महत्वपूर्ण प्रश्न

17. राजस्थान के खनिज संसाधन पेज नं. 216–239

- खनिजों का वर्गीकरण
- धात्विक खनिज, अधात्विक खनिज
- ईंधन खनिज

- खनिज तेल व प्राकृतिक गैस की पाईप लाईन
- प्रतियोगी परीक्षाओं में आये हुए महत्वपूर्ण प्रश्न

18. राजस्थान में ऊर्जा संसाधन पेज नं. 240–256

- विद्युत सम्बन्धी संस्थाएँ
- ऊर्जा के परम्परागत व गैर परम्परागत स्रोत
- राजस्थान की जल विद्युत परियोजनाएँ
- राजस्थान की ताप विद्युत परियोजनाएँ
- गैस व तरल ईंधन पर आधारित परियोजनाएँ
- राजस्थान की आण्विक विद्युत परियोजनाएँ
- सौर ऊर्जा परियोजनाएँ
- पवन ऊर्जा
- बायोमास ऊर्जा
- ऊर्जा विकास की विभिन्न योजनाएँ
- नवीनतम ऊर्जा पुरस्कार
- प्रतियागी परीक्षाओं में आये हुए महत्वपूर्ण प्रश्न

19. राजस्थान में पर्यटन पेज नं. 257–268

- पर्यटन परिपथ
- पर्यटन विकास की संस्थाएँ एवं योजनाएँ
- पर्यटन को बढ़ावा देने वाले स्थान
- शाही रेलगाड़ियाँ
- पर्यटन क्षेत्र के पुरस्कार व सम्मान
- RTDC के होटल
- प्रमुख महोत्सव
- राजस्थान के पैनोरमा व स्मारक
- प्रतियोगी परीक्षाओं में आये हुए महत्वपूर्ण प्रश्न

20. राजस्थान में परिवहन संसाधन पेज नं. 269–286

- सड़क परिवहन
- राष्ट्रीय राजमार्ग
- राज्य उच्च मार्ग
- राजस्थान में सड़क विकास हेतु परियोजनाएँ
- सड़क विकास में कार्यरत विभिन्न संस्थाएँ
- रेल परिवहन
- जयपुर मेट्रो रेल परियोजना
- वायु परिवहन
- प्रतियोगी परीक्षाओं में आये हुए महत्वपूर्ण प्रश्न

21. राजस्थान की जनगणना–2011 पेज नं. 287–295

- जनगणना का तुलनात्मक अध्ययन
- जनसंख्या
- दशकीय जनसंख्या वृद्धि दर
- जनघनत्व
- लिंगानुपात
- साक्षरता
- कार्यशील जनसंख्या
- प्रतियोगी परीक्षाओं में आये हुए महत्वपूर्ण प्रश्न

22. क्षेत्रीय विकास कार्यक्रम– पेज नं.296–297

23. राजस्थान के प्रमुख अनुसंधान केंद्र पेज नं. 298–300

24. राजस्थान में सहकारिता पेज नं. 301–302

25. राजस्थान में जनजातियाँ पेज नं. 303–304

Dhindhwal Publication

राजस्थान

अभ्यास मानचित्र

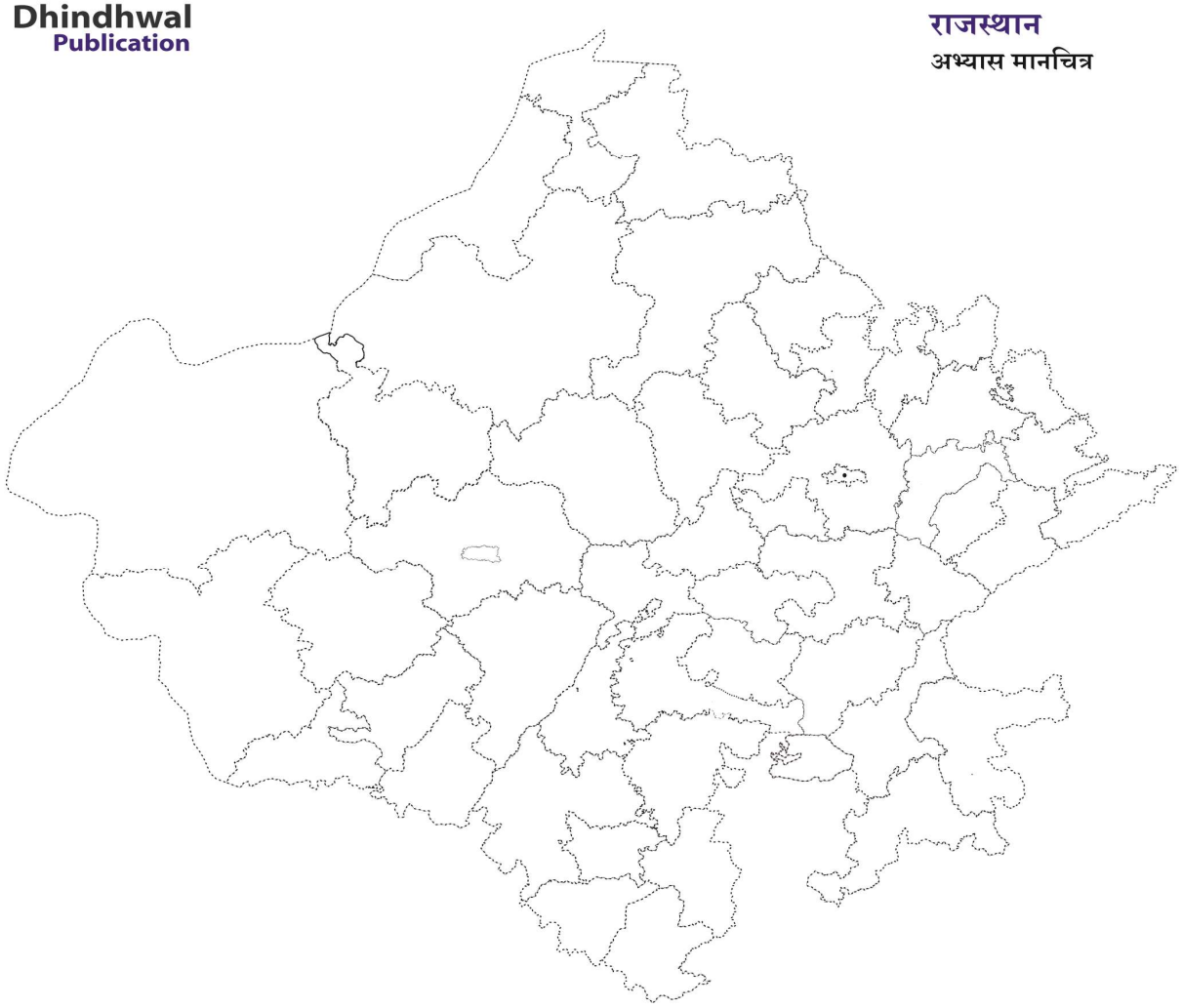

Dhindhwal
Publication

राजस्थान

अभ्यास मानचित्र

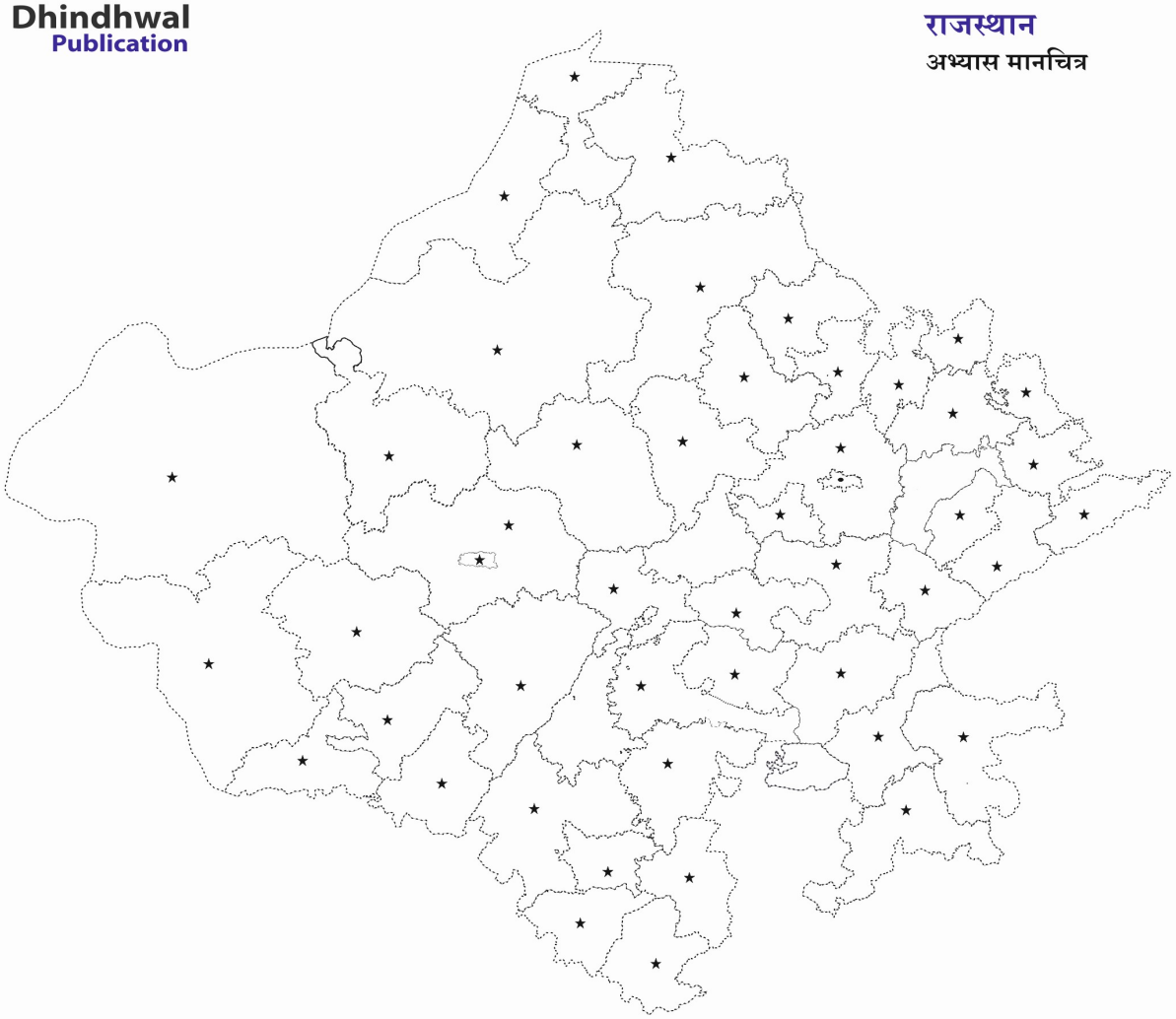

1 राजस्थान : एक सामान्य परिचय

❐ राजस्थान का नामकरण –

- इस **राजस्थान प्रदेश** को विभिन्न कालों में अलग-अलग नामों से जाना जाता रहा है जो निम्न प्रकार हैं–
- **ऋग्वेद काल** में इसे **'ब्रह्मवर्त'** के नाम से पुकारा गया है व रामायण काल में **वाल्मीकि** ने इसे **'मरुकांतार'** कहा।
- यह प्रदेश मरुस्थलीय इलाका होने के कारण **मरु/मरुदेश/मरुप्रदेश /मरुवार** आदि नामों से भी पुकारा जाता रहा है।
- राजस्थान शब्द का **सबसे प्राचीनतम लिखित उल्लेख** बसंतगढ़ शिलालेख (सिरोही) में मिलता है जिसमें **'राजस्थानीयादित्य'** शब्द का प्रयोग किया गया है, लेकिन इस शिलालेख में प्रयुक्त यह **'राजस्थानीयादित्य'** शब्द किसी व्यक्ति विशेष के लिए प्रयोग किया गया है या क्षेत्र विशेष के लिए प्रयोग किया गया है इसका निश्चित पता नहीं चलता।

- बसंतगढ़ शिलालेख – यह लेख **सिरोही** के बसंतगढ़ में **खीमल माता मंदिर** में लगा है, यह शिलालेख 625 ई. का है जो **चावड़ा वंश** के शासक **वर्मलात** के समय का है, इसमें **दास प्रथा** का वर्णन है।

- किसी पुस्तक में **'राजस्थान'** शब्द का सर्वप्रथम उल्लेख **मुहणौत नैणसी री ख्यात** में किया गया है, जिसमें **'राजस्थान'** शब्द का प्रयोग किया गया है।

- **'मुहणौत नैणसी री ख्यात'** को राजस्थान का **प्रथम ऐतिहासिक ग्रन्थ** माना जाता है यह सभी ख्यातों में **सबसे प्राचीन** व **विश्वसनीय** ख्यात है। इसका रचना काल **1665 ई.** है। मुहणौत नैणसी प्रारम्भ में जोधपुर महाराजा गजसिंह की सेवा में रहे, बाद में **महाराजा जसवंत सिंह प्रथम** के दरबारी कवि व दीवान रहे। इस पुस्तक में **राजस्थान के विभिन्न राज्यों व मध्य भारत का इतिहास** वर्णित है इसकी भाषा डिंगल है।
- नैणसी की अन्य रचना **मारवाड़ रा परगना री विगत** (जोधपुर राज्य का गजेटियर) भी है।

- लेखक **वीरभान** द्वारा (रचनाकाल 1731 ई.) अपनी पुस्तक **'राजरूपक'** में भी **'राजस्थान'** शब्द का प्रयोग किया है।
- उपर्युक्त दोनों ही पुस्तकों में प्रयोग किया गया **'राजस्थान'** शब्द इस भू-भाग के लिए प्रयोग नहीं किया है। राजस्थान शब्द का प्रयोग **राजा का स्थान** अर्थात् राजा की राजधानी या **राजा का निवास स्थान** के लिए भी होता रहा है।

- राजरूपक– इस पुस्तक में जोधपुर **महाराजा अभयसिंह** एवं गुजरात के **सुबेदार सर बुलंद खाँ** के मध्य युद्ध का वर्णन है।

- 1791 ई. में **महाराजा भीमसिंह** (जोधपुर) ने **सवाई प्रतापसिंह** (जयपुर) को लिखे पत्र में भी **'राजस्थानां'** शब्द का प्रयोग किया था।

- इस भू-भाग के लिए **'राजपूताना'** नाम का सर्वप्रथम प्रयोगकर्त्ता– **जॉर्ज थॉमस** (1800 ई. में)
- **विलियम फ्रेन्कलिन** ने 1805 ई. में प्रकाशित अपनी पुस्तक **'मिल्ट्री मेमोयर्स ऑफ मिस्टर जॉर्ज थॉमस'** (Military memoirs of Mr. George Thomas) में लिखा है कि जॉर्ज थॉमस वह पहला व्यक्ति था जिसने स्वतंत्र रूप से **राजपूताना शब्द** का प्रयोग इस भूभाग के लिए किया।

- **जॉर्ज थॉमस**– आयरलैंड निवासी जॉर्ज थॉमस ग्वालियर के मराठा शासक **दौलतराव सिंधिया** का अंग्रेजी कमांडर था।
- जॉर्ज थॉमस राजस्थान में सर्वप्रथम **शेखावाटी क्षेत्र** में आया था। इनकी मृत्यु 1802 ई. में **बहरामपुर (बंगाल)** में हुई थी। **'मिल्ट्री मेमोयर्स ऑफ मिस्टर जॉर्ज थॉमस '** पुस्तक का प्रकाशन **लार्ड वेलेजली** ने करवाया था।

- एक मान्यता के अनुसार मुगल साहित्यकार **राजपूत शब्द** को बहुवचन में **'राजपूतां'** लिखते थे, सम्भवतः अंग्रेजों ने इसलिए इसका नाम **'राजपूताना'** (राजपूतों का देश) रख दिया।

- इस भू-भाग के लिए **'राजस्थान'** शब्द का पहला प्रयोगकर्त्ता– **कर्नल जेम्स टॉड**
- कर्नल टॉड ने अपनी पुस्तक **'द एनाल्स एंड एंटिक्विटिज ऑफ राजस्थान'** (प्रकाशन 1829 ई.) में इस भू-भाग के लिए **'राजस्थान'** शब्द का प्रयोग किया है।
- कर्नल टॉड ने पुरानी बहियों के आधार पर इसे **रजवाड़ा/रायथान** नाम भी दिया है।

'द एनाल्स एंड एंटिक्विटिज ऑफ राजस्थान '–

- इस पुस्तक का दूसरा नाम **'दी सैन्ट्रल एंड वैस्टर्न राजपूत स्टेट्स ऑफ इण्डिया'** है। यह पुस्तक दो भागों में प्रकाशित हुई (1829 व 1832 में) थी। इस पुस्तक का सम्पादन **विलियम क्रुक** ने किया। **कर्नल टॉड ने** इस पुस्तक को अपने गुरु **यति ज्ञानचन्द्र** (मांडलगढ़) को समर्पित किया था। इस पुस्तक का सर्वप्रथम हिन्दी अनुवाद **गौरीशंकर हीराचन्द ओझा** ने किया।
- इस पुस्तक का अनुवाद बलदेव प्रसाद मिश्र व पं. गिरधर शुक्ल ने भी किया है। इसके दूसरे भाग का अनुवाद ज्वाला प्रसाद व मुंशी देवीप्रसाद ने किया।
- कर्नल जेम्स टॉड की दूसरी पुस्तक **'द ट्रेवल्स इन वेस्टर्न इण्डिया'** 1839 में इनकी पत्नी जुलिया क्लटरबक ने प्रकाशित करवाई। यह पुस्तक **विलियम हंटर** को समर्पित की गयी।

राजस्थान को स्पर्श करने वाले पाकिस्तान के जिले

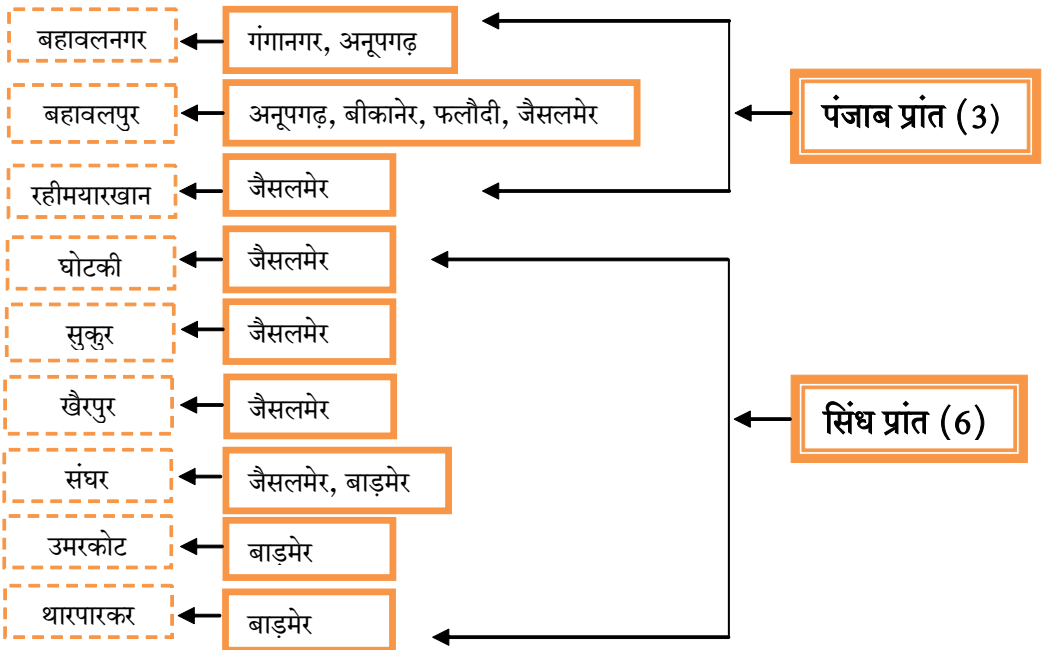

- राजस्थान से **सर्वाधिक सीमा** बनाने वाला पाकिस्तान का जिला– बहावलनगर
- राजस्थान से **न्यूनतम सीमा** बनाने वाला पाकिस्तान का जिला– उमरकोट
- राजस्थान की अंतर्राज्यीय सीमा– 4850 कि.मी.
- राजस्थान की सीमा 5 पड़ौसी राज्यों के 27 जिलों से लगती है।

क्र.सं.	दिशा	पड़ौसी राज्य	सीमा की लम्बाई	विशेष विवरण
1	उत्तर सीमा	पंजाब	89 कि.मी.	सबसे कम सीमा बनाने वाला राज्य
2	उत्तर–पूर्व	हरियाणा	1262 कि.मी.	
3	पूर्व	उत्तरप्रदेश	877 कि.मी.	
4	दक्षिण–पूर्व	मध्यप्रदेश	1600 किमी	सबसे ज्यादा सीमा बनाने वाला राज्य
5	दक्षिण–पश्चिम	गुजरात	1022 किमी	

❖ राजस्थान के पड़ौसी राज्य –

1. पंजाब – 2 जिले– श्रीगंगानगर (सर्वाधिक सीमा) हनुमानगढ़ (न्यूनतम सीमा)
2. हरियाणा– 8 जिले– हनुमानगढ़ (सर्वाधिक सीमा), चुरू, झुंझुनूं, नीमकाथाना, कोटपुतली–बहरोड़, खैरथल–तिजारा, अलवर, डीग
3. उत्तरप्रदेश– 3 जिले– डीग, भरतपुर, धौलपुर
4. मध्यप्रदेश –10 जिले– धौलपुर, करौली, सवाई माधोपुर, कोटा, बारां, झालावाड़ (सर्वाधिक सीमा 520 कि.मी.),भीलवाड़ा (न्यूनतम सीमा, 16 कि.मी.), चित्तौड़गढ़, प्रतापगढ़, बाँसवाड़ा
5. गुजरात– 6 जिले– बाँसवाड़ा, डूँगरपुर, उदयपुर (सर्वाधिक सीमा), सिरोही, सांचौर, बाड़मेर (न्यूनतम सीमा 14 कि.मी.)

नोट– राजस्थान व गुजरात के मध्य उदयपुर जिले की कोटड़ा तहसील के 6 गाँवों में सीमा सम्बन्धी विवाद है।

- राजस्थान के अंतर्राज्यीय सीमा वाले जिलों में **सर्वाधिक सीमा** बनाने वाला जिला– झालावाड़ (520 कि.मी.)
- राजस्थान के अंतर्राज्यीय सीमा वाले जिलों में **न्यूनतम सीमा** बनाने वाला जिला– बाड़मेर (14 कि.मी.)
- राजस्थान के सीमावर्ती जिले (कोई भी सीमा)– 29 जिले
- राजस्थान के अंतर्राज्यीय सीमा बनाने वाले जिले– 25 जिले
- राजस्थान के केवल अंतर्राज्यीय सीमा बनाने वाले जिले– 23 जिले
- राजस्थान के अन्तर्वती/अन्तःस्थ जिले (जो किसी राज्य व देश की सीमा से स्पर्श नहीं करते)– 21 जिले

जयपुर, जयपुर ग्रामीण, सीकर, दूदू, दौसा, गंगापुर सिटी, टोंक, बूँदी, अजमेर, ब्यावर, केकड़ी, डीडवाना–कुचामन, नागौर, जोधपुर, जोधपुर ग्रामीण, जालौर, बालोतरा, पाली, राजसमंद, शाहपुरा व सलूम्बर

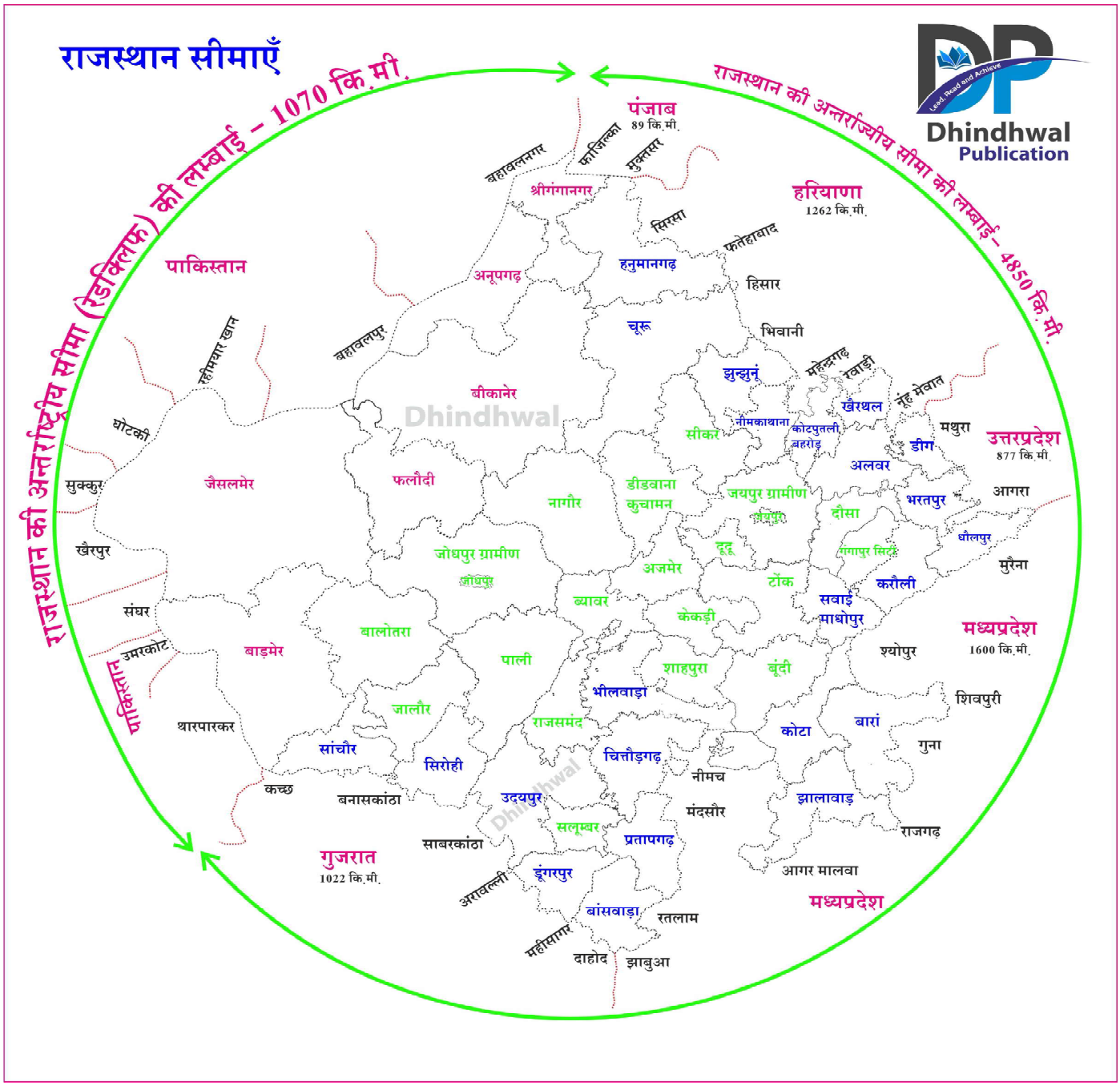

→ प्रशासनिक दृष्टि से वर्तमान में राजस्थान 10 सम्भागों व 50 जिलों में विभाजित है।

→ 1949 में राजस्थान गठन के समय जिलों की संख्या- 25
संभागों की संख्या- 5 (जयपुर, जोधपुर, बीकानेर, कोटा, उदयपुर)

→ 1 नवम्बर, 1956 को राजस्थान का **26वाँ जिला** बना- अजमेर

→ 6वाँ संभाग- **अजमेर** बना (जयपुर के स्थान पर अजमेर को संभाग बनाया गया) संभाग का नाम अजमेर संभाग रखा गया पर इसका **मुख्यालय जयपुर** में रखा गया। इसलिये 1 नवम्बर, 1956 को संभागों की संख्या 5 ही रही।

→ 1 नवम्बर, 1956 को राजस्थान के मुख्यमंत्री- **मोहनलाल सुखाड़िया**

✦ प्रतापगढ जिले का निर्माण **परमेशचन्द्र कमेटी** की सिफारिश पर किया गया था। (ध्यान रहे- प्रतापगढ़ जिला 26 जनवरी, 2008 को अस्तित्व में आया एवं 1 अप्रैल, 2008 से जिले के रूप में कार्य करना प्रारम्भ किया) **(स्रोत- सुजस)**

✦ गहलोत कार्यकाल में नये जिले बनाने के लिए गठित कमेटी- **जी. एस.सन्धू कमेटी** (2011 में)

✦ वसुंधरा कार्यकाल (2013-18) में नये जिले बनाने के लिए गठित कमेटी- **परमेशचंद्र कमेटी**

✦ **रामलुभाया कमेटी**-मुख्यमंत्री अशोक गहलोत द्वारा मार्च 2022 में राजस्थान में नए जिलों के गठन के लिए पूर्व IAS रामलुभाया की अध्यक्षता में कमेटी गठित की। इस कमेटी की सिफारिश पर राजस्थान के मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने **17 मार्च, 2023** को विधानसभा में राजस्थान में **19 नये जिले** व **3 नये संभाग** बनाने की घोषणा की थी तथा **4 अगस्त, 2023** को नये जिलों का नोटिफिकेशन जारी किया गया और **7 अगस्त, 2023** को नये जिलों का विधिवत् रूप से उद्घाटन किया गया।

❖ जिलों का आकार–

- ✦ दौसा– **धनुषाकार।**
- ✦ टोंक– **अंग्रेजी H के समान।**
- ✦ अनूपगढ़– **शेर के आकार का**
- ✦ चित्तौड़गढ़– **घोड़े की नाल के समान**/इल्ली के समान।
- ✦ **राजसमंद–** तिलक के समान।
- ✦ **जैसलमेर–** सप्तबहुभुजाकार/अनियमित बहुभुज के समान।
- ✦ राजस्थान के भौगोलिक रूप से दो स्थानों पर स्थित जिला (खण्डित जिला)– **चित्तौड़गढ़ (रावतभाटा क्षेत्र)।**
- ✦ **उदयपुर संभाग–** श्रीलंका के समान आकार।

☞ **नोट–** पूर्वी राजस्थान से पश्चिमी राजस्थान की ओर जिलों का आकार **क्षेत्रफल की दृष्टि से बढ़ता जाता** है और **जनसंख्या की दृष्टि से घटता जाता** है।

- ✦ राजस्थान के पूर्व में **गंगा यमुना का मैदान,** दक्षिण व दक्षिण पूर्व में **मालवा का पठार,** उत्तर और उत्तर पूर्व में **सतलज–व्यास नदियों का मैदान** है।
- ✦ राजस्थान के वे जिले जिनके मुख्यालयों के मध्य सबसे कम दूरी है– **करौली–गंगापुर सिटी** (34 कि.मी.)

☞ **नोट–** राजसमंद राजस्थान का एकमात्र ऐसा जिला है, जिसका नामकरण **झील के नाम** पर रखा गया है। राजसमंद का जिला मुख्यालय **'राजनगर'** के नाम से है।

प्रतियोगी परीक्षाओं में आये हुए महत्वपूर्ण प्रश्न

1. निम्नांकित में से राजस्थान के कौन–से जिले से होकर कर्क रेखा गुजरती है? **(वरिष्ठ अध्यापक ग्रुप–A- 2023) (CET 10+2- 2023)**
झालावाड़/जालौर/सिरोही/बांसवाड़ा **(लैब असिस्टेंट–2022)**
बांसवाड़ा

2. निम्न में से कौन सा राजस्थान का अक्षांशीय विस्तार है?
23° 03' उत्तर एवं 30° 12' उत्तर **(CET 10+2 2023)**
(लैब असिस्टेंट–2022)

3. राजस्थान के निम्नलिखित जिलों को उत्तर से दक्षिण की ओर सही क्रम में व्यवस्थित करें– श्रीगंगानगर/जालौर/जोधपुर/बीकानेर
(i), (iv), (iii), (ii) **(CET Graduation- 2023)**

4. राज्य के कौन से जिले अन्तर्राष्ट्रीय सीमा पर दक्षिण से उत्तर की ओर स्थित है? **(CET 10+2 2023)**
बाड़मेर, जैसलमेर, बीकानेर एवं गंगानगर

☞ **नोट–** जिलों के पुनर्गठन के बाद अन्तर्राष्ट्रीय सीमा पर दक्षिण से उत्तर की ओर क्रमशः बाड़मेर, जैसलमेर, फलौदी, बीकानेर, अनूपगढ़ व गंगानगर स्थित है।

5. निम्नलिखित जिलों में से ऐसा कौनसा जिला है, जिसकी सीमा 8 जिलों से मिलती है? **(राज. हाईकोर्ट LDC- 2023)**
पाली/अजमेर/टोंक/कोटा
पाली

☞ **नोट–** जिलों के पुनर्गठन के बाद सर्वाधिक जिलों के साथ सीमा जयपुर ग्रामीण जिला (10) बनाता है।

6. किस जिले में जून माह में सूर्य की किरणें सीधी/लम्बवत् पड़ती है?
भीलवाड़ा/बांसवाड़ा/पाली/जयपुर
बांसवाड़ा **(REET L- 2 (Math) 2023)**

7. राजस्थान के पूर्व–पश्चिम और उत्तर–दक्षिण विस्तार में अंतर है–
43 किमी **(REET L- 2 (SST) 2023)**
(स्कूल व्याख्याता जीके- 2022) (JEN Elect. Digree- 2022)

8. राजस्थान का वह जिला, जिसकी सीमा भारत–पाकिस्तान अंतर्राष्ट्रीय सीमा से नहीं मिलती है, वह है–
बीकानेर/गंगानगर/जैसलमेर/जोधपुर
जोधपुर **(REET L- 2 (SST) 2023)**

9. निम्नलिखित में से किस राज्य की सीमा राजस्थान के साथ साझा नहीं हैं? पंजाब/उत्तर प्रदेश/ हरियाणा/दिल्ली
दिल्ली **(LSA- 2022)**

10. निम्नलिखित को सुमेलित कीजिए–

जिला	अक्षांश/देशान्तर
(A) बांसवाड़ा	(1) 30°12' उत्तर
(B) जैसलमेर	(2) 69°30' पूर्व
(C) धौलपुर	(3) 23°3' उत्तर
(D) गंगानगर	(4) 78°17' पूर्व

A-3, B-2, C-4, D-1 **(बेसिक कम्प्यूटर अनुदेशक- 2022)**

11. कितने भारतीय राज्य राजस्थान के साथ अपनी सीमा साझा करते हैं?
5 **(वनपाल–2022)**

12. राजस्थान का उत्तर–दक्षिण विस्तार है–
826 किमी **(वनपाल–2022)**

13. राजस्थान के निम्नलिखित जिलों को पूर्व से पश्चिम की ओर सही क्रम में व्यवस्थित करें–
(i) जैसलमेर (ii) पाली
(iii) अजमेर (iv) धौलपुर
(iv), (iii), (ii), (i) **(वनरक्षक–2022)**

14. राजस्थान की कुल सीमा लम्बाई है–
5920 किमी **(वनरक्षक–2022)**

15. राजस्थान के कितने जिले पाकिस्तान की सीमा के सहारे स्थित हैं?
4 **(वनरक्षक–2022)**

☞ **नोट–** जिलों के पुनर्गठन के बाद पाकिस्तान के साथ राजस्थान के 6 जिले सीमा बनाते है।

16. राजस्थान के 33 नगरों को कितने प्रशासनिक मण्डलों में बांटा गया है?
7 **(APRO-2022)**

☞ **नोट–** जिलों के पुनर्गठन के बाद राजस्थान के 50 जिलों को 10 प्रशासनिक मंडलों (संभाग) में बाँटा गया है।

17. क्षेत्रफल की दृष्टि से निम्न में से देश का सबसे बड़ा राज्य कौनसा है?
राजस्थान **(हाई कोर्ट LDC 2022)**

2 राजस्थान का भौतिक विभाजन

❖ राजस्थान का भौतिक विभाजन–

- प्रो. अल्फ्रेड वैगनर (जर्मनी) द्वारा दिये गये महाद्वीपीय विस्थापन सिद्धांत (1912) के अनुसार प्राग-ऐतिहासिक काल में सम्पूर्ण विश्व एक पिण्ड के रूप में था, जिसे पेंजिया कहते थे, जिसके चारों ओर पेंथालासा सागर था। कार्बोनिफेरिस युग में पेंजिया का विभाजन हुआ, इसके दो भाग बने।
- उत्तरी भाग– अंगारा लैण्ड (लॉरेशिया)
- दक्षिणी भाग– गौडवाणा लैण्ड।
- दोनों भागों के मध्य एक महासागर बना जिसका नाम टेथिस महासागर था। भौगोलिक परिवर्तन के कारण अंगारा लैण्ड व गोडवाना लैण्ड में टकराव हुआ, जिसके कारण स्थल भाग टूटे, जहाँ-जहाँ स्थल भाग गया, वो महाद्वीप बन गये। जहाँ-जहाँ जल गया वो महासागर बन गये।
- पृथ्वी की गति पश्चिम से पूर्व की ओर होती है इसलिए पानी पूर्व की ओर चला गया। विश्व के अधिकांश मरुस्थल महाद्वीपों के पश्चिम तट पर हैं।

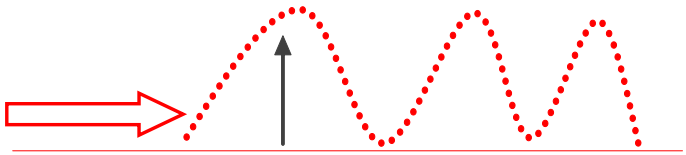

60. मी. तक ऊँचे

* ये सभी प्रकार के बालूका स्तूपों में **सबसे ऊँचे बालूका स्तूप** होते हैं। **जैसलमेर, बाड़मेर** में सर्वाधिक मिलते हैं। जैसलमेर के दक्षिण-पश्चिम में, रामगढ़ (जैसलमेर) के दक्षिण-पश्चिम में तथा बाड़मेर, बालोतरा, फलौदी व जोधपुर ग्रामीण जिलों में इनका विस्तार है।
* **अनुदैर्ध्य बालूका स्तूप** लम्बवत् समानान्तरण श्रेणीयों के समान दिखाई देते हैं। ये स्तूप पवनों की साधारण दिशा, दक्षिण पश्चिम से उत्तर पूर्व में अधिक विकसित होते हैं। इनका विकास एकाकी पहाड़ी के पार्श्वो पर होता है। छोटी एकाकी पहाड़ियों के पवनविमुख ढ़ालों पर भी इनका निर्माण हो जाता है।
* **लूनी, जवाई** आदि नदियों के पार्श्वो पर भी रेखीय बालूका स्तूपों का निर्माण होता है। उत्तरी पूर्वी थार मरूस्थल में **दृषद्वती तथा मेढ़ा नदी** की शुष्क घाटी में भी ऐसे घुमावदार पुराने बालूका स्तूप मिलते हैं। इन बालूका स्तूपों की ऊँचाई **10 मीटर से 60 मीटर** तक होती है।

✦ **गासी/कारबा मार्ग**- दो पवनानुवर्ती **बालूका स्तूपों** के बीच की **निम्न भूमि** को 'गासी या कारबा मार्ग' कहा जाता है।

✦ सोर महोदय(**Soar 1989**) ने रेखीय लम्बवत् बालूका स्तूपों के 3 प्रकार बताये हैं-
1. **सीफ (Sief)**
2. **वनस्पति युक्त रेखीय (Vagetated Linear)**
3. **पवनविमुख रेखीय (Lee Linear)**

➢ **अनुप्रस्थ बालुका स्तूप** -**(Transverse Sand Dunes)** ये पवनों की दिशा के **समकोण या लम्बवत** बनने वाले बालूका स्तूप हैं। अनुप्रस्थ बालुका स्तूपों का निर्माण दीर्घकाल तक हवा के एक ही दिशा में चलने से उनके **समकोण पर** होता है।

* ऐसे बालूका स्तूप, गहरे बालू के क्षेत्रों में मन्द वायु द्वारा निर्मित होते हैं। ये स्तूप थार मरूस्थल के पूर्वी तथा उत्तरी भागों में **पूगल** (बीकानेर) **के चारों ओर, रावतसर** (हनुमानगढ), **सूरतगढ़** (गंगानगर), **चुरू, झुंझुनूं** जिलों में पाये जाते हैं।

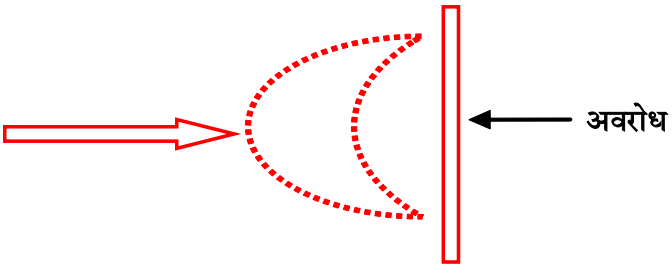

➢ **अवरोधी बालूका स्तूप**- इनका निर्माण किसी अवरोध के कारण उत्पन्न जमाव से होता है। ये अवरोध झाड़ी, पेड़, भवन या अन्य निर्मित केन्द्र अथवा पहाड़ी आदि के कारण हो सकते हैं। पुष्कर, बूढ़ा पुष्कर, नाग पहाड़, बिचून पहाड़, (दूदू), जोबनेर (जयपुर ग्रामीण) एवं सीकर की पहाड़ियाँ क्षेत्र में इस प्रकार के टीले मिलते है।

➢ **बरखान या अर्द्धचन्द्राकार बालुका स्तूप** - ये बालूका स्तूप **सर्वाधिक गतिशील**, नवीन बालू युक्त तथा रन्ध्रयुक्त होते हैं, ये राजस्थान के **सर्वाधिक नुकसानदायी** बालूका स्तूप हैं जो वायु की तेज गति के कारण बनते हैं। इनका पवनामुखी ढाल मंद व उत्तल होता है तथा पवनविमुखी ढ़ाल तीव्र होता है। ये 10 से 20 मीटर ऊँचाई तथा 100 से 200 मीटर चौड़ाई तक विस्तृत होते हैं।

- **भालेरी** (चुरू), **नीमकाथाना**, **देशनोक, लूणकरणसर** (बीकानेर), **बालोतरा**, **ओसियां** (जोधपुर ग्रामीण), **सूरतगढ़** (गंगानगर), जायल (नागौर), **डीडवाना-कुचामन** में बरखान पाये जाते हैं।
- मरुस्थलीकरण के लिए सर्वाधिक उत्तरदायी बालूका स्तूप- **बरखान**

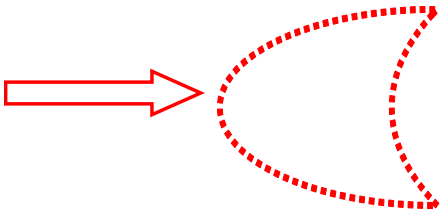

बरखान बालूका स्तूप

❖ **आकृति के आधार पर-**

➢ **सीफ(Sief)**- ये बरखान की तरह होते हैं लेकिन इनमें केवल एक ही भुजा होती है ऐसा **पवनों की दिशा में परिवर्तन** के कारण होता है।

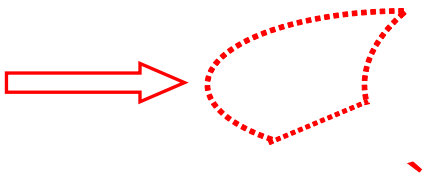

➢ **पैराबोलिक/परवलयाकार (Parabolic Sand Dunes)**- हेयर पिन के आकार का होता है इसका विस्तार **सम्पूर्ण मरुस्थलीय क्षेत्रों** में है।

* इस प्रकार के टीले उन स्थानों पर बनते हैं जहाँ पेड़-पौधे हवा के बहाव में बाधा डालते हैं इनके **खुले छोर** का **रूख हवा के रूख के विपरित**/हवा चलने की मूल दिशा की ओर होता है इन टीलों में हवा टकराने से अंग्रेजी के '**U**' आकार का कटाव आ जाता है जबकि इसके आजु-बाजु पेड़ होते हैं ये टीले आंशिक रूप से स्थिर होते हैं।

- राजस्थान में अरावली को विस्तार एवं ऊँचाई के आधार पर **तीन भागों में** विभाजित किया जाता है।

❖ उत्तरी अरावली

* जिले– अलवर, खैरथल-तिजारा, कोटपूतली-बहरोड़, जयपुर ग्रामीण, दौसा, दूदू, डीडवाना-कुचामन का पूर्वी भाग, सीकर, नीमकाथाना, झुंझुनू का दक्षिणी पूर्वी भाग।
* **सांभर से सिंघाना** व **सिंघाना** (झुंझुनूं) **से खैरथल-तिजारा** तक।
* औसत ऊँचाई– **450 मीटर**
* निर्माण– **क्वार्टजाइट** एवं **फाईलाईट शैलों** से।
* इस क्षेत्र की प्रमुख पहाड़ियों में शेखावाटी की पहाड़ियाँ, **तोरावाटी** की पहाड़ियाँ, **जयपुर** की पहाड़ियाँ व **अलवर** की पहाड़ियाँ शामिल है।

उत्तरी अरावली की चोटियाँ–

चोटी का नाम	जिला	ऊँचाई ↑
रघुनाथगढ़	सीकर	1055 मीटर
मालखेत	सीकर	1052 मीटर
लोहार्गल	झुंझुनूं	1051 मीटर
भोजगढ़	नीमकाथाना	997 मीटर
खो	जयपुर ग्रामीण	920 मीटर
भैरांच	अलवर	792 मीटर
बाबाई	जयपुर ग्रामीण	792 मीटर
बरवाड़ा	जयपुर ग्रामीण	786 मीटर
बबाई	नीमकाथाना	780 मीटर
बिलाली	कोटपूतली-बहरोड	775 मीटर
मनोहरपुरा	जयपुर ग्रामीण	747 मीटर
बैराठ	कोटपूतली-बहरोड	704 मीटर
सरिस्का	अलवर	677 मीटर
सिरावास	अलवर	651 मीटर
भानगढ़	अलवर	649 मीटर
जयगढ़	जयपुर	648 मीटर
नाहरगढ़	जयपुर	599 मीटर
अलवर दुर्ग	अलवर	597 मीटर ↑

☞ **नोट–** रणथम्भौर में **अरावली व विंध्याचल दोनों पर्वतमालाएँ** आपस में मिलती हैं।

* **सरिस्का अभयारण्य** में क्रासका पठार, काली घाटी (मोर की अधिकता), **कांकणवाड़ी पठार**, कांकणवाड़ी किला (दाराशिकोह कैद रहा) आदि स्थित हैं।
* **दूंढिमल का दर्रा**– **रणथम्भौर राष्ट्रीय उद्यान** में है।
* **कुशाली घाट** – सवाईमाधोपुर में है।

❖ मध्य अरावली

✦ **विस्तार**– मध्य अरावली का मुख्य विस्तार **अजमेर व ब्यावर** जिले में है। इसके अलावा **राजसमन्द** का उत्तरी भाग व **जयपुर ग्रामीण** का दक्षिणी भाग भी इसमें शामिल है। **सांभर** (जयपुर ग्रामीण) **से देवगढ़** (राजसमंद) तक का भाग मध्य अरावली में आता है।
✦ औसत ऊँचाई– **700 मीटर**।
✦ निर्माण– **संगमरमर**, **क्वार्टजाईट** व **ग्रेनाईट चाट्टानों** से।

मध्य अरावली की चोटियाँ

मध्य अरावली की चोटियाँ			
चोटी का नाम	जिला	ऊँचाई	
गोरमजी	पाली-राजसमंद	933 मी.	मध्य अरावली की सबसे ऊँची चोटी
तारागढ़	अजमेर	873 मी.	
नाग पहाड़	अजमेर	795 मी.	

☞ **नोट–** अरावली पर्वतमाला में मध्य अरावली में ही सर्वाधिक दर्रे पाए जाते हैं।

✦ **नाल/दर्रा/घाट**– दो पर्वतों/पहाड़ों के बीच धरातलीय संकीर्ण पथ या कटा-फटा तंग रास्ता 'दर्रा' कहलाता है।

❖ मध्य अरावली के दर्रे–

✦ **कच्छवाली दर्रा**– **ब्यावर**
✦ **पीपली दर्रा**– **ब्यावर**, यह राजस्थान की **सर्वाधिक ऊँचाई पर** स्थित नाल है।
✦ **उदाबारी दर्रा**– **ब्यावर**
✦ **सरूपाघाट**– **ब्यावर**
✦ ये उपरोक्त चारों दर्रे **टॉडगढ़ इलाके** (**ब्यावर**) में हैं जो **ब्यावर जिले** को **पाली जिले** से जोड़ते हैं ये चारों दर्रे **ब्यावर** जिले से दक्षिण में निकलते हैं।

❖ ब्यावर जिले के दर्रे–

- **बर दर्रा** (ब्यावर)– **राष्ट्रीय राजमार्ग 14** (नया नम्बर **N.H. 25**) इस दर्रे से गुजरता है। यह दर्रा ब्यावर को बर से जोड़ता है। इस दर्रे से **जोधपुर-जयपुर मार्ग** गुजरता है।
- **पखेरिया दर्रा** (**ब्यावर**)– यह दर्रा **ब्यावर** के पूर्व में है, इस दर्रे से **ब्यावर से मसूदा** मार्ग गुजरता है।
- **शिसुरा-शिवपुरा घाट** (**ब्यावर**)– यह **ब्यावर** के पूर्व में है, इस दर्रे से **ब्यावर से विजयनगर** मार्ग गुजरता है।

3 प्राचीन नाम व भौगोलिक उपनाम

विभिन्न क्षेत्रों के प्राचीन नाम		
क्र.सं.	प्राचीन नाम	वर्तमान नाम
1	जांगल देश	बीकानेर
2	यौधेय क्षेत्र	गंगानगर, हनुमानगढ़ का क्षेत्र
3	मत्स्य प्रदेश	अलवर, भरतपुर, धौलपुर, करौली
4	शिवि जनपद	मेवाड़ या उदयपुर राज्य
5	मेवाड़/मेदपाट/ प्राग्वाट	उदयपुर, राजसमंद, चित्तौड़गढ़, प्रतापगढ़, भीलवाड़ा का क्षेत्र
6	गिहलोट	उदयपुर बसने से पूर्व इस स्थान का नाम
7	मारवाड़	जोधपुर, बाड़मेर, जैसलमेर, बीकानेर, पाली, नागौर का क्षेत्र
8	हाड़ौती	कोटा, बूँदी, बारां, झालावाड़
9	ढुँढाड़	जयपुर, दौसा
10	वागड़ प्रदेश/ वाग्वर प्रदेश	डूँगरपुर, बाँसवाड़ा
11	बांगड़ (बांगर)	नागौर, सीकर, झुंझुनूं, चुरू
12	शेखावाटी	सीकर, चुरू, झुंझुनूं, नीमकाथाना
13	तोरावाटी प्रदेश	सीकर, झुंझुनूं व नीमकाथाना (कांतली नदी के प्रवाह का क्षेत्र)
14	मेवात प्रदेश	अलवर, भरतपुर
15	राठ/अहीरवाट	मुण्डावर (खैरथल-तिजारा), बहरोड़ बानसूर (कोटपूतली-बहरोड)
16	माल खेराड़	मालपुरा (टोंक)
17	खेराड़ प्रदेश	जहाजपुर (शाहपुरा)
18	मेरवाड़ा	ब्यावर में टॉडगढ़ के आसपास का पहाड़ी क्षेत्र।
19	सपाड़	सवाईमाधोपुर व करौली का मध्यप्रदेश को स्पर्श करने वाला भाग।
20	सपादलक्ष	अजमेर, डीडवाना-कुचामन व सांभर का क्षेत्र
21	अनन्त प्रदेश	सांभर से सीकर तक का क्षेत्र
22	रूमा	सांभर झील के आसपास का क्षेत्र
23	बरड़	बूँदी जिले का पश्चिमी पथरीला क्षेत्र
24	काँठल	प्रतापगढ़
25	मालव देश	प्रतापगढ़, झालावाड़ व बाँसवाड़ा
26	मेवल	डुँगरपुर व बाँसवाड़ा के मध्य का भाग
27	उत्तमाद्री	बिजौलिया व उसके आसपास के क्षेत्र को बिजौलिया शिलालेख में
28	चन्द्रावती/आर्बूद	सिरोही व आसपास का क्षेत्र
29	गौडवाड़	दक्षिण पूर्वी बाड़मेर, बालोतरा, जालौर व पश्चिमी सिरोही, पाली
30	गुर्जरात्रा	जोधपुर का दक्षिणी भाग।
31	शूरसेन/बृजभूमि	भरतपुर, धौलपुर, करौली, पूर्वी अलवर
32	डांग क्षेत्र	धौलपुर, करौली व सवाईमाधोपुर
33	कुरू देश	अलवर का उत्तरी भाग
34	मालाणी	बालोतरा, बाड़मेर, जालौर का क्षेत्र
35	मेरू	अरावली पर्वतीय प्रदेश
36	छप्पन का मैदान	बाँसवाड़ा, प्रतापगढ़

भौगोलिक उपनाम		
क्र.सं.	प्राचीन नाम	वर्तमान नाम
1	राजस्थान की अभ्रक नगरी	भीलवाड़ा
2	पंखों की नगरी	जैसलमेर
3	झरोखों की नगरी	जैसलमेर
4	झीलों की नगरी	उदयपुर
5	राजस्थान की पन्ना नगरी	जयपुर
6	राजस्थान की औद्योगिक नगरी	कोटा
7	राजस्थान की औद्योगिक राजधानी	कोटा
8	इन्द्रप्रस्थ नगर	कोटा
9	राजस्थान का नालन्दा	कोटा
10	एशिया का वियना	उदयपुर
11	तश्तरीनुमा बेसिन में बसा हुआ शहर	उदयपुर
12	लेक सिटी ऑफ इण्डिया	उदयपुर
13	झीलों की नगरी	उदयपुर
14	जिंक नगरी	उदयपुर
15	भारत/राजस्थान का मक्का	अजमेर
16	अरावली का अरमान	तारागढ़ (अजमेर)
17	राजस्थान की थर्मोपल्ली	हल्दीघाटी (राजसमंद)
18	टैक्सटाईल सिटी	भीलवाड़ा
19	वस्त्र नगरी	भीलवाड़ा
20	रेड डायमंड	धौलपुर
21	राजस्थान का शिमला	माउन्ट आबू (सिरोही)
22	राजस्थान का बर्खोयांस्क	माउन्ट आबू (सिरोही)
23	राजस्थान का नागपुर	झालावाड़
24	राजस्थान का चेरापूँजी	झालावाड़
25	ताँबा नगरी	झुंझुनूं
26	सुनहरे द्वीपों का शहर	बांसवाड़ा
27	अभ्रक की मंडी	भीलवाड़ा
28	आदिवासियों का शहर	बाँसवाड़ा
29	राजस्थान का अन्न भंडार	गंगानगर
30	राजस्थान का अन्न का कटोरा	गंगानगर
31	राजस्थान का धान का कटोरा	गंगानगर
32	राजस्थान की फलों की टोकरी	गंगानगर
33	राजस्थान की अण्डों की टोकरी	अजमेर
34	राजस्थान की धातु नगरी	नागौर
35	राजस्थान का औजारों का शहर	नागौर
36	आईलैण्ड ऑफ ग्लोरी/रंगश्री का द्वीप (सी.वी. रमन)	जयपुर
37	पूर्व का पेरिस/भारत का पेरिस	जयपुर
38	पूर्व का वेनिस	उदयपुर
39	उद्यानों और बगीचों का शहर	कोटा
40	राजस्थान का विंडसर महल	राजमहल (उदयपुर)
41	लकड़ी की पहाड़ी और घाटियों की भूमि	बारां

4 राजस्थान में जल संरक्षण एवं जल प्रबन्धन

- **जल संरक्षण का अर्थ** है- जल का उचित उपयोग एवं भविष्य के लिए सुरक्षित रखना। अतः जल के दुरुपयोग को रोककर स्वच्छ जल को लम्बे समय तक बचाकर रखना जल संरक्षण कहलाता है।
- राजस्थान का अधिकांश भाग **रेगिस्तानी** है जहाँ प्रायः वर्षा बहुत कम होती है परम्परागत तरीकों से राजस्थान के निवासियों ने अपने क्षेत्र के अनुरूप जल भण्डारण के विभिन्न ढाँचों को बनाया है।
- ये पारम्परिक **जल संग्रहण की प्रणालियाँ** काल की कसौटी पर खरी उतरी हैं। ये प्रणालियाँ विभिन्न सामाजिक, आर्थिक एवं राजनैतिक पारिस्थितियों के कारण अपने प्रभावशाली स्वरूप में उभरी हैं साथ ही इनका विकास भी स्थानीय वातावरण के अनुसार हुआ है। इसलिए सम्पूर्ण भारत में राजस्थान की **जल संग्रहण विधियाँ** अपना विशेष महत्त्व रखती है।
- वस्तुतः राजस्थान एक ऐसा क्षेत्र है जहाँ **वर्ष भर बहने वाली नदियाँ नहीं** है। यहाँ पानी से सम्बन्धित समस्याएँ, **अनियमित** तथा **कम वर्षा** और नदियों में **अपर्याप्त पानी** को लेकर उत्पन्न होती है।
- राजस्थान में स्थापत्य कला के प्रेमी राजा-महाराजाओं तथा **सेठ-साहूकारों** ने अपने पूर्वजों की स्मृति में अपने नाम को चिर स्थायी बनाने के उद्देश्य से इस प्रदेश के विभिन्न भागों में कलात्मक बावड़ियों, कुओं, तालाबों एवं कुंडों का निर्माण करवाया। राजस्थान में पानी के कई परम्परागत स्रोत हैं जैसे- **जोहड़, तालाब, नाडी, टोबा, झालरा, सागर, समंद व सरोवर** आदि।

- पश्चिमी राजस्थान में जल के महत्त्व पर जो पक्तियाँ लिखी गई हैं उनमें पानी को घी से बढ़कर बताया गया है।

"घी ढुल्याँ म्हारा की नीं जासी।
पानी ढुल्याँ म्हारों जी बले।"

☞ **नोट-** साफ जल को **'भविष्य का सोना'** या **'नीला सोना'** कहा जाता है।

➢ जल संरक्षण व संग्रहण के **परम्परागत स्रोत** निम्न है-

- **टांका/कुंड/कुंडी** - रेतीले मरुस्थलीय क्षेत्रों में **वर्षा जल को संग्रहित** करने के लिए बनाया गया **भूमिगत हौद** 'टांका' या कुण्ड कहलाता है इसे चूने या सीमेंट से पक्का किया जाता है ऊपर से ढक कर एक छोटी खिड़की (बारी) रखी जाती हैं। कुण्ड़ों व टांकों का निर्माण खेतों, घरों, मंदिरों में, गाँव के सार्वजनिक चौक में भी करवाया जाता रहा है।

- **नाडी-** गाँव के बाहर बनी **छोटी तलैया** जिसमें वर्षा का जल संग्रहित होता है, नाडी कहलाती है। **नाडी कच्ची** होती है, जो गाँव के लोगों की दैनिक जरूरतों (नहाना, धोना, पशुओं को पानी) की पूर्ति करती हैं। **पश्चिमी राजस्थान** के प्रत्येक गाँव में नाडी मिलती है।
  - राजस्थान में सर्वप्रथम पक्की नाडी के निर्माण का विवरण 1520 ई. में मिलता है, जब **राव जोधाजी** ने जोधपुर के निकट एक नाडी बनवाई थी।
  - केन्द्रीय शुष्क अनुसंधान संस्थान, जोधपुर के एक सर्वेक्षण के अनुसार **नागौर, बाड़मेर एवं जैसलमेर** में पानी की कुल आवश्यकता में से 37.06% जरूरतें नाडियों द्वारा पूरी की जाती है।

(स्रोत-सुजस मई 2022)

- **टोबा-** आकृति में लगभग **नाडी के समान** ही होता है लेकिन नाड़ी से **अधिक गहरा** होता हैं। ऐसी भूमि जहाँ **पानी का रिसाव कम** होता हो टोबा निर्माण के लिए उपयुक्त मानी जाती है।
  - सामान्यतयाः टोबाओं में 7-8 माह तक पानी ठहरता है। राजस्थान में प्रत्येक गांव में पशुओं एवं जनसंख्या के हिसाब से टोबा बनाए जाते हैं।
- **झालरा-** झालरा का कोई जलस्रोत नहीं होता है वह अपने से ऊँचाई पर स्थित तालाबों/झीलों के रिसाव से पानी प्राप्त करते हैं झालरा का स्वयं का **कोई आगोर नहीं होता** है।
  - इनका पानी पीने के काम में नही लिया जाता है बल्कि इनका जल **धार्मिक रीति-रिवाज** सम्पन्न करने, सामूहिक स्नान आदि कार्यो में काम आता है।
  - अधिकांश झालरों का आकार **आयताकार** होता है, जिनके तीन ओर सीढ़ियाँ बनी होती हैं।
- **आगोर-** तालाब के आसपास की **चारों तरफ की भूमि** जो पक्की होती है, वह आगोर कहलाती है। आगोर से ही पानी बहकर तालाब/नाडी में जाता है।
- **पायतान-** वर्षा जल को टांका या कुण्ड में उतारने के लिए उसके चारों ओर मिट्टी को दबाकर (जगह को पक्का कर) पायतान बनाया जाता है। सामान्यतः टांका व कुण्ड के चारों तरफ की **पक्की भूमि** के लिए **पायतान शब्द** काम में लिया जाता है।

5 राजस्थान की जलवायु

- जलवायु एक प्रमुख भौगोलिक तत्त्व है, जो एक ओर अन्य प्राकृतिक तत्त्वों को प्रभावित करता है तो दूसरी ओर आर्थिक और जनसांख्यिकीय स्वरूप को प्रभावित करता है। जलवायु का प्रभाव जल की उपलब्धता तथा वनस्पति पर प्रत्यक्ष होता है। इसी प्रकार सिंचाई, कृषि का स्वरूप, कृषि उपजों का प्रारूप, उत्पादकता, पशुपालन भी जलवायु से सीधे प्रभावित होते हैं।
- राजस्थान की जलवायु **उप-उष्ण** है। अरावली के पश्चिम में न्यून वर्षा, उच्च दैनिक एवं वार्षिक तापमान, निम्न आर्द्रता तथा तीव्र हवाओं से युक्त **शुष्क जलवायु** है। दूसरी ओर अरावली के पूर्व में **अर्द्ध शुष्क एवं उप-आर्द्र जलवायु** है, जहाँ वर्षा की मात्रा में वृद्धि हो जाती है, साथ में वायु की गति में भी कमी रहती है।
- सम्पूर्ण रूप से राजस्थान की जलवायु भारत की **'मानसूनी जलवायु'** का अभिन्न अंग है, किन्तु विभिन्न प्राकृतिक कारकों के प्रभाव के कारण राज्य का अधिकांश क्षेत्र शुष्क जलवायु वाला है। राजस्थान की जलवायु का विस्तृत अध्ययन निम्न प्रकार है-

- **मौसम**- मौसम जलवायु की क्षणिक अवस्था है। मौसम जल्दी-जल्दी परिवर्तित होता रहता है। कुछ समय, मिनट, घन्टे, या 4-5 दिन के **सम्मिलित रूप को मौसम** कहते हैं।
- **ऋतु**- कुछ माह के सम्मिलित रूप को **'ऋतु'** कहते हैं।
- **जलवायु**- 30 वर्ष से अधिक की समयावधि की औसत वायुमण्डलीय दशाओं के सम्मिलित रूप को **'जलवायु'** कहते हैं।

❖ **जलवायु का निर्धारण करने वाले कारक** - **तापक्रम, वायुदाब, आर्द्रता, वर्षा व वायुवेग।**

- **राजस्थान की जलवायु-** भौगोलिक विभिन्नता के कारण यहाँ की जलवायु में भी विभिन्नता पायी जाती है राजस्थान का अधिकांश भाग **उपोष्ण कटिबंधीय जलवायु** में आता है।
- कर्क रेखा के कारण बाँसवाड़ा, डूँगरपुर **उष्ण कटिबंधीय** हैं राजस्थान का **1% भाग ही उष्ण कटिबंध** में आता है बाकि का **99% भाग उपोष्ण कटिबंध** में आता है इसी कारण राजस्थान की **जलवायु 'उपोष्ण जलवायु'** कहलाती है।

☞ **वायुदाब-** पृथ्वी की सतह पर ऊपरी वायुमण्डल की परतों में स्थित वायु का जो भार पड़ता है, उसे **वायुदाब** कहा जाता है।
☞ **निम्न वायुदाब-** अधिक तापमान वाले क्षेत्रों में वायु गर्म होकर ऊपर उठ जाती है। जिससे वहाँ **निम्न वायुदाब** बन जाता है।
☞ **उच्च वायुदाब-** कम तापमान वाले क्षेत्रों की वायु ठण्डी होती है जिससे वहाँ **उच्च वायुदाब** बन जाता है।
सर्वाधिक वायुदाब **समुद्र तल** पर होता है तथा वायुमण्डल में ऊपर की ओर जाने पर वायुदाब तेजी से कम होता जाता है। **हवाएँ** हमेशा उच्च वायुदाब से निम्न वायुदाब की ओर चलती हैं।

- वायुदाब को मापने की इकाई **मिलीबार** है, जबकि वायुदाब मापने के यंत्र को **वायुदाब मापी/बेरोमीटर** कहते है।

❖ **राजस्थान की जलवायु की विशेषताएँ-**

→ **शुष्क एवं अर्द्धशुष्क जलवायु** की प्रधानता है।
→ वर्षा का **असमान व अपर्याप्त वितरण** पाया जाता है।
→ तापमान में **अतिशयता व विविधता** पायी जाती है। ग्रीष्म ऋतु में यहाँ उच्च दैनिक तापमान 49° **सेल्शियस** तक पहूंच जाता है। शीतकाल में कहीं-कहीं तापमान जमाव बिन्दू तक पहूंच जाता है।
→ रेत की अधिकता के कारण दैनिक व वार्षिक तापांतर अधिक पाया जाता है।
→ विभिन्न स्थानों की **आर्द्रता में अन्तर** पाया जाता है।
→ वर्षा का **समय व मात्रा निश्चित नहीं** है।
→ अधिकांश वर्षा **जुलाई व अगस्त माह** में (कुल वर्षा का 60%) **मानसून** के रूप में हो जाती है वर्षा की केवल कुछ मात्रा दिसम्बर व जनवरी माह में **मावठ** के रूप में होती है।
→ राजस्थान में **खण्डवृष्टि** पायी जाती है।

❖ **राजस्थान की जलवायु को प्रभावित करने वाले कारक-**

- **राज्य की अक्षांशीय स्थिति**- 23°30 उत्तरी अक्षांश रेखा (कर्क रेखा) राजस्थान के दक्षिणी भाग से होकर गुजरती है, अतः राजस्थान का अधिकांश भाग **उपोष्ण कटिबंध** में आने के कारण यहाँ तापान्तर पाये जाते है।
- **समुद्र तट से दूरी (महाद्वीपीयता)**- समुद्र तट से अधिक दूरी होने के कारण यहाँ की जलवायु पर समुद्र की समकारी जलवायु का प्रभाव नहीं पड़ता है अतः यहाँ के तापमान में **महाद्वीपीय जलवायु** की तरह अधिक विषमताएँ पायी जाती है। यह राजस्थान की जलवायु को प्रभावित करने वाला सबसे महत्वपूर्ण कारक है।

☞ **नोट**- राजस्थान से बंगाल की खाड़ी की दूरी 2900 कि.मी. है, **अरब सागर** की दूरी 400 कि.मी. है, राज्य का नजदीकी समुद्री भाग **कच्छ की खाड़ी** है जो 225 कि.मी. दूर है। **खम्भात की खाड़ी** 275 कि.मी. दूर स्थित है।

- **धरातल या उच्चावच**- धरातल की बनावट (उच्चावच) का किसी स्थान की जलवायु पर सीधा प्रभाव पड़ता है जैसे राजस्थान के पश्चिमी भाग में **रेतीली मोटे कणों वाली** मिट्टी पायी जाती है, जो दिन के समय **जल्दी गर्म** व रात के समय **जल्दी ठण्डी** हो जाती है, इसी प्रकार **अरावली पर्वतमाला** के पूर्वी और दक्षिणी-पूर्वी भाग में **दोमट चिकनी व काली मिट्टी** पायी जाती है जिसके कण बारीक व हल्के होते हैं, जो दिन के समय धीरे-धीरे गर्म होते हैं व रात के समय धीरे-धीरे ठण्डे होते हैं।

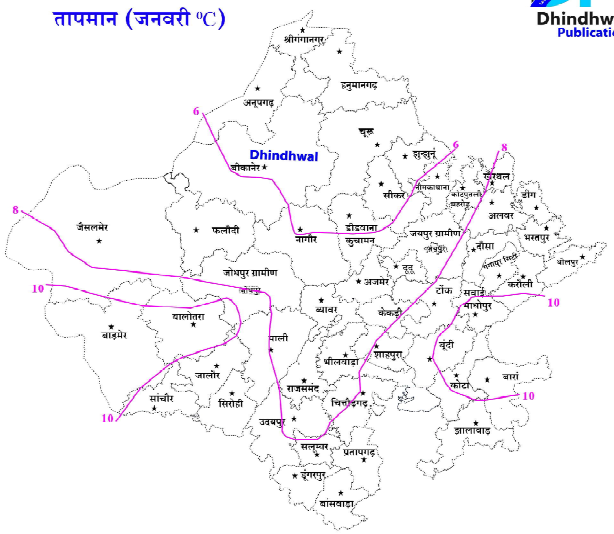
राजस्थान
तापमान (जनवरी °C)
Dhindhwal
Publication

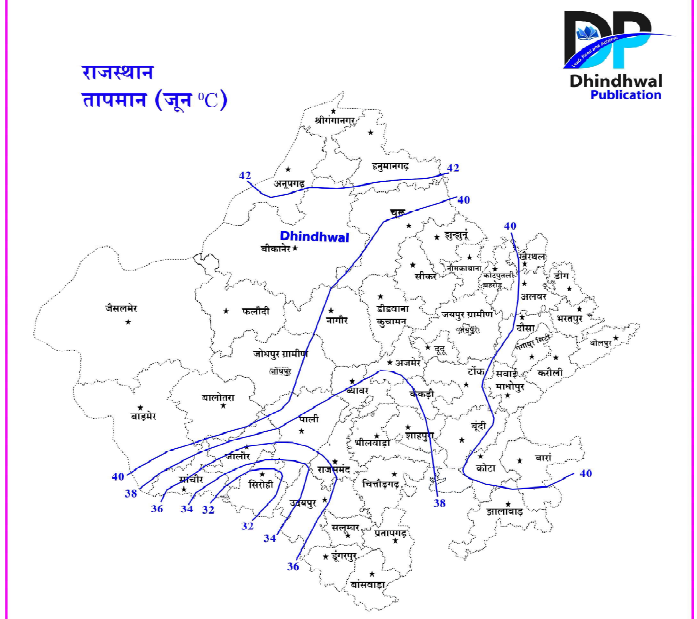
राजस्थान
तापमान (जून °C)
Dhindhwal
Publication

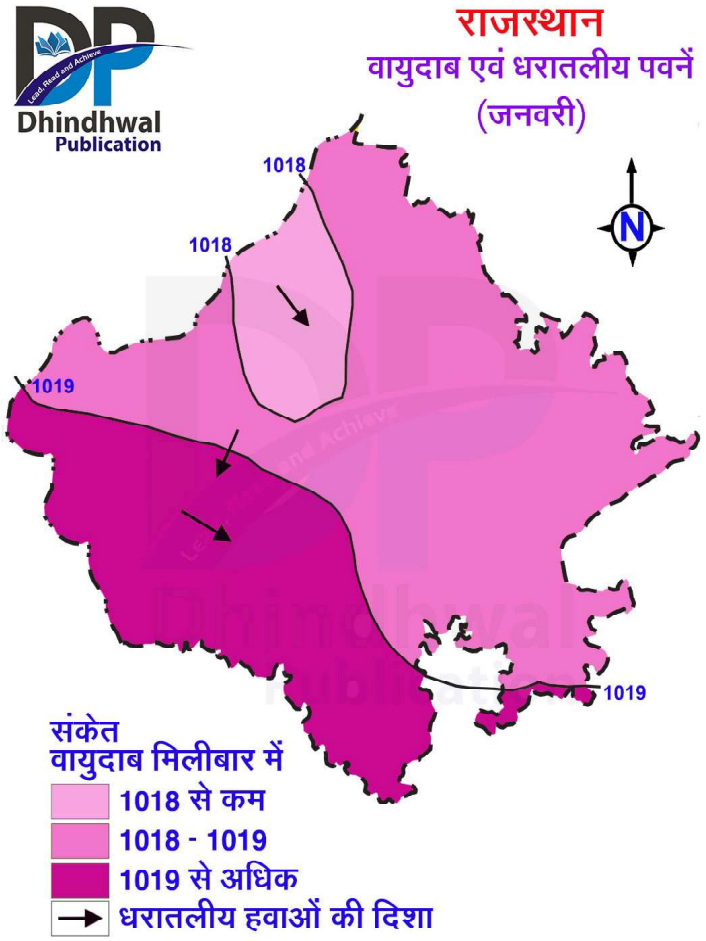
Dhindhwal
Publication
राजस्थान
वायुदाब एवं धरातलीय पवनें
(जनवरी)
1018
1018
1019
1019
N
संकेत
वायुदाब मिलीबार में
1018 से कम
1018 - 1019
1019 से अधिक
धरातलीय हवाओं की दिशा

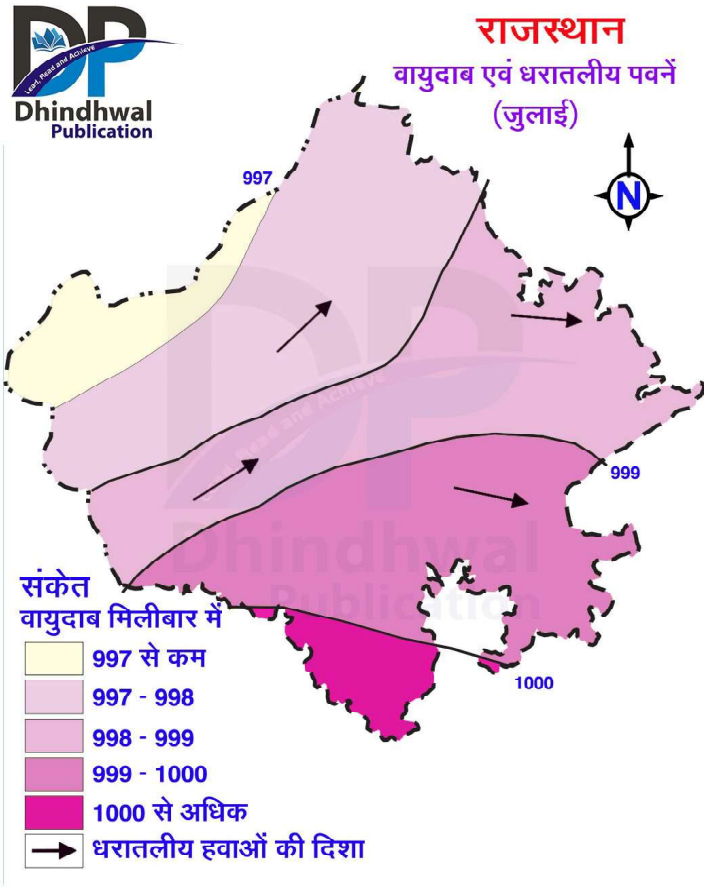
Dhindhwal
Publication
राजस्थान
वायुदाब एवं धरातलीय पवनें
(जुलाई)
997
999
1000
N
संकेत
वायुदाब मिलीबार में
997 से कम
997 - 998
998 - 999
999 - 1000
1000 से अधिक
धरातलीय हवाओं की दिशा

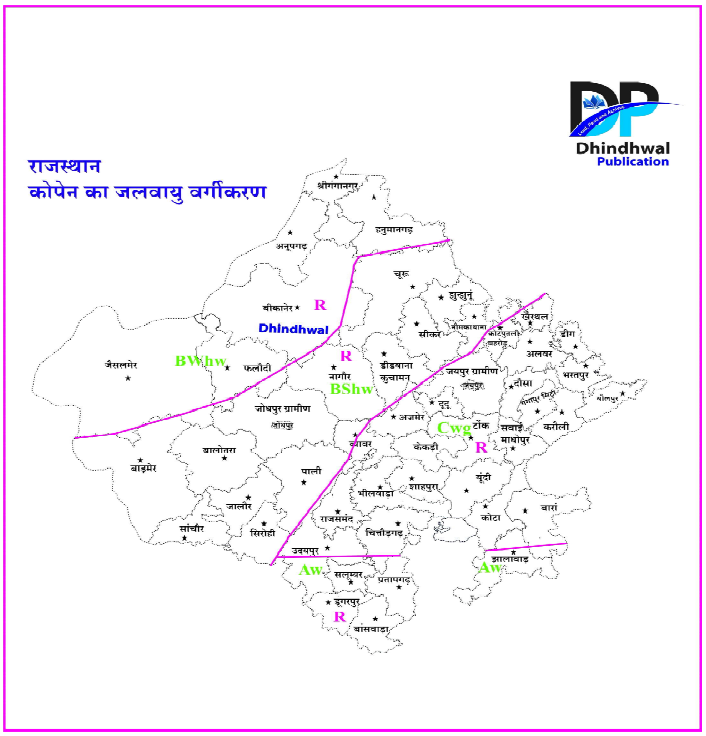

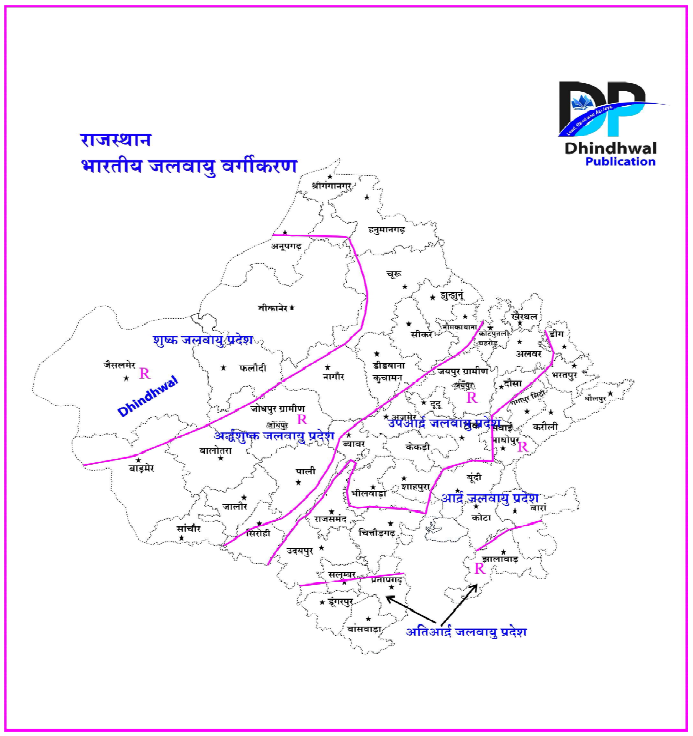

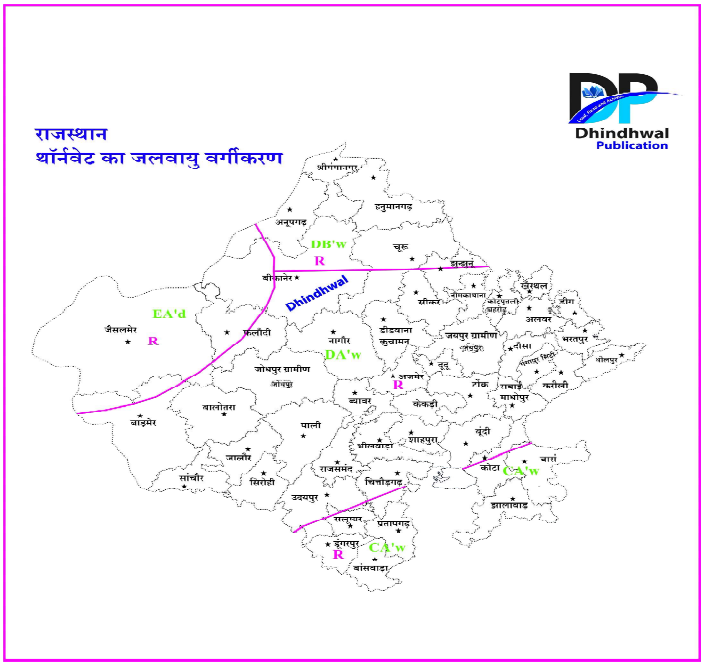

औसत वर्षा– 80–90 **सेमी।** यहाँ वाष्पीकरण कम व वर्षा अधिक होती है। गर्मियों में सर्वाधिक गर्मी, सर्दियों में सर्वाधिक सर्दी पड़ती है। यहाँ **सवाना प्रकार** की वनस्पति पायी जाती है।

यहाँ घनी प्राकृतिक वनस्पति पाई जाती है। यहाँ मानसूनी पतझड़ वाले वृक्ष मिलते हैं।

प्रतिनिधि जिला–**डूँगरपुर**।

BWhw- B- Dry climate, W- Desert climate, h- hot & dry, w- winter dry summer rainy

BShw- B- Dry climate, S- stepy climate, h- hot & dry, w- winter dry summer rainy

Cwg- C- मध्य अक्षांशीय जलवायु (8–18° डिग्री)

w- winter dry summer rainy, g- गंगा का मैदान।

Aw- A- 18° से ऊपर तापमान, उष्णकटिबंधीय सवाना जलवायु। w- winter dry summer rainy **(शुष्क शीत)**

❖ थॉर्नवेट का वर्गीकरण–

✦ थॉर्नवेट के वर्गीकरण का आधार **वाष्पीकरण, वर्षा व तापमान** है। थॉर्नवेट ने (1931 में) कोपेन की तरह अपने जलवायु विभाजन में अनेक कूट (सांकेतिक शब्दों) का प्रयोग किया है।

1. **उष्ण मरुस्थलीय जलवायु प्रदेश–** EA'd- जैसलमेर, उत्तरी बाड़मेर, पश्चिमी बीकानेर, पश्चिमी अनूपगढ़, उत्तर पश्चिमी फलौदी। प्रतिनिधि जिला–**जैसलमेर**। मरुस्थलीय वनस्पति। औसत वर्षा– 10–15 **सेमी।**

6 राजस्थान में मिट्टियाँ, अपरदन एवं मरूस्थलीकरण

- मिट्टियों का अध्ययन **मृदा विज्ञान (Pedology)** कहलाता है।
- मृदा शब्द की उत्पत्ति लैटिन भाषा के 'सोलम' (Solum) शब्द से हुई है, जिसका अर्थ है **फर्श** ।
- अमरीकी मिट्टी विशेषज्ञ **डॉ. बैनेट** के अनुसार- ''भू-पृष्ट पर मिलने वाले असंगठित पदार्थो की वह ऊपरी परत जो मूल चट्टानों अथवा वनस्पति के योग से बनती है, 'मृदा' कहलाती है''।

(स्रोत- भूगोल कक्षा- 11)

- **अन्तर्राष्ट्रीय मृदा वर्ष**- संयुक्त राष्ट्र ने वर्ष 2015 को अन्तर्राष्ट्रीय मृदा वर्ष घोषित किया था।
- **विश्व मृदा दिवस**- 5 दिसम्बर
- **थीम- 2022- मृदा, जहाँ भोजन शुरु होता है।**

☞ **रचना विधि के अनुसार मिट्टी के दो प्रकार-**

1. **स्थानीय मिट्टी**- वह मिट्टी जो सदैव अपने मूल स्थान पर रहती है एवं बहुत कम गति करती है। यह बेसाल्ट तत्व या विखण्डित चट्टानों से निर्मित होती है। राजस्थान में **दक्षिणी** व **दक्षिणी-पूर्वी भाग** की काली मिट्टी इसका उदाहरण है।

2. **विस्थापित मिट्टी**- नदी एवं पवनों के प्रवाह से अपने मूल स्थान से हटकर अन्य स्थानों पर **स्थानान्तरित हो** जाने वाली मिट्टी **विस्थापित मिट्टी** कहलाती है। राजस्थान के **उत्तर एवं उत्तर पश्चिमी भाग** में पायी जाने वाली रेतीली, बलुई मिट्टी इसका उदाहरण है।

☞ राजस्थान की मिट्टियों को रंग गठन व उपजाऊपन के आधार पर निम्न भागों में बांटा गया है -

1. **रेतीली बलुई मिट्टी** - (**मरुस्थलीय मिट्टी**)- यह मिट्टी राजस्थान के पश्चिम भाग में पायी जाती हैं। यह राज्य में **सबसे अधिक भू-भाग पर** पायी जाने वाली मिट्टी है।
- इस मिट्टी के **कण मोटे** होते हैं जो **नमी रोकने में असमर्थ** होते हैं इसमें **नाइट्रोजन** व **कार्बनिक तत्त्वों** की कमी एवं **कैल्शियम** व **फॉस्फेट तत्त्वों की अधिकता** होती है, इस कारण यह भूमि अनुपजाऊ होती है।
- इसमें **PH मान** की **अधिकता** व **जैविक पदार्थों की कमी** पायी जाती है।
- यह मृदा पवनों के द्वारा स्थानांतरित होती रहती है।
- जिले- **जैसलमेर, बाड़मेर, बालोतरा, फलौदी, जोधपुर ग्रामीण, बीकानेर, नागौर, डीडवाना-कुचामन, चुरू, झुंझुनूं, सीकर, अनूपगढ़ व गंगानगर।**

☞ रेतीली मिट्टी मुख्यतयाः **तीन प्रकार** की होती है।

✦ **लाल रेतीली मिट्टी**- इसमें **जल को सोखने की क्षमता** अन्य रेतीली मिट्टी की अपेक्षा अधिक होती है। अगर पानी की उपलब्धता हो तो यह मिट्टी **कृषि के लिए उत्तम** है।
- **जिले- जोधपुर ग्रामीण, नागौर,डीडवाना-कुचामन, पाली, जालौर, सांचौर, चुरू व झुंझुनूं।**

✦ **खारी मिट्टी**- इस मिट्टी में **लवणों की अधिकता** होती है इसी कारण इस मिट्टी में कृषि सम्भव नहीं है। यहाँ केवल **मृदा अवरोधी घासें** ही उग सकती हैं।
- **जिले-** जैसलमेर, बाड़मेर, बालोतरा, बीकानेर, नागौर, डीडवाना-कुचामन जिले के निम्न क्षेत्रों/गर्तो में पायी जाती है।

✦ **पीली भूरी रेतीली मिट्टी**- इस मिट्टी का राज्य में प्रसार **नागौर** व **पाली जिले** में है इस मिट्टी में तीन से चार फीट गहराई पर **चूना मिश्रित मिट्टी** की परत पाई जाती है जिसे '**स्टेपी मिट्टी**' कहते हैं।

2. **भूरी रेतीली मिट्टी**- रेत के **छोटे-छोटे टीलों वाले भाग** में पायी जाने के कारण भूरी रेतीली मिट्टी को **ग्रे-पेन्टेड/धूसर मरुस्थलीय /सिरोज्म मिट्टी** भी कहते हैं। जिसका **रंग भूरा** होता है। इसका प्रसार क्षेत्र मुख्यतः अरावली के पश्चिमी भाग **बाड़मेर, बालोतरा, जालौर, सांचौर, जोधपुर ग्रामीण, पाली, नागौर, डीडवाना-कुचामन सिरोही, सीकर, झुंझुनूं** व **नीमकाथाना** में है।
- इसमें **फॉस्फेट तत्त्वों की अधिकता** होती है। इस मिट्टी की उर्वरता **नाइट्रेट** की उपस्थिति के कारण और **अधिक बढ़** जाती है।
- इसमें मुख्यतः ज्वार, बाजरा, मूंग, मोठ व बारानी कृषि होती है।

☞ **नोट-** पश्चिमी राजस्थान की मिट्टियाँ प्रायः बालूमय हैं, जिनमें 90-95 प्रतिशत तक बालू कण पाए जाते हैं व 5-7 प्रतिशत तक मटियार पायी जाती है।

3. **भूरी मिट्टी**- इस मिट्टी का प्रसार **अरावली के पूर्वी भाग** में है यह मुख्यतः **बनास बेसिन में** पायी जाती है इसमें **नाइट्रोजन** व **फास्फोरस तत्त्वों** का अभाव होता है। यह बनास नदी के प्रवाह क्षेत्र की मृदा है, जो कृषि के लिए उपयुक्त है।
- **जिले- भीलवाड़ा, शाहपुरा, गंगापुर सिटी, अजमेर, केकड़ी, टोंक, सवाईमाधोपुर** व **करौली।**

4. **लाल-पीली मिट्टी**- इस मृदा का **लाल रंग** लौह ऑक्साइड की उपस्थिति के कारण होता है, लेकिन जलयोजित रूप में यह पीली दिखाई पड़ती है। इसलिए इस मृदा को लाल और पीली मृदा कहा जाता है। इसमें **चीका** व **दोमट** दोनों प्रकार की मिट्टियाँ पायी जाती हैं।
- इसका निर्माण **ग्रेनाइट, शिस्ट, नीस** आदि चट्टानों के टूटने से हुआ है इस कारण **नाइट्रोजन, कैल्शियम** एवं **कार्बनिक यौगिकों की कमी** और **लौह ऑक्साईड की मात्रा अधिक** होती है।
- यह मिट्टी मूंगफली व कपास के लिए उपयुक्त है।
- प्रसार वाले जिले- **सवाईमाधोपुर, सिरोही, करौली, भीलवाड़ा, शाहपुरा, टोंक, अजमेर** व **केकड़ी।**

- **मगरा भूमि**– पहाड़ी क्षेत्र की भूमि।
- **बारानी भूमि**– जिस पर सिंचाई की सुविधा उपलब्ध नहीं हो। असिंचित भूमि जो वर्षा पर निर्भर हो।
- **बंजर/बंजड़ भूमि**– वह बेकार भूमि, जिसे कृषि योग्य भूमि में नहीं बदला जा सकता है उसे बंजर भूमि कहते हैं। जैसे– ऊँचे पर्वत, पथरीली भूमि, दलदल आदि।
- **कृषि योग्य व्यर्थ भूमि**– बेकार पड़ी वह भूमि, जिसे कृषि योग्य क्षेत्र में बदला जा सकता है।
- **चारागाह/चरणोत**– वह सार्वजनिक भूमि, जो पशुओं के चरने या चारा उगाने के लिए छोड़ी जाती है।
- **उद्यान भूमि**– वह भूमि जिस पर फलदार वृक्ष उगाए जाते हैं।
- **परती भूमि/पड़त भूमि**– ऐसी भूमि जो कृषि के योग्य तो है लेकिन किसी कारणवश उस पर कृषि नहीं की जाती है।
- **वर्तमान परती भूमि**– भूमि का उपजाऊपन बढ़ाने के लिए किसानों द्वारा एक या दो वर्ष के लिए खाली छोड़ी गई भूमि को **'वर्तमान परती भूमि'** कहा जाता है।
- **पुरानी परती भूमि**– यदि किसी भूमि पर 5 वर्षो तक कृषि नहीं की जाती है तो उसे पुरानी परती भूमि कहते हैं।
- **बनी/बणी**– सरकार द्वारा ईधन या पशु चराई के लिए छोड़ी गई भूमि को स्थानीय भाषा में बनी/बणी कहते हैं।
- **डहरी**– प्राकृतिक रूप से बाढ़ के पानी से सिंचित भूमि
- **चिकनोट**– कठोर व चिकनी उपजाऊ मिट्टी।
- **मट्टियार**– चिकनी मिट्टी, जिसमें कुछ बालू मिट्टी मिली होती है।
- **वन भूमि**– वह भू-भाग जो प्राकृतिक वनस्पति से ढ़का हो वन भूमि कहलाता है। राष्ट्रीय उद्यान, वन्य जीव अभ्यारण्य, आखेट निषिद्ध क्षेत्र आदि इसी में सम्मिलित है।
- **कृषि भूमि**– वह भूमि जिस पर मानव द्वारा फसलें उगाई जाती है, उसे कृषि भूमि कहते हैं।
- **पणो**– तालाब व खड्ढो में पानी सूखने पर ऊपर जमी हुई उपजाऊ मिट्टी की परत।
- **रेह**– मिट्टी के ऊपर सफेद लवणीय बालू जम जाती है उस मिट्टी को स्थानीय भाषा में 'रेह' कहते हैं।
- **अमीन**– भू-राजस्व निर्धारण करने वाला कर्मचारी।
- **आमिल**– माल गुजारी या भू-राजस्व वसूल करने वाला।
- **बीघा**– जमीन का एक माप, जो 1 एकड़ के 5/8 भाग के बराबर होती है या 20 बिस्वा।
- **बिश्वेदार**– भूस्वामी या जमींदार
- **मालगुजारी**– रियासती काल में लिया जाने वाला भू-राजस्व या लगान।
- **बिघोरी**– प्रति बीघा लिया जाने वाला कर।
- **चक**– जमीन का एक भाग।
- **गिरदावरी**– एक नक्शा, जो खेत या जमीन की सीमा को प्रदर्शित करता है एवं कृषि उपज का विवरण भी दिया जाता है।
- **खसरा**– खेत का रजिस्टर, जिसमें खेत के बारे में सभी आवश्यक सूचनाएँ होती हैं।
- **खुदकाश्त**– वह कृषि क्षेत्र जो स्वयं भू-स्वामी द्वारा काश्त किया जाता हो।
- **चड़स**– चमड़े की बाल्टी /डोल।
- **लाव**– सन का मोटा रस्सा, जिससे चड़स को कुएँ में से खींचा जाता है।

प्रतियोगी परीक्षाओं में आये हुए महत्वपूर्ण प्रश्न

1. उदयपुर तथा कोटा जिलों में अधिकांशतः है–
कैल्सी ब्राउन मृदा/नवीन भूरी मृदा/पर्वतीय मृदा/लाल दुमर
पर्वतीय मृदा **(फूड सेफ्टी ऑफिसर– 2023)**
2. लेटेराइट प्रकार की मिट्टी .....में पाई जाती है?
चुरू/ जोधपुर/करौली/डूँगरपुर **(EO/RO - 2023)**
डूँगरपुर
3. डूँगरपुर तथा बाँसवाड़ा में अधिकांशतः है?
लाल लोम मृदा **(वरिष्ठ अध्यापक (SST) (संस्कृत शिक्षा) 2023)**
4. 'रेंगती हुई मृत्यु' क्या है?
मृदा उर्वरता का ह्रास **(CET 10+2- 2023)**
5. निम्नलिखित में से राजस्थान के किन जिलों के समूह में मुख्यतः कच्छारी मृदा पाई जाती है? भरतपुर–धौलपुर /बांसवाड़ा–डूंगरपुर/कोटा–बूंदी/ बीकानेर – जैसलमेर
कोटा–बूंदी **(CET Graduation- 2023)**
6. राजस्थान के निम्नलिखित में से किन जिलों में 'इन्सेप्टीसोल्स मृदा' पायी जाती है? कोटा, बूंदी और बारां/पाली, भीलवाड़ा और सिरोही/ जयपुर, दौसा और अलवर/जैसलमेर, बाड़मेर और बीकानेर
पाली, भीलवाड़ा और सिरोही **(CET Graduation- 2023)**
7. राजस्थान के किस भाग में 'एण्टीसोल्स' मृदा पायी जाती है?
पश्चिमी **(लैब असिस्टेंट– 2022)** **(CET Graduation- 2023)**
8. अल्फीसोल्स मृदा पायी जाती है–
जयपुर,दौसा,अलवर में/कोटा,बारां,बूंदी में/सिरोही,पाली में/ जैसलमेर,बाड़मेर में
जयपुर, दौसा, अलवर में **(CET Graduation- 2023)**
9. कृषि विभाग, राजस्थान के मृदा वर्गीकरण के अनुसार 'जिप्सीफेरस' मृदा.....में पाई जाती है।
बीकानेर **(REET L- 2 (Hindi) 2023)**
(वरिष्ठ कम्प्यूटर अनु.– 2022) **(CET Graduation- 2023)**
10. काली मृदा जानी जाती है– रेगुर मिट्टी से/बांगर एवम् खाद मिट्टी से/कांप मिट्टी से/ लैटराइट मिट्टी से।
रेगुर मिट्टी से **(REET L- 1 2023)**
11. कौन सी मृदा 'स्वजोत' के लिए जानी जाती है?
काली/कछारी/लाल–रेतीली/भूरी–रेतीली
काली **(REET L- 2 (English) 2023)**
12. वह जिला युग्म जहाँ लाल व पीली मृदा पाई जाती है–
पाली–जोधपुर/कोटा–बूँदी/अजमेर–सिरोही/अलवर–भरतपुर
अजमेर–सिरोही **(REET L- 2 (Math) 2023)**
13. राजस्थान में नाइट्रेट की उपस्थिति के कारण कौन सी मृदा उर्वरक है?
लाल–पीली/लाल–लोमी/लाल–रेतीली/भूरी–रेतीली
भूरी–रेतीली **(REET L- 2 (Math) 2023)**

7 राजस्थान में सूखा, अकाल व आपदा

- सूखा एक प्राकृतिक आपदा है, सामान्यतः वर्षा की कमी के कारण क्षेत्र में जल की कमी की स्थिति को **'सूखा'** कहते हैं। जब सूखे के कारण मनुष्यों व पशु पक्षियों के लिए खाद्यान्न, चारा व पीने के पानी की कमी हो जाती है उसे **'अकाल'** कहते हैं।
- राजस्थान में अकाल के सम्बन्ध में एक **कहावत** प्रसिद्ध है-
  तीजो कुरियो आठों काल।
  अर्थात् प्रत्येक तीसरे वर्ष **कुरिया** (छोटा अकाल/अर्द्ध अकाल) होता है व प्रत्येक आठवें साल **भयंकर अकाल** पड़ता है।
- **त्रिकाल**- यह सबसे भयंकर अकाल है, जिसमें अन्न, जल व तृण तीनों का अभाव हो जाता है। राजस्थान में 1987 में त्रिकाल पड़ा था।

राजस्थान में अकाल	वर्ष
चालीसा अकाल	1783 ई.
पंचकाल	1812-13 ई.
सहसा भूदुसा	1843-44 ई. (1900-01 विक्रम संवत्)
छप्पनिया काल	1899-1900 ई. (1956 विक्रम संवत्)

❖ सूखा

- भारतीय मौसम विभाग ने सूखे को **दो विभागों** में बांटा हैं-
  1. प्रचंड सूखा **2. सामान्य सूखा**
- **प्रचंड सूखा-** प्रचंड सूखे में 50 प्रतिशत से कम बारिश होती है।
- **सामान्य सूखा-** सामान्य सूखे में औसत वर्षा से 25 प्रतिशत कम बारिश होती है।

➢ **सूखे के प्रकार-**

1. **मौसम विज्ञान संबंधी सूखा-** अपर्याप्त वर्षा, अनियमितता, पानी का असमान वितरण।
2. **जल विज्ञान संबंधी सूखा-** पानी का अभाव, भू-जल स्तर का निम्न होना, जलाशयों का सूखना।
3. **कृषि संबंधी सूखा-** फसल अथवा चारे की कमी, मृदा की नमी में कमी।
4. **पारिस्थितिक सूखा** - प्राकृतिक पारिस्थितिक तंत्र में जल की कमी से उत्पादकता में कमी हो जाती है।

- राजस्थान में अकाल की **सर्वाधिक संभावना** वाला भाग- **पश्चिमी भाग**
- राजस्थान में **शुष्क** व **अर्द्धशुष्क जलवायु** क्षेत्र सूखे से अधिक प्रभावित है। राजस्थान में ज्यादातर भाग, विशेषकर अरावली के पश्चिम में स्थित मरुस्थली क्षेत्र अत्यधिक सूखा प्रभावित है। जिसमें **जैसलमेर, बाड़मेर, बालोतरा, जोधपुर, जोधपुर ग्रामीण, फलौदी, जालौर, सांचौर** व **सिरोही** जिले शामिल है।
- राजस्थान में सूखा व अकाल प्रबंधन के लिए नोडल विभाग **'आपदा प्रबंधन एवं सहायता विभाग'** है।
- राजस्थान में अकाल के संबंध में **प्रसिद्ध दोहा-**
  पग पूगल धड़ कोटड़े, बाहु बाड़मेर।
  जाये लादे जोधपुर, ठावौ जैसलमेर।
- अर्थात्- अकाल बीकानेर के पूगल क्षेत्र में पाँव पसारे हुए रहता है जबकि इसका धड़ कोटड़े (जैसलमेर व बाड़मेर के मध्य स्थित) में तथा बाहें बाड़मेर में फैली रहती है। जोधपुर में तो भूल-चूक से अकाल आता है परन्तु जैसलमेर में तो इसकी चर्चा सदैव रहती है।
- वर्ष 2002-03 में राजस्थान के सर्वाधिक 32 जिले अकाल से प्रभावित हुए थे। जबकि 2010-11 में सबसे कम मात्र 2 ही जिले अकाल से प्रभावित हुए।
- वर्ष 2002-03 में राजस्थान के **सर्वाधिक गाँव** (40,990) व **सर्वाधिक जनसंख्या** (447.8 लाख) **अकाल** से प्रभावित हुए।

- **सूखे के कारण अभावग्रस्त गाँव- वर्ष 2022** (खरीफ सम्वत् 2079) में **पाली** जिले की **पाली तहसील** को **सूखे के कारण** अभावग्रस्त घोषित किया गया।
- **बाढ़ के कारण अभावग्रस्त गाँव- वर्ष 2022** (खरीफ सम्वत् 2079) में **15 जिलों** (बारां, भरतपुर, बूँदी, धौलपुर, श्रीगंगानगर, झालावाड़, करौली, नागौर, सवाई माधोपुर, टोंक, कोटा, बांसवाड़ा, प्रतापगढ़, जोधपुर, अजमेर) के 7834 गांवों को **बाढ़ से** फसल खराब होने पर अभावग्रस्त घोषित किया गया।

❖ **भूकंप संभावित क्षेत्र-** राजस्थान में सर्वाधिक भूकंप संभावित क्षेत्र- **अलवर, खैरथल-तिजारा, कोटपूतली-बहरोड़, डीग, बाड़मेर** व **सांचौर**।

(स्रोत- आपदा प्रबंधन, सहायता एवं नागरिक सुरक्षा विभाग)

- **टिड्डी आक्रमण-** राजस्थान सरकार ने **13 मार्च 2020** को टिड्डी आक्रमण के कारण राज्य के **8 जिलों (जैसलमेर, बाड़मेर, बीकानेर, श्रीगंगानगर, जोधपुर, जालौर, पाली, सिरोही)** के **908 गाँवों** को अभावग्रस्त घोषित किया है। वर्ष 2020 में बाँसवाड़ा को छोड़कर राजस्थान के कुल 32 जिलों में टिड्डियों का प्रकोप हुआ। इस दौरान टिड्डी प्रभावित किसानों को टिड्डी नियंत्रण हेतु निःशुल्क कीटनाशी रसायन उपलब्ध कराये गये।
- राजस्थान में **टिड्डियों का प्रवेश द्वार जैसलमेर** को माना जाता है। राजस्थान में टिड्डियों का आक्रमण **पाकिस्तान की तरफ** से होता है।
- **टिड्डी चेतावनी संगठन** (LWO)- **जोधपुर,** भारत सरकार द्वारा स्थापित संगठन है, जो टिड्डी की स्थिति की निगरानी, चेतावनी और नियंत्रण का काम करता है।

8 राजस्थान की वन सम्पदा व पर्यावरण

- वन प्रकृति प्रदत्त अनूठा संसाधन है, सभ्यता के प्रारम्भिक काल से ही वन सम्पदा पृथ्वी पर पशु पक्षी एवं **मानव जाति की शरणस्थली** तथा जीवनयापन का प्रमुख साधन रहे हैं। प्राचीन काल में इन वनों में वन्यजीव स्वच्छन्द भ्रमण करते थे, तब इन वनों में आर्थिक, सांस्कृतिक गतिविधियाँ तथा धार्मिक कार्य किये जाते थे।
- प्राचीन काल में **वन देवता की पूजा** की जाती थी। प्रकृति का संतुलन बनाने में सहयोग करने, मृदा व जल का संरक्षण करने तथा जन्म से मृत्यु तक सभी अवस्थाओं में मनुष्य के लिए उपयोगी होने के कारण वन प्राकृतिक संसाधनों का **महत्वपूर्ण अंग** बने हुए हैं।
- किसी देश की अर्थव्यवस्था, पर्यावरण एवं पारिस्थितिकी सन्तुलन एवं विकास में वनों का अपना विशेष योगदान है। राजस्थान का **अरावली प्रदेश** किसी समय वनों से अटा रहता था परन्तु अब वह स्थिति नहीं है।
- राजस्थान में वनों के कम होने के पीछे प्राकृतिक, सरकारी व व्यक्तिगत कारक उत्तरदायी हैं। बढ़ते औद्योगिकीकरण और जनाधिक्य के कारण भी राजस्थान की **वन सम्पदा निरन्तर सिमटती** जा रही है। राजस्थान की वन सम्पदा का **विस्तृत अध्ययन** निम्न है-

- राजस्थान में वन संरक्षण की प्रथम योजना- **जोधपुर रियासत** में 1910 में।
- वन संरक्षण के **प्रथम नियम** बनाने वाली रियासत- जोधपुर 1921 में (**मारवाड़ शिकार नियम**)
  इसके बाद **कोटा** राज्य (कोटा जंगलात कानून) में 1924 में, **जयपुर** (जयपुर शिकार नियम) में 1931 में शिकार कानून बने।
- राजस्थान में शिकार पर सर्वप्रथम प्रतिबन्ध- **टोंक रियासत**, 1901 में
- **वन अधिनियम** बनाने वाली राजस्थान की प्रथम रियासत- **अलवर रियासत** (1935 में)
- **राष्ट्रीय वन अधिनियम 1951** - यह राजस्थान में राजस्थान वन अधिनियम **1953** के नाम से लागू हुआ।
- राजस्थान में नवीनतम **राजस्थान वन (संशोधन) अधिनियम**, 2014 को दिनांक **4 मार्च, 2014** से लागू किया गया है।
- **प्रथम राष्ट्रीय वन नीति - 12 मई, 1952**, इसमें **33% भाग** पर वनों पर जोर दिया गया तथा पहाड़ी क्षेत्रों व पर्वतीय प्रदेशों में **60%** भाग व मैदानी क्षेत्रों में **20%** भाग पर वनों पर जोर दिया गया।
- **द्वितीय राष्ट्रीय वन नीति** - दिसम्बर **1988 में**
- **वन संरक्षण अधिनियम 1980** - ये 25 अक्टूबर, 1980 को लागू हुआ। इसके तहत वन भूमि में किसी भी गैर वानिकी कार्य की क्रियान्विती से पूर्व भारत सरकार की अनुमति आवश्यक है।
- राजस्थान की प्रथम **वन व पर्यावरण नीति** 18 फरवरी, 2010 को जारी की गयी थी। जिसमें **20%** वनों का लक्ष्य रखा गया था।

☞ **ध्यान रहे-** राजस्थान वन एवं पर्यावरण नीति घोषित करने वाला **देश का पहला राज्य** है।

- **राजस्थान वन विभाग** की स्थापना के समय 1949-50 में राजस्थान में 13% भाग पर वन थे।

☞ वर्ष 2022-23 में राजस्थान में सकल राज्य मूल्य वर्धन (**GSVA**) में वानिकी क्षेत्र का **स्थिर मूल्यों** (2011-12) पर **2.86%** तथा **प्रचलित मूल्यों** पर **2.09%** योगदान रहा है।

(स्रोत- आर्थिक समीक्षा रिपोर्ट 2022-23)

राजस्थान वन विभाग के अनुसार वनों के आँकड़े-

- 31 मार्च, 2022 तक की स्थिति के अनुसार राजस्थान के कुल क्षेत्रफल 3,42,239 वर्ग कि.मी. में से प्रदेश का वन क्षेत्र **32869.69 वर्ग कि.मी.** है। जो राजस्थान के कुल भौगोलिक क्षेत्रफल का **9.60%** भाग है।
- भारत के कुल वनों का- **3.10%** भाग राजस्थान में
- राष्ट्रीय वन औसत- **0.13 हैक्टेयर** प्रति व्यक्ति
- राजस्थान का प्रति व्यक्ति वनावरण एवं वृक्षावरण औसत- **0.037 हैक्टेयर**

प्रशासनिक दृष्टि से वनों का वर्गीकरण-

वनों को प्रशासनिक दृष्टि से **3 भागों में** विभाजित किया जाता है-

क्र. सं.	वनों का प्रकार	प्रतिशत (31 मार्च 2022 तक की स्थिति)	सर्वाधिक प्रसार
1	**आरक्षित वन (Reserved forest)**	37.05% **12176.28** वर्ग किमी	**उदयपुर,** चितौड़गढ, अलवर
आरक्षित वनों पर पूर्ण सरकारी नियंत्रण होता है, इनमें लकड़ी काटने व पशु चराई पर पूर्ण प्रतिबन्ध होता है। (राष्ट्रीय उद्यान व अभयारण्य आदि)			
2	**रक्षित वन/ सुरक्षित वन (Protected forest)**	56.55% **18588.39** वर्ग किमी	**बारां,** करौली, उदयपुर
रक्षित वनों में लकड़ी काटने व पशु चराई के लिए वन विभाग से अनुमति /ठेका लिया जाता है। (मृगवन व आखेट निषिद्ध क्षेत्र आदि)			
3	**अवर्गीकृत वन (Unclassified forest)**	6.40% **2105.03** वर्ग किमी	**बीकानेर,** गंगानगर, जैसलमेर
इनमें लकड़ी कटाई व पशु चराई पर कोई प्रतिबन्ध नहीं होता है। (पवित्र वन, ओरण आदि)			
	32869.69 वर्ग किमी		
स्रोत- प्रशासनिक प्रतिवेदन वन विभाग राजस्थान 2022-23			

- अभिलेखित वन क्षेत्र (**Recorded Forest Area**) की दृष्टि से **राजस्थान का स्थान**- **15वाँ**

(स्रोत- प्रशासनिक प्रतिवेदन, वन विभाग राजस्थान 2022-23)

☞ **नोट-** नवगठित जिलों के **वन संबंधी** आँकड़े वन विभाग के आगामी प्रशासनिक **प्रतिवेदन रिपोर्ट** से प्राप्त होंगे।

☞ **वन महोत्सव**- 11 सितम्बर, 2023 को **74वाँ राज्य स्तरीय वन महोत्सव** (बस्सी, जयपुर ग्रामीण) मनाया गया है।
☞ **अंतर्राष्ट्रीय वन वर्ष** - 2003
☞ **विश्व ओजोन दिवस**- 16 सितम्बर
☞ **राष्ट्रीय प्रदुषण रोकथाम दिवस**- 2 दिसम्बर

प्रमुख राज्य स्तरीय वानिकी पुरस्कार

✦ **अमृता देवी विश्नोई स्मृति वानिकी पुरस्कार**- 1994 से प्रारम्भ, प्रथम बार 1997 में दिया गया।
प्रथम पुरस्कार- **गंगाराम विश्नोई** (पाली)
पुरस्कार राशि (संस्था)- 1,00,000, **व्यक्ति** को- 50,000 रु.
यह वन संरक्षण के क्षेत्र में दिया जाने वाला राजस्थान का सर्वाधिक **प्रतिष्ठित राज्यस्तरीय पुरस्कार** है।

✦ **वानिकी पंडित पुरस्कार**- राशि 5,000 रु.
प्रथम पुरस्कार- **बी.सी. जाट (जयपुर)**
यह दूसरा राज्यस्तरीय पुरस्कार है।

✦ **वानिकी लेखन व अनुसंधान पुरस्कार**- राशि 5,000 रु.
वानिकी क्षेत्र में मौलिक सृजन एवं अनुसंधान कार्यो के लिए।

✦ **वृक्ष वर्धक पुरस्कार**- जिला व राज्य स्तर **पर 6 श्रेणियों** में 12 पुरस्कार (1. **किसी कृषक** 2. **औद्योगिक प्रतिष्ठान** 3. **शिक्षण संस्थान** 4. **ग्राम पंचायत** 5. **नगरपालिका**/नगरपरिषद् 6. **खनन क्षेत्र**) राज्य स्तर पर 2000 रुपये की पुरस्कार राशि दी जाती हैं।

✦ **महावृक्ष पुरस्कार**- 1995 से प्रारम्भ, ग्रामीण क्षेत्र में अधिकतम आयु के प्राचीन व विशिष्ट प्रजाति के वृक्ष की देखभाल के लिए **पूरे गाँव को** दिया जाता है।

✦ **वन प्रहरी पुरस्कार**- वनों के अवैध कटान को रोकने की दिशा में उल्लेखनीय कार्य करने वाली **ग्राम स्तरीय वन सुरक्षा व प्रबन्ध समिति** को दिया जाता है।

✦ **राजीव गाँधी पर्यावरण संरक्षण पुरस्कार**- राज्य सरकार द्वारा 2012 से प्रारम्भ किया गया। यह पुरस्कार प्रति वर्ष **5 जून** को दिया जाता है, यह पुरस्कार पर्यावरण संरक्षण में उत्कृष्ट कार्य के लिए **तीन श्रेणियों** में दिया जाता है।
1. **नागरिक** (पुरस्कार राशि- 5.00 लाख रु.)
2. **संगठन** (पुरस्कार राशि- 3.00 लाख रु.)
3. **नगरपालिका** (पुरस्कार राशि- 2.00 लाख रु.)

प्रमुख राष्ट्रीय वानिकी पुरस्कार

✦ **इन्दिरा प्रियदर्शनी वृक्षमित्र पुरस्कार- 1986 से**
इंदिरा गाँधी के **जन्मदिवस** 19 नवम्बर को दिया जाता है, वृक्षारोपण व परती भूमि विकास में योगदान के लिए केन्द्र सरकार द्वारा दिया जाता है। पुरस्कार राशि- 2.5 लाख रुपये।

✦ **डॉ. सलीम अली राष्ट्रीय वन्य जीव फैलोशिप पुरस्कार**- 1995, पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय भारत सरकार द्वारा दिया जाता है।

✦ **कैलाश सांखला राष्ट्रीय वन्य जीव फैलोशिप पुरस्कार- 1996** पर्यावरण वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय **भारत सरकार** द्वारा वन्यजीव संरक्षण के क्षेत्र में, पुरस्कार राशि- 50,000 रु.।

✦ **मेदिनी पुरस्कार**- 22 जुलाई, 2008
पर्यावरण, वन व जलवायु परिवर्तन मंत्रालय भारत सरकार द्वारा, वनों व पर्यावरण संबंधी जागरूकतापूर्ण मौलिक लेखन के लिए केवल **हिन्दी भाषा के लेखकों** को दिया जाता है। पुरस्कार राशि- 1.00 लाख रुपये।

✦ **इंदिरा गाँधी पर्यावरण संरक्षण पुरस्कार-2009**
पर्यावरण वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय **भारत सरकार** द्वारा इसे 5 जून को दिया जाता है। पुरस्कार राशि- 5 लाख रूपए।

✦ **National Green Tribunal NGT- राष्ट्रीय हरित प्राधिकरण**- भारत में पर्यावरण, जल, वायु और जैव विविधता को कानूनी दायरे में लाने के लिए **18 अक्टुबर, 2010** को गठन किया गया।
- मुख्यालय- **दिल्ली**
- जबकि अन्य चार क्षेत्रीय कार्यालय भोपाल, पूणे, कोलकाता एवं चेन्नई में स्थित है।
- NGT के प्रथम अध्यक्ष- **लोकेश्वर सिंह पंत**
- द्वितीय अध्यक्ष- **स्वतंत्र कुमार**
- **वर्तमान अध्यक्ष- प्रकाश श्रीवास्तव**
- **कार्यकाल- 5 वर्ष**
- इस न्यायाधिकरण में **20 सदस्य** हैं जिनमें **10 न्यायपालिका** क्षेत्र के और **10 सदस्य पर्यावरण मामलों के विशेषज्ञ** हैं।
भारत से पहले **आस्ट्रेलिया** व **न्यूजीलैण्ड** ही केवल दो देश हैं जिनके पास पर्यावरण संबंधी मसलों के निपटारे के लिए विशेष अदालत है।

नाम वनस्पति	वानस्पतिक नाम
खेजड़ी	प्रोसोपिस सिनेरेरिया
रोहिड़ा	टिकोमेला अन्डुलेटा
धोंकडा-	एनोजिस पंडूला (Anogeissus Pendula)
इजरायली बबूल	अकेसिया टोरटिलिस
देशी बबूल	अकेसिया निलोटिका
तेन्दू-	डाईपारस मेलेनोजाइलोन (Diospyros Melanoxylon)
जाल-	डिकिल्पटेरा साल्वेडेरा
चिरमी-	एब्रोस प्रोकेटोरियस (बेल रूपी पौधा)
कैर	केपेरिस डेसीडुआ
खैर-	अकेशिया कटेचु
बेर	झिझिफस रोटन्डीफोलिया
कूम्ट-	एकेसिया सेनेगल (Acacia Senegal)
बुई	एरवा टोमेन्टोसा
आक	केलोट्रोपिस प्रोसेरा
फोग-	केलीगोनम पोलिगोनॉइड्स (Calligonum polygonoides)

9 जैव विविधता, वन्यजीव एवं अभयारण्य

जैव विविधता –

- जैव विविधता से तात्पर्य जैव मंडल में पाये जाने वाले जीवों की विभिन्न जातियों में पाई जाने वाली विविधता से है। **जैव विविधता** शब्द का प्रथम प्रयोग **वाल्टर जी. रोजेन** ने किया था।
- जैव विविधता का जनक– **एडवर्ड ओ. विल्सन।**
- **जैव विविधता अधिनियम 2002–** 22 मई, 1992 को **नैरोबी** में हुए **'जैव विविधता सम्मेलन'** की अनुपालना में भारतीय संसद ने 2002 में जैव विविधता अधिनियम 2002 पारित किया है। इसके तहत् अक्टूबर 2003 में **'राष्ट्रीय जैव विविधता प्राधिकरण'** की स्थापना **चेन्नई** में की गई है।
- **अंतर्राष्ट्रीय जैव विविधता दिवस** – 22 मई।
  2023 की थीम– समझौते से कार्यवाही तक, जैव विविधता का पुनर्निर्माण। (From Agreement to Action, Bulid Back Biodiversity)
- जैव विविधता का अन्तर्राष्ट्रीय वर्ष – **2010**
- **जैव विविधता दशक–** 2011–2020, संयुक्त राष्ट्र महासभा ने जैव विविधता के लिए उत्पन्न खतरों के बारे में जागरूकता बढ़ाने के लिए 2011–2020 की अवधि को **'संयुक्त राष्ट्र जैव विविधता दशक'** घोषित किया है।
- भारत में जैव विविधता के 4 तप्त स्थल (**Hot Spot**) है–
  1. **पश्चिमी घाट** 2. **हिमालय क्षेत्र**
  3. **इण्डोबर्मा क्षेत्र** 4. **सुन्दरलैण्ड**

☞ **ध्यान रहे–** राजस्थान में एक भी जैव विविधता **तप्त स्थल** नहीं है।

- **राजस्थान राज्य जैव विविधता बोर्ड–** भारत सरकार द्वारा अधिसूचित जैव विविधता अधिनियम 2002 के प्रावधान के तहत् 'राजस्थान राज्य जैव विविधता बोर्ड' की स्थापना **14 सितम्बर, 2010** को की गई।

❖ **राजस्थान जैव विविधता नियम–** राजस्थान राज्य जैव विविधता अधिनियम 2002 की **धारा 63 (1)** के तहत 2 मार्च, 2010 को राजस्थान जैविक विविधता नियम 2010 अधिसूचित किए गए।

जैव विविधता संरक्षण **दो प्रकार** से होता है –

1. **स्वःस्थाने (In Situ)–** इसके अन्तर्गत जीवों को उनके प्राकृतिक आवास में ही संरक्षित किया जाता है।
   जैसे– अभयारण्य, राष्ट्रीय पार्क, जैव मंडल रिजर्व आदि।
2. **बहिःस्थाने (Ex Situ)–** इसके अन्तर्गत जीवों को उनके प्राकृतिक आवास के बाहर संरक्षित करने का प्रयास किया जाता है इसके लिए जन्तुआलय व वनस्पति उद्यानों की स्थापना की जाती है। जीवों के 'जर्म प्लाज्म' को संरक्षित किया जाता है। **जैसे–** राष्ट्रीय जीन बैंक, दिल्ली (1996)।

- वन्य जीवों की सुरक्षा व संरक्षण के संबंध में **सबसे पहला लिखित कानून** संभवत तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व में **सम्राट अशोक मौर्य** द्वारा बनाया गया था।
- पारिस्थितिकी संकट के अध्ययन हेतु 1948 में **IUCN** (**International Union For Conservation Of Nature & Natural Resources**) का गठन किया गया, जिसका मुख्यालय **स्विट्जरलैण्ड** के **मोर्गस शहर** में है।

- **WWF** (**World Wild Life Fund**)– की स्थापना 1962 में की गई। इसका मुख्यालय स्विट्जरलैण्ड के **ग्लाइण्ड शहर** में है। इसका वर्तमान नाम WWFN (**World Wild Life Fund For Nature**) है, इसका प्रतीक **लाल पाण्डा** है। लाल पाण्डा को कंचनजंघा राष्ट्रीय पार्क सिक्किम में संरक्षित किया गया है।

- **रेड डाटा बुक–** IUCN के उत्तरजीविता आयोग ने विश्व की संकटग्रस्त पादपों एवं जन्तु जाति के वर्णन सहित लाल आंकड़ों की पुस्तक (रेड डाटा बुक) जारी की है जिसका पहला संस्करण **1 जनवरी, 1972** को व नवीनतम पाँचवां संस्करण **जनवरी 2010** को प्रकाशित किया गया। इसमें अलग–अलग रंगों के पृष्ठों में विभिन्न प्रजातियों का उल्लेख है।
- **लाल रंग के पृष्ठ–** विलुप्त प्रायः या लुप्त हो रही जातियाँ, जिनके बचाव के लिए समग्र ध्यान रखने की आवश्कता है।
- **सफेद रंग के पृष्ठ–** वे दुर्लभ जातियाँ, जो कुछ निश्चित स्थानों पर हैं या बहुत कम संख्या में है जिनके बारे में आशंका है कि कहीं ये जाति समाप्त न हो जाए।
- **पीले रंग के पृष्ठ–** ऐसी जातियाँ जिनकी संख्या बहुत तेजी से कम हो रही हैं।
- **भूरे रंग के पृष्ठ–** वे जातियाँ जिनके बारे में सही विवरण प्राप्त नहीं है लेकिन आशंका है कि उनकी संख्या कम हो रही है।
- **हरे रंग के पृष्ठ–** वे जातियाँ जिनको बचा लिया गया है और उनकी संख्या भी बढ़ाई जा रही है।

- भारत में **18 जैव मंडल रिजर्व** (बायोस्फीयर रिजर्व) हैं जिनमें से 12 को **UNESCO** ने विश्व प्राकृतिक धरोहर घोषित किया है। देश का सबसे बड़ा बायोस्फीयर रिजर्व **कच्छ का रन** है।

- राजस्थान में **आर्द्रभूमि का क्षेत्रफल**(अनुमानित)**– 782314 हैक्टेयर**
  (स्रोत– राजस्थान वैटलैंड एटलस)
- राजस्थान में सर्वाधिक वैटलैण्ड क्षेत्र वाला जिला– **भीलवाड़ा (6.94%) (72563 हैक्टेयर)**
- राजस्थान में न्यूनतम वैटलैण्ड क्षेत्र वाला जिला– **चुरू (0.08%) (1368 हैक्टेयर)**
- राजस्थान में तटीय वैटलैण्ड क्षेत्र वाला एकमात्र जिला– **सांचौर**

राजस्थान में टाईगर प्रोजेक्ट– 4			
1.रणथम्भौर टाईगर रिजर्व	सवाई माधोपुर, करौली, बूँदी, टोंक	1406.92 वर्ग किमी. क्षेत्रफल की दृष्टि से दूसरा सबसे बड़ा टाईगर प्रोजेक्ट	इसमें रणथम्भौर नेशनल पार्क, सवाई माधोपुर अभयारण्य, सवाई मानसिंह अभयारण्य, कैला देवी अभयारण्य, राष्ट्रीय चम्बल घड़ियाल अभयारण्य का हिस्सा (Overlap)लिया गया है।
2. सरिस्का टाईगर रिजर्व	अलवर, जयपुर ग्रामीण, कोटपूतली –बहरोड़	1213.34 वर्ग किमी.	इसमें सरिस्का अभयारण्य, सरिस्का 'अ' अभयारण्य, जमवा रामगढ़ अभयारण्य का हिस्सा (Overlap) लिया गया है।
3. मुकुन्दरा हिल्स टाईगर रिजर्व	कोटा, बूँदी, झालावाड़, चित्तौड़गढ़	759.99 वर्ग किमी. क्षेत्रफल की दृष्टि से सबसे छोटा टाईगर प्रोजेक्ट	इसमें मुकुन्दरा हिल्स नेशनल पार्क, दर्रा अभयारण्य, जवाहर सागर अभयारण्य, राष्ट्रीय चम्बल घड़ियाल अभयारण्य का हिस्सा (Overlap) लिया गया है।
4. रामगढ़ विषधारी टाईगर प्रोजेक्ट	बूंदी, भीलवाड़ा, कोटा	1501.89 वर्ग किमी. क्षेत्रफल की दृष्टि से सबसे बड़ा टाईगर प्रोजेक्ट	वन विभाग द्वारा 16 मई 2022 को नोटिफिकेशन जारी किया गया। इसमें रामगढ़ विषधारी अभयारण्य व राष्ट्रीय चम्बल घड़ियाल अभयारण्य का हिस्सा (Overlap) लिया गया है।
चारों का कुल क्षेत्रफल 2543.42 वर्ग किमी, (राष्ट्रीय उद्यान व अभयारण्यों के ओवरलेप क्षेत्र को छोड़कर)			
स्रोत– प्रशासनिक प्रतिवेदन रिपोर्ट 2022–23, वन विभाग, राजस्थान, पेज नंबर–100			

☞ **ध्यान रहे**– धौलपुर–करौली टाईगर रिजर्व को राष्ट्रीय बाघ संरक्षण प्राधिकरण (NTCA) ने **अगस्त 2023** में इसे मंजूरी दे दी है। इसका विस्तार **धौलपुर, करौली** व **भरतपुर** जिलों में होगा। यह राजस्थान का **पाँचवा टाईगर रिजर्व** है। इस संबंध में अभी तक राजस्थान वन विभाग का विस्तृत नोटिफेशन जारी नहीं हुआ है।

- **खरमोर संरक्षण (Lesser florican)– ब्यावर** जिले के **सथाना गाँव** में खरमोर पक्षी हेतु कृत्रिम प्रजनन केन्द्र स्थापित किया गया है।
- **हरित मुनिया संरक्षण**– उदयपुर पक्षी उद्यान में आरम्भ किया गया है।

राजस्थान के राष्ट्रीय उद्यान व वन्यजीव अभयारण्य

- वन्यजीवों की अधिकता होने व शिकार पर कोई प्रतिबन्ध नहीं होने के कारण स्वतंत्रता से पूर्व राजस्थान को '**शिकारियों का स्वर्ग**' कहा जाता था।

  वर्तमान में राजस्थान में **राष्ट्रीय उद्यान**– 3
  - **बाघ परियोजनाएँ– 4**
  - **वन्य जीव अभयारण्य**– 26
  - **आखेट निषिद्ध क्षेत्र** – 33
  - **कन्जर्वेशन रिजर्व** – 27
  - **मृगवन**– 7
  - **जन्तुआलय**– 4

राष्ट्रीय उद्यान

- राष्ट्रीय उद्यान **केन्द्र सरकार** द्वारा संचालित होते हैं वर्तमान में **राजस्थान में 3 राष्ट्रीय उद्यान** हैं। भारत का सबसे बड़ा राष्ट्रीय उद्यान लद्दाख के लेह में **हेमिस राष्ट्रीय उद्यान** हैं।
- देश का सबसे छोटा राष्ट्रीय उद्यान **'साउथबटन'** (अण्डमान निकोबार) है। भारत का प्रथम राष्ट्रीय उद्यान **जिम कार्बेट नेशनल पार्क** (उत्तराखण्ड) है। इसका पुराना नाम **हेली नेशनल पार्क** (स्थापना–1935 में) है। इसका नया नाम **'रामगंगा नेशनल पार्क'** है।

❖ रणथम्भौर राष्ट्रीय उद्यान – सवाईमाधोपुर

- यह राजस्थान का **प्रथम राष्ट्रीय उद्यान** व प्रथम टाईगर प्रोजेक्ट है।
- अभयारण्य के रूप में स्थापना– **1955 में**
- टाईगर प्रोजेक्ट प्रारम्भ– **1973 में**
- राष्ट्रीय उद्यान घोषित– **1 नवम्बर, 1980** को
- यह क्षेत्र रियासत काल में जयपुर के राजाओं की **शिकारगाह** था।
- रणथम्भौर को **'भारतीय बाघों का घर'** (**Land of Indian Tiger**) कहा जाता है। यह अभयारण्य **अरावली व विंध्याचल पर्वतमालाओं के संगम** पर स्थित है।
- राष्ट्रीय उद्यान का कुल विस्तार **282.03 वर्ग** किमी. है।
- क्षेत्रफल की दृष्टि से यह **राजस्थान की दूसरी बड़ी बाघ परियोजना** है। (1406 वर्ग कि.मी.) रणथम्भौर टाईगर प्रोजेक्ट में रणथम्भौर नेशनल पार्क, सवाई माधोपुर अभयारण्य, सवाई मानसिंह अभयारण्य, कैलादेवी अभयारण्य और राष्ट्रीय चम्बल घड़ियाल अभयारण्य का हिस्सा शामिल किया गया है। यह टाईगर प्रोजेक्ट **सवाई माधोपुर, करौली, बूँदी व टोंक** जिलों में 1406.92 वर्ग कि.मी. में फैला है।

राज्य के जंतुआलय व जैविक उद्यान

- **जयपुर जंतुआलय**– 1876 में सवाई **रामसिंह द्वितीय** द्वारा रामनिवास बाग में स्थापित किया गया। यह **राज्य का सबसे बड़ा व प्रथम जन्तुआलय** है।
  यह जन्तुआलय मगरमच्छ व घड़ियालों के कृत्रिम प्रजनन केन्द्र के रूप में विख्यात है, यहाँ बाघों का प्रजनन भी किया गया है।
- **उदयपुर जंतुआलय**– 1878 **गुलाबबाग** में। (तत्कालीन शासक **स्वरूपसिंह** ने स्थापित करवाया)
- **बीकानेर जंतुआलय**– 1922 में स्थापित। **वर्तमान में बन्द है।**
- **जोधपुर जंतुआलय**– 1936 में स्थापित। **गोडावन** के कृत्रिम प्रजनन के लिए विख्यात है।
- **कोटा जंतुआलय**– 1954 में स्थापित। राजस्थान का **नवीनतम** जन्तुआलय है।

- केन्द्रीय चिड़ियाघर प्राधिकरण, भारत सरकार द्वारा अनुमोदित '**कॉन्सेप्ट प्लान**' के अनुसार ये जैविक उद्यान विकसित किए गए हैं। वर्ष 2015–16 से इस योजना में फंडिंग पैटर्न 60 प्रतिशत केन्द्र सरकार व 40 प्रतिशत राज्य सरकार का हिस्सा है।

राजस्थान के बायोलॉजिकल पार्क (जैविक उद्यान)

- **सज्जनगढ़ बायोलॉजिकल पार्क, उदयपुर** – यह राजस्थान का **प्रथम बायोलॉजिकल पार्क** है। जो 12 अप्रैल, 2015 को प्रारम्भ हुआ।
- **माचिया बायोलॉजिकल पार्क, जोधपुर** – यह राजस्थान का द्वितीय बायोलॉजिकल पार्क है, जो 20 जनवरी, 2016 को प्रारम्भ हुआ।
- **नाहरगढ़ बायोलॉजिकल, जयपुर**– यह राजस्थान का तृतीय बायोलॉजिकल पार्क है। जो 4 जून, 2016 को प्रारम्भ हुआ।
- **अभेड़ा बायोलॉजिकल पार्क** – **कोटा**, 18 दिसम्बर 2021 को प्रारम्भ हुआ।
- **मरुधरा बायोलॉजिकल पार्क** – **बीकानेर।** (निर्माणाधीन)
- **पुष्कर जैविक उद्यान**– **पुष्कर (अजमेर)** (निर्माणाधीन)

स्रोत– प्रशासनिक प्रतिवेदन, वन विभाग राजस्थान 2022–23

☞ **नोट**– राजस्थान में पर्यटकों के सर्वाधिक आगमन व पर्यटकों से सर्वाधिक आय वाला बायोलॉजिकल पार्क– **नाहरगढ़ (जयपुर)**

राजस्थान के कन्जर्वेशन रिजर्व– 27

- राजस्थान का सबसे बड़ा कन्जर्वेशन रिजर्व– **शाहबाद** (बारां)
- राजस्थान का **सबसे छोटा कन्जर्वेशन रिजर्व– रोटू (नागौर)**
- राजस्थान का प्रथम कन्जर्वेशन रिजर्व– **बीसलपुर रिजर्व** (टोंक)
- राजस्थान का नवीनतम कन्जर्वेशन रिजर्व– **बांझ आमली (बारां) कन्जर्वेशन रिजर्व**
- राजस्थान में **सर्वाधिक कन्जर्वेशन रिजर्व** वाला जिला– **बारां**(5)

- स्थापित होने के क्रम में दिये गये हैं–

क्र. सं.	नाम कन्जर्वेशन रिजर्व	जिला	क्षेत्रफल	नोटिफिकेशन जारी होने की दिनांक
1.	बीसलपुर कन्जर्वेशन रिजर्व	टोंक	48.31	13.10.2008
2.	जोड़बीड़ गाढ़वाला	बीकानेर	56.46	25.11.2008
3.	सुन्धामाता	जालौर, सिरोही	117.48	25.11.2008
4.	गुढ़ा विश्नोईयान	जोधपुर ग्रामीण	2.31	15.12.2011
5.	शाकम्भरी	नीमकाथाना झुंझुंनू	131.00	09.02.2012
6.	गोगेलाव कन्जर्वेशन रिजर्व	नागौर	3.58	09.03.2012
7.	बीड़ झुंझुनू	झुंझुनू	10.47	09.03.2012
8.	रोटू कन्जर्वेशन रिजर्व	नागौर	0.72	29.05.2012
9.	उम्मेदगंज पक्षी विहार	कोटा	2.72	05.11.2012
10.	जवाई बाँध लेपर्ड	पाली	19.79	27.02.2013
11.	बांसियाल खेतडी	नीमकाथाना	70.18	01.03.2017
12.	बांसियाल खेतड़ी बागोर	नीमकाथाना	39.66	10.04.2018
13.	जवाई बाँध लेपर्ड II	पाली	61.98	15.06.2018
14.	मनसा माता	नीमकाथाना	102.3	18.11.2019
15.	शाहबाद कन्जर्वेशन रिजर्व	बारां	189.39	28.10.2021
16.	रणखार कन्जेंशन रिजर्व	सांचौर	72.89	25.04.2022
17.	शाहबाद तलहटी	बारां	178.84	01.09.2022
18.	बीड़ घास फूलिया खुर्द	शाहपुरा	0.86	27.09.2022
19.	बाघदड़ा क्रोकोडाइल	उदयपुर	3.69	30.11.2022
20.	वाडाखेड़ा बीड़	सिरोही	43.31	27.12.2022
21.	झालाना–आमागढ़	जयपुर	35.07	27.02.2023
22.	रामगढ़ कुंजी सुनवास	बारां	38.08	03.03.2023
23.	अरवर गाँव	केकड़ी	9.31	12.04.2023
24.	सोरसन	बारां	--	22.04.2023
25.	हमीरगढ़	भीलवाड़ा	--	22.04.2023
26.	खींचन	फलौदी	--	22.04.2023
27.	बांझ आमली	बारां	14.50	20.05.2023

- **सुंधा माता कन्जर्वेशन रिजर्व**– **(जालौर, सिरोही)**– यह जसवंतपुरा के सुंधा माता पर्वतीय क्षेत्र में स्थित है।
  इस क्षेत्र को देश के पहले **भालू अभयारण्य** के रूप में विकसित किया जा रहा है। राज्य सरकार द्वारा इसके लिए 4468 वर्ग कि.मी. क्षेत्र को रिजर्व किया गया है।

- राजस्थान का प्रथम चिंकारा अभयारण्य– **झुंझुनूं**

10 राजस्थान में पशुपालन

- राजस्थान राज्य की अर्थव्यवस्था में पशुपालन की सदैव एक महत्वपूर्ण भूमिका रही है। सम्पूर्ण राजस्थान में पशुपालन मुख्य उद्यम रहा है और आज भी **आजीविका का प्रमुख साधन** है। राजस्थान का कृषक समाज शुरू से ही पशु सेवा के प्रति समर्पित रहा है लेकिन पशुपालन व्यवसाय आज भी सफल आर्थिक आधार नही बन पाया है। विगत कुछ वर्षो से दुग्ध पदार्थो की माँग से **डेयरी उद्योग** में प्रगति हो रही है। पशुपालन राज्य की एक प्रमुख आर्थिक गतिविधि है, जो अकाल की स्थिति में कृषक को अत्यधिक सुरक्षा प्रदान करती है। पशुपालन **शुष्क कृषि का एक महत्त्वपूर्ण अंग** है। पशुपालन एक **प्राथमिक व्यवसाय** है।
- भारत में **प्रथम पशुगणना** दिसम्बर 1919 से अप्रैल 1920 के मध्य हुई थी, उस समय राजस्थान की जयपुर, जोधपुर, बीकानेर, कोटा, बूँदी आदि रियासतों में भी इसी अवधि में पशुगणना की गई थी।
- स्वतंत्रता के पश्चात् पहली बार **1951 में** पशुगणना की गई।
- 18वीं पशुगणना (2007) पहली बार **नस्ल के आधार पर** की गयी पशुगणना थी। **19वीं पशुगणना** 2012 में हुई।
- **20वीं पशुगणना**– 1 अक्टुबर, 2018 से टैबलेट कम्प्यूटर के माध्यम से प्रारम्भ की गई। इस बार पशुगणना का कार्य विभागीय कर्मचारियों व अधिकारियों के द्वारा ही किया गया था। 16 अक्टुबर, 2019 को नई दिल्ली में **कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय** ने 20वीं पशुगणना रिपोर्ट जारी की।
- राजस्थान में पशु गणना का कार्य **राजस्व मंडल अजमेर** में स्थापित पशुगणना प्रकोष्ठ द्वारा करवाया जाता है। यह **प्रति 5 वर्ष** बाद किया जाता है।

- विश्व के **16% पशु** भारत में पाये जाते है।
  द्वितीय स्थान– **ब्राजील** तृतीय स्थान– **चीन**
- देश में पशुधन की दृष्टि से **राजस्थान का स्थान**– **द्वितीय**
  (कुल पशुधन का **10.60%** राजस्थान में हैं)
- पशुधन की दृष्टि से भारत में प्रथम स्थान– **उत्तरप्रदेश**।
- राजस्थान का **ऊँट, बकरी, गधों व दुग्ध उत्पादन** में प्रथम स्थान है, तथा कुल **पशु सम्पदा, भैंस वंश** में दूसरे स्थान पर है।
- राजस्थान में कुल पशुधन– **568.01 लाख** (1.66% की कमी)
  2012 में कुल पशुधन **577 लाख** था
- राजस्थान में पशुओं में सर्वाधिक प्रतिशत– **बकरियाँ 36.6%**
  गाय 24.4%
  भैंस 24.1%
  भेड़ 13.9%
- राजस्थान में देश का 7.23% **गोवंश**, 12.47% **भैंस वंश**, 14.00% **बकरियाँ**, 10.64% **भेड़** तथा 84.43% **ऊँट** उपलब्ध है।
- राज्य की सकल घरेलू उत्पाद में **10% योगदान** पशुपालन का है।
  स्रोत–प्रशासनिक प्रतिवेदन, पशुपालन निदेशालय राजस्थान 2020-21
- राजस्थान में कृषि व पशुपालन पर आधारित जनसंख्या–**75%**
- पशु घनत्व– **166 पशु प्रति वर्ग कि.मी.**
- प्रति हजार जनसंख्या पर पशु संख्या– **828**
  (स्रोत– आर्थिक समीक्षा 2019-20)
- राजस्थान में सर्वाधिक पशु घनत्व वाला जिला– **डूँगरपुर** (433)
- राजस्थान में न्यूनतम पशु घनत्व वाला जिला– **जैसलमेर** (62)

20वीं पशुगणना– एक नजर

क्र. सं.	पशु का नाम	2012 की पशुगणना	2019 की पशुगणना	परिवर्तन संख्या में	परिवर्तन प्रतिशत मे	भारत में राजस्थान का स्थान	भारत का %	राजस्थान में सर्वाधिक वाला जिला	राजस्थान में न्यूनतम वाला जिला	भारत में सर्वाधिक वाला राज्य
1	गौवंश	1,33,24462	1,39,37630	6,13,168	4.60%	6 वाँ	7.23%	बीकानेर	धौलपुर	पश्चिम बंगाल
2	भैंस	1,29,76095	1,36,93316	7,17,221	5.53 %	दूसरा	12.47%	जयपुर	जैसलमेर	उत्तरप्रदेश
3	भेड़	90,79,702	79,03,857	-11,75845	-12.95%	चौथा	10.64%	बाड़मेर	बाँसवाड़ा	तेलंगाना
4	बकरी	2,16,65939	2,08,40203	-8,25736	-3.81%	प्रथम	14.00%	बाड़मेर	धौलपुर	राजस्थान
5	घोड़े व टट्टू	37,776	33,679	-4097	-10.85%	तीसरा	9.84%	बीकानेर	डूँगरपुर	उत्तरप्रदेश
6	खच्चर	3375	1339	-2036	-60.33%	9 वाँ	1.59%	अलवर	टोंक	उत्तराखंड
7	गधे	81,468	23,374	-58094	-71.31%	प्रथम	18.91%	बाड़मेर	टोंक	राजस्थान
8	ऊँट	3,25,713	2,12,739	-1,12,974	-34.69%	प्रथम	84.43%	जैसलमेर	प्रतापगढ़	राजस्थान
9	सुअर	2,37674	1,54808	-82866	-34.87%	17 वाँ	1.71%	जयपुर	डूँगरपुर	असम

स्रोत–प्रशासनिक प्रतिवेदन, पशुपालन निदेशालय राजस्थान 2020-21

- पशुपालकों को पशुधन का उचित मूल्य दिलवाने की दृष्टि से विश्वविख्यात **10 राज्य स्तरीय पशु मेलों** के अलावा लगभग **250 पशु मेले** प्रतिवर्ष राजस्थान में लगते हैं, जहाँ मेले के अन्य आकर्षणों के साथ ही हजारों की संख्या में जानवरों की खरीद-फरोख्त होती है।
- ये पशु मेले बेहतर पशु विपणन सुविधा उपलब्ध कराने के **साथ-साथ** ग्रामीण शिक्षा एवं विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है।
- राज्य स्तरीय पशु मेलों की संख्या- **10**

राजस्थान के अन्य पशु मेले

राजस्थान के अन्य पशु मेले		
1.	सारणेश्वर पशु मेला	सिरोही
2.	बदराना पशु मेला (वर्तमान में बंद)	नवलगढ़ (झुंझुनूं)
3.	सीताबाड़ी पशु मेला	सीताबाड़ी (बारां)
4.	गदर्भ पशु मेला	लूणियावास (जयपुर)
5.	बाबा रघुनाथपुरी पशु मेला	सांचौर
6.	सेवड़िया पशु मेला	रानीवाड़ा (सांचौर)
7.	बजरंग पशु मेला	भरतपुर
8.	आमेट पशु मेला	राजसमंद
9.	चान्दसेन पशु मेला	मालपुरा (टोंक)
10.	बहरोड़ पशु मेला	कोटपूतली-बहरोड़
11.	निम्बोंनाथ पशु मेला	पाली
12.	हनुमान पशु मेला	जसवंतगढ़ (डीडवाना-कुचामन)
13.	बसन्त पशु मेला	रूपवास (भरतपुर)

- **राजस्थान राज्य पशु मेला अधिनियम**- 1963
- वर्ष 2019-20 के आँकड़ों के अनुसार राजस्थान में सर्वाधिक पशु आमद वाले पशु मेले- **गोगामेड़ी पशु मेला** (8462 पशु)
  श्री जसवंत पशु मेला (7534 पशु)
  रामदेव पशु मेला (4763 पशु)
- रवन्ना से होने वाली आय की दृष्टि से सबसे बड़ा पशु मेला- **जसवंत पशु मेला**
- सर्वाधिक **गौवंश** की बिक्री वाला पशु मेला- **रामदेव पशु मेला**
- सर्वाधिक **भैंसों** की बिक्री वाला पशु मेला- **जसवंत पशु मेला**
- सर्वाधिक **ऊँटों** की बिक्री वाला पशु मेला- **गोगामेड़ी पशु मेला**
- सर्वाधिक **घोड़ों** की बिक्री वाला पशु मेला- **पुष्कर पशु मेला**

स्रोत- प्रशासनिक प्रतिवेदन, पशुपालन निदेशालय, राजस्थान 2019-20

☞ **नोट- पहले कोरोना व उसके बाद लम्पी व ग्लैंडर्स रोग के कारण पिछले 3 वर्षो में अधिकांश पशु मेले निरस्त कर दिए गए, इसलिए नवीनतम आंकड़े उपलब्ध नहीं है।**

राजस्थान में दुग्ध व डेयरी विकास (Milk and dairy industry)

- राजस्थान में **डेयरी विभाग** की स्थापना- **1973**
- 1972-73 में डेयरी विकास विभाग द्वारा जिला दुग्ध उत्पादक सहकारी संघो की स्थापना की गई।
- (**RSDDC**) **राजस्थान राज्य डेयरी विकास निगम** - 1975 विश्व बैंक सहायता कार्यक्रम के तहत स्थापित।
- (**RCDF**) **राजस्थान कॉपरेटिव डेयरी फेडरेशन**- इसकी स्थापना **1977** में **जयपुर** में की गई। RSDDC का इसमें विलय कर दिया गया है। यह राज्य स्तर पर डेयरी विकास का **शीर्षस्थ संस्थान** है।
- राजस्थान का डेयरी विकास कार्यक्रम **सहकारिता पर आधारित** है, इसे सहकारी समितियों के माध्यम से क्रियान्वित किया जा रहा है। इसकी स्थापना 1977 में की गई। जो '**सरस**' नाम से उत्पाद बनाती है। इसका **तीन स्तरीय ढांचा** है-
- **शीर्ष स्तर** पर- **RCDF**
- **जिला स्तर** पर- **जिला दुग्ध उत्पादक संघ।**
- राजस्थान मे RCDF से सम्बद्ध **24** जिला दुग्ध उत्पादक संघ हैं।
- नवीनतम दुग्ध उत्पादक सहकारी संघ- **राजसमंद** (बजट घोषणा)
- **प्राथमिक स्तर** पर- **प्राथमिक दुग्ध उत्पादक समितियाँ।**
- राजस्थान में नवम्बर 2022 तक कुल **17463** प्राथमिक दुग्ध उत्पादक समितियाँ हैं। इन **समितियों** को **24** जिला दुग्ध उत्पादक सहकारी एवं राजस्थान राज्य सहकारी डेयरी फेडरेशन से सम्बद्ध किया गया है। वर्तमान में राज्यभर में **8.59 करोड़ दुग्ध उत्पादक**, सहकारिता पर आधारित डेयरी विकास कार्यक्रम से सम्बद्ध है।
- **मिल्क प्रोसेसिंग प्लान्ट-** राजसमंद में लगेगा (बजट 2022)

- राज्य की सबसे पुरानी डेयरी- **पदमा डेयरी (अजमेर)**
- राज्य की सबसे बड़ी डेयरी- **रानीवाड़ा (सांचौर)**
- **उरमूल डेयरी** (URMUL)- **बीकानेर**
  (उत्तर राजस्थान मिल्क यूनियन लिमिटेड)
- **वरमूल डेयरी** (WRMUL)- **जोधपुर**
  (वेस्टर्न राजस्थान मिल्क यूनियन लिमिटेड)
- **गंगमूल** (GANGMUL)- **हनुमानगढ़**

- (RCDF) राजस्थान कॉपरेटिव डेयरी फेडरेशन के अधीन 6 पशु आहार सयंत्र- **तबीजी (अजमेर), नदबई (भरतपुर), झोटवाड़ा (जयपुर) कालाडेरा (जयपुर ग्रामीण) जोधपुर, लाम्बियाकलां (शाहपुरा)**
- राज्य में **24 दुग्ध संकलन केन्द्र** है।
- राजस्थान में **दुग्ध अवशीतन (फ्रीज) केन्द्र** - 24
- **6 दुग्ध पाउडर संयंत्र** कार्यरत हैं।
  जयपुर में **1 ट्रेटापैक दुग्ध संयंत्र** कार्यशील है।
- RCDF का सीड मल्टीप्लीकेशन फार्म- **रोजड़ी (अनूपगढ़)**
- राज्य की पहली महिला दुग्ध उत्पादक समिति- **इंदौरा गाँव (चित्तौड़गढ़)**
- राजस्थान की पहली महिला दुग्ध उत्पादक सहकारी समिति- **भोजुसर, (बीकानेर)**
- RCDF का प्रथम पशु सीमन बैंक- **बस्सी** (जयपुर ग्रामीण)
  दूसरा सीमन बैंक (वीर्य बैंक)- **जोधपुर**
- RCDF का **पहला आईसक्रीम प्लांट** - भीलवाड़ा
  (भीलवाड़ा जिला दुग्ध उत्पादक सहकारी संघ लिमिटेड द्वारा स्थापित)

11 राजस्थान में कृषि

- कृषि राजस्थान की अर्थव्यवस्था का **मेरुदण्ड** है। कृषि के लिए अंग्रेजी में **एग्रीकल्चर** शब्द प्रयुक्त होता है, एग्रीकल्चर शब्द की उत्पत्ति **लैटिन भाषा** के 2 शब्दों से हुई है, **'एग्री'** जिसका अर्थ **'मृदा'** और **'कल्चर'** का अर्थ **'कृषि'** है। इस प्रकार कृषि का अर्थ 'फसल उगाने के लिए मिट्टी की जुताई करना' है।
- मानसून की अनियमितता, असमानता, अपूर्णता राजस्थान की कृषि को सदैव प्रभावित करती रही है। राजस्थान भारत के कुल कृषित क्षेत्रफल का **14.09 % हिस्सा** रखता है भारत के अन्य राज्यों की तरह राजस्थान भी **कृषि प्रधान राज्य** है राजस्थान की लगभग **75% आबादी** कृषि पर निर्भर है।

❖ राजस्थान में कृषि की विशेषताएँ-

- **मानसून पर आधारित** - राजस्थान में अधिकांश कृषि मानसून पर निर्भर है, इसलिए राजस्थान में कृषि को **'मानसून का जुआ'** कहते हैं।
  राजस्थान में औसत वार्षिक वर्षा- **57.5 सेमी**
  पूर्वी राजस्थान में औसत वार्षिक वर्षा- 70.4 सेमी
  पश्चिमी राजस्थान में औसत वार्षिक वर्षा- 31.0 सेमी
- **जीविकोपार्जन का मुख्य आधार**- राजस्थान में कृषि व पशुपालन पर **75% जनसंख्या** निर्भर करती है, इसलिए कृषि राजस्थान की अर्थव्यवस्था का **मेरुदण्ड** और लोगों के जीविकोपार्जन का मुख्य आधार है।
- **खाद्यान्न फसलों की अधिकता**- फसलों के उत्पादन में राजस्थान के कृषक **खाद्यान्न फसलों** पर अधिक ध्यान व **व्यापारिक फसलों** पर कम ध्यान देते हैं। पिछले कुछ वर्षों में राजस्थान में खाद्यान्न फसलों (**Cereals**) के **क्षेत्रफल में कमी** आयी है। वर्ष 2007-08 में 97.74 लाख हैक्टेयर से घटकर वर्ष 2021-22 में 90.99 लाख हैक्टेयर रह गया है।
- **तिलहनों के क्षेत्रफल में वृद्धि**- राजस्थान में तिलहन फसलों का क्षेत्रफल धीरे-धीरे बढ़ रहा है। पिछले कुछ वर्षों में राजस्थान में तिलहनी फसलों (**Oil Seed**) के **क्षेत्रफल में वृद्धि हुई** है। वर्ष 2007-08 में 40.15 लाख हैक्टेयर से बढ़कर वर्ष 2021-22 में 69.17 लाख हैक्टेयर हो गया है।
- **दहलनी फसलों में वृद्धि**- पिछले कुछ वर्षों में राजस्थान में दलहनी फसलों (**Pulses**) के **क्षेत्रफल व उत्पादन में वृद्धि** हुई है। दलहन का क्षेत्रफल वर्ष 2007-08 में 38.69 लाख हैक्टेयर से बढ़कर वर्ष 2021-22 में 64.57 लाख हैक्टेयर हो गया है।
- **मिश्रित कृषि**- जब कृषि और पशुपालन का कार्य साथ-साथ किया जाता है तो उसे **'मिश्रित कृषि'** कहते हैं, राजस्थान में मिश्रित कृषि ही पायी जाती है। राजस्थान की **शुष्क जलवायु** भी पशुपालन को प्रोत्साहित करती है।
- **सिंचाई के साधनों की कमी**- राजस्थान के कुल कृषित क्षेत्रफल का **32%** भाग ही **सिंचित क्षेत्र** है, इस प्रकार सिंचाई सुविधाओं की कमी के कारण **प्रति हैक्टेयर उत्पादकता कम** है। राज्य में भूजल की स्थिति भी बहुत विषम है राजस्थान के **302 खंडों** में से अधिकांश **'डार्क जोन'** में हैं।
- **मानव श्रम का ज्यादा उपयोग**- राजस्थान में निराई, गुड़ाई, सिंचाई, कटाई आदि में मानव श्रम का ही उपयोग अधिक हो रहा है।
- **नवीन तकनीकों व प्रौद्योगिकी का कम उपयोग**- राजस्थान में कृषि की परम्परागत पद्धति ही प्रचलित है, इसलिये कृषि में नवीन तकनीकों व प्रौद्योगिकी का कम उपयोग होता है।
- **कृषि जोतों का बड़ा आकार** - राजस्थान में **औसत कृषि जोत 2.73 हैक्टेयर** है, जबकि भारत में **औसत कृषि जोत 1.41 हैक्टेयर** है।

❖ कृषि सम्बन्धी नवीनतम आँकड़े-

- राजस्थान में **शुद्ध बोया जाने वाला** क्षेत्रफल-**179.48 लाख** हैक्टेयर (52.34%)
- भारत के कुल कृषि योग्य भूमि (कृषित क्षेत्रफल) में से राजस्थान में-**14.09%**
- राजस्थान के कुल कृषित क्षेत्रफल का **खरीफ में बोया जाने वाला भाग- 58%**
- राजस्थान के कुल कृषित क्षेत्रफल का **रबी में बोया जाने वाला भाग- 42%**

राज्य में फसलों का क्षेत्रफल व उत्पादन

फसल		वर्ष 2021-22 (अंतिम)	वर्ष 2022-23 अग्रिम अनुमान
अनाज	क्षेत्रफल	91.00 लाख हैक्टेयर	97.54 लाख हैक्टेयर
	उत्पादन	191.00 लाख टन	206.57 लाख टन
दलहन	क्षेत्रफल	64.57 लाख हैक्टेयर	57.14 लाख हैक्टेयर
	उत्पादन	40.52 लाख टन	47.42 लाख टन
खाद्यान्न	क्षेत्रफल	155.57 लाख हैक्टेयर	154.68 लाख हैक्टेयर
	उत्पादन	231.52 लाख टन	253.99 लाख टन
तिलहन	क्षेत्रफल	69.17 लाख हैक्टेयर	63.77 लाख हैक्टेयर
	उत्पादन	102.68 लाख टन	99.78 लाख टन

स्रोत- आर्थिक समीक्षा रिपोर्ट, 2022-23

- न्यूनतम कृषि मंडियाँ- **जैसलमेर, फलौदी, केकड़ी, शाहपुरा, कोटपूतली-बहरोड़, बालोतरा, धौलपुर, सिरोही, राजसमंद, करौली, डूंगरपुर व बांसवाड़ा** (प्रत्येक में 1-1 मंडी) **(स्रोत- एग्रीकल्चर मार्केटिंग विभाग, राजस्थान)**
- राजस्थान राज्य डेयरी फेडेरेशन का **सीड मल्टीप्लीकेशन फार्म** - रोजड़ी (अनूपगढ़)
- **बहुउद्देशीय एग्रो टावर** की स्थापना- श्रीगंगानगर, कोटा व खैरथल -तिजारा की मंडियों में
- राजस्थान का **पहला पादप क्लिनिक- मंडोर** (जोधपुर) स्थित कृषि अनुसंधान केन्द्र में।
- **जैव उर्वरक परीक्षण प्रयोगशाला** - दुर्गापुरा (जयपुर)

❖ **राजस्थान के कृषि विश्वविद्यालयः- (संख्या-5)**

- **स्वामी केशवानन्द राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय- बीकानेर** राजस्थान में प्रथम कृषि विश्वविद्यालय की स्थापना 1962 में **उदयपुर** में की गयी, 1964 में यह बहुसंकाय विश्वविद्यालय के रूप में परिवर्तित हो गया एवं नाम बदलकर **मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय** रखा गया। **अगस्त 1987** में इससे कृषि संकाय अलग कर राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय **बीकानेर** की स्थापना की गई। **स्रोत- सुजस पेज नंबर- 247**

  9 जून, 2009 को इसका नाम स्वामी केशवानन्द राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय रखा गया।

  ध्यान रहे- प्रदेश में बीकानेर स्थित कृषि विश्वविद्यालय के तत्वाधान में वर्ष 1996 में **पादप जैव प्रौद्योगिकी प्रयोगशाला बीकानेर** में स्थापित की गयी।
- **महाराणा प्रताप कृषि व तकनीकी विश्वविद्यालय-उदयपुर**, 1 नवम्बर, 1999
- **कृषि विश्वविद्यालय- बोरखेड़ा** (कोटा) सितम्बर 2013
- **कृषि विश्वविद्यालय- मंडोर** (जोधपुर) सितम्बर 2013
- **श्री कर्ण नरेन्द्र कृषि विश्वविद्यालय - जोबनेर** (जयपुर ग्रामीण) सितम्बर 2013

कृषि विकास की योजनाएँ (राष्ट्रीय स्तर)

- **हरित कांति -**

* हरित क्रांति शब्द का **प्रथम बार प्रयोग** 1960 के दशक में अमेरिकी वैज्ञानिक **'विलियम गैडे'** ने किया था।
* इस क्रांति के प्रारम्भिक प्रयोग **1943 में** मैक्सिको में प्रारम्भ हुए थे, यहाँ **रॉक फेलर फाउण्डेशन** के वैज्ञानिकों ने गेहूँ की अधिक उपज वाली तथा अधिक रोग प्रतिरोधी बौनी किस्में विकसित की।
* हरित क्रांति का जनक **नॉर्मन अर्नेस्ट बोरलॉग** (अमेरिका) को माना जाता है, ये एकमात्र **कृषि वैज्ञानिक** हैं, जिन्हें **नोबेल पुरस्कार** (1970) दिया गया।
* भारत में हरित क्रांति का तात्पर्य है- कृषि की परम्परागत तकनीकों तथा विधियों के स्थान पर आधुनिक विधियों का प्रयोग कर खाद्यान्न उत्पादन में वृद्धि करना।
* भारत में **हरित क्रांति का जनक डॉ. एम.एस.स्वामीनाथन** को माना जाता है। भारत में हरित क्रांति का प्रारम्भ पंजाब, हरियाणा व उत्तरप्रदेश से हुआ, यहाँ गेहूँ की खेती में उन्नत बीजों का प्रयोग प्रारम्भ किया गया।
* हरित क्रांति के सर्वाधिक प्रभाव वाला क्षेत्र- पंजाब, उत्तरप्रदेश
* राजस्थान में **सर्वाधिक प्रभाव** वाले जिले- **हनुमानगढ़, गंगानगर**
* **हरित क्रांति की विशेष सफलता - गेहूँ व चावल** का उत्पादन बढ़ाने में
* हरित क्रांति से खेती में सकल कृषि क्षेत्र में वृद्धि, **मशीनों का प्रयोग** बढ़ गया, उन्नत बीजों का प्रयोग, **रासायनिक खादों का प्रयोग** भी बढ़ गया। हरित क्रांति के प्रभाव से उत्पादन में वृद्धि के कारण आज देश आत्मनिर्भर है।
* **हरित क्रांति का नुकसान**- इसमें खाद्यान्नों के उत्पादन पर अधिक बल दिए जाने के कारण दलहन व मोटे अनाज के उत्पादन व क्षेत्र में कमी आयी। अत्यधिक सिंचाई से भूमिगत जल स्तर में कमी आयी। इसका लाभ सभी राज्यों को नहीं मिलने से क्षेत्रीय असमानता उत्पन्न हुई।

- **राष्ट्रीय दलहन विकास परियोजना** - 1988-89

* इस योजना में केन्द्रः राज्य के हिस्सेदारी 75:25 है।
* चना उत्पादन हेतु-12 जिले, मूँग-8 जिले, उड़द- 3 जिले शामिल किये गये थे।

- **आईसोपाम योजना- 2004-05**। मक्का, तिलहन व दलहन फसलों के उत्पादन में वृद्धि हेतु प्रारम्भ की गयी इस योजना का उद्देश्य राज्य को खाद्य सुरक्षा में आत्मनिर्भर बनाना है। केन्द्र सरकार की यह योजना राजस्थान के **सभी 33 जिलों में** लागु है। अब इसका नाम बदलकर **राष्ट्रीय तिलहन एवं ऑयल पाम मिशन** (NMOOP) कर दिया है। 2015-16 से योजना में केन्द्र : राज्य का हिस्सा **60:40** है।

* इस योजना में प्रमाणित बीजों का उत्पादन, वितरण, फसल प्रदर्शन, जैव उर्वरक, कृषक प्रशिक्षण, फव्वारा सैट, मिनी किट वितरण आदि शामिल हैं।

- **ATMA एग्रीकल्चर टेक्नोलोजी मैनेजमेन्ट एजेन्सी** (कृषि प्रौद्योगिकी प्रबन्ध अभिकरण)-**2005-06** से। ये अभिकरण भारत सरकार द्वारा राजस्थान के **सभी जिलों** में स्थापित हैं। यह एक पंजीकृत संस्था है जो जिला स्तर पर **कृषि प्रौद्योगिकी प्रसार** के लिए उत्तरदायी है। जिला स्तर पर यह कृषि विकास में शामिल सभी विभागों, अनुसंधान संस्थाओं, गैर-सरकारी संस्थाओं व अभिकरणों के साथ सम्बद्ध होगी।

- **अमूल्य नीर योजना- 2005-06** से प्रारम्भ।

जल संरक्षण, बचत व कृषि में जल का कुशलतम उपयोग के लिए प्रारम्भ की गई इस योजना के अन्तर्गत डिग्गी फव्वारा कार्यक्रम, फव्वारा सिंचाई पद्धति का विस्तार व बूंद-बूंद सिंचाई कार्यक्रम जैसे कार्यक्रम संचालित किये जा रहे हैं।

राजस्थान
कृषि जलवायु–खण्ड

राजस्थान के कृषि जलवायु प्रदेश

→ क्षेत्रफल की दृष्टि से **राजस्थान का सबसे बड़ा कृषि जलवायु प्रदेश** – **अति शुष्क एवं आंशिक सिंचित पश्चिमी मैदानी क्षेत्र (I C)**

→ क्षेत्रफल की दृष्टि से **राजस्थान का सबसे छोटा कृषि जलवायु प्रदेश** – **आर्द्र दक्षिणी मैदानी क्षेत्र (IV B)**

→ जलवायु के हिसाब से राजस्थान की कृषि को **10 कृषि जलवायु क्षेत्रों** में बांटा है।

✦ **ग्राह्य परीक्षण केन्द्र** (ATC)– राज्य के कृषि विश्वविद्यालयों के अधीन कार्यरत कृषि अनुसंधान केन्द्रों से प्राप्त नवीनतम कृषि तकनीकों का अग्रिम सत्यापन इन एटीसी पर किया जाता है। इन केन्द्रों पर स्थानीय परिस्थितियों के अनुसार कृषि विस्तार कार्यकर्ताओं से प्राप्त फीडबैक के आधार पर उपयोगिता का पता लगाने हेतु परीक्षणों (Trials) द्वारा संशोधन किया जाता है। निजी संस्थाओं द्वारा तैयार संकर एवं उन्नत किस्म के बीजों की उपयोगिता की जाँच भी इन ग्राह्य परीक्षण केन्द्रों पर की जाती है।

✦ राजस्थान के 10 कृषि जलवायुविक क्षेत्रों में **10 एटीसी** स्थापित हैं।

I A- रामपुरा (जोधपुर ग्रामीण) **I B. श्रीकरणपुर एवं हनुमानगढ़**
I C- लूणकरणसर **II A- आबूसर (झुंझुनूं)**
II B- सुमेरपुर (पाली) **III A–तबीजी (अजमेर)**
III B–मलिकपुर (भरतपुर) **IV A- चित्तौड़गढ़**
V- छत्रपुरा (बूँदी)

☛ **नोट**– जलवायुवीय खण्ड **IV B** में ग्राह्य परीक्षण केन्द्र स्थापित नहीं है।

क्र सं	नाम जलवायु खण्ड	जल वायु खण्ड	जिलों के नाम	औसत वर्षा	कुल क्षेत्रफल (लाख हैक्टे.)	प्रमुख कृषि उपजें	कृषि अनुसंधान केन्द (ARS)- 11
1.	शुष्क पश्चिमी मैदानी क्षेत्र Arid Western Plains	IA	बाड़मेर, बालोतरा, फलौदी व उ.प.जोधपुर ग्रामीण (शेरगढ़,औसियां तहसीलें)	20-37 सेमी	47.4	बाजरा, मोठ, तिल, गेंहूं, सरसों, जीरा	कृषि अनुसंधान केन्द्र मंडोर (जोधपुर)
2.	उत्तर पश्चिमी सिंचित मैदानी क्षेत्र Irrigated North Western Plains	IB	गंगानगर, हनुमानगढ़ व अनूपगढ़	10-35 सेमी	21.0	कपास, ग्वार गेंहूं, सरसों, चना	कृषि अनुसंधान केन्द्र गंगानगर
3.	अति शुष्क एवं आंशिक सिचिंत पश्चिमी मैदानी क्षेत्र Hyper Arid Partial Irrigated Western Plains	IC	जैसलमेर, बीकानेर, फलौदी (नोख तहसील), चुरू (रतनगढ़ व सुजानगढ़ ,सरदारशहर तहसीलें)	10-35 सेमी	77.0 सबसे बड़ा	बाजरा, मोठ, ग्वार गेंहूं, सरसों, चना	कृषि अनुसंधान केन्द्र बीछवाल (बीकानेर)
4.	अंतःस्थलीय जलोत्सरण के अंतःवर्ती मैदानी क्षेत्र Internal Drainage Dry Zone	IIA	सीकर,झुंझुनू, नीमकाथाना, चुरू (राजगढ़, तारानगर, चुरू तहसीलें), नागौर, डीडवाना-कुचामन	30-50 सेमी	36.9	बाजरा, ग्वार, दालें सरसों, चना	कृषि अनुसंधान केन्द्र फतेहपुर (सीकर)
5.	लूनी नदी का अंतःवर्ती मैदानी क्षेत्र Transitional Plains of luni Basin	II B	पाली, जालौर, सांचौर, सिरोही (शिवगंज, सिरोही, रेवदर तहसीलें),ब्यावर, जोधपुर, जोधपुर ग्रामीण (भोपालगढ़, बिलाड़ा, लूणी तहसीलें)	30-50 सेमी	30.0	बाजरा, ग्वार, तिल गेंहूं, सरसों	कृषि अनुसंधान केन्द्र केशवाना (जालौर)
6.	अर्द्धशुष्क पूर्वी मैदानी क्षेत्र Semi arid eastern plain	III A	अजमेर, केकड़ी, टोंक, दूदू, जयपुर, जयपुर ग्रामीण, दौसा, प. कोटपूतली-बहरोड़	50-70 सेमी	29.6	बाजरा, ग्वार, ज्वार गेंहूं, सरसों, चना	राजस्थान कृषि अनुसंधान केन्द्र दुर्गापुरा (जयपुर)
7.	बाढ सम्भाव्य पूर्वी मैदानी क्षेत्र Flood prone eastern plains	III B	खैरथल-तिजारा, पूर्वी कोटपूतली-बहरोड़, अलवर, डीग, भरतपुर, धौलपुर, गंगापुर सिटी, सवाईमाधोपुर, करौली	50-70 सेमी	27.7	बाजरा, ग्वार, मुंगफली गेंहूं, जौ, सरसों, चना	कृषि अनुसंधान केन्द्र नवगाँव (अलवर)
8.	अर्द्ध आर्द्र दक्षिणी मैदानी क्षेत्र एवं अरावली पहाड़ी क्षेत्र Sub humid Southern plains	IV A	भीलवाड़ा,शाहपुरा, राजसमंद, चित्तौड़गढ़, उदयपुर, सिरोही (पिंडवाड़ा, आबू रोड़ तहसीलें)	50-90 सेमी	33.6	मक्का, दालें, ज्वार गेंहूं, चना	कृषि अनुसंधान केन्द्र, उदयपुर Dryland Farming Research Station अरजिया (भीलवाड़ा)
9.	आर्द्र दक्षिणी मैदानी क्षेत्र Humid Southern plains	IV B	बाँसवाड़ा,डूंगरपुर, प्रतापगढ़, उदयपुर, (खेरवाड़ा,ऋषभदेव) एवं सलुम्बर(सराड़ा तहसीलें)	50-110 सेमी	17.2 सबसे छोटा	मक्का, ज्वार, चावल उड़द, गेंहूं, चना	कृषि अनुसंधान केन्द्र बोरवट (बांसवाड़ा)
10.	आर्द्र दक्षिणी पूर्वी मैदानी क्षेत्र humid South Eastern plains	V	कोटा,बूंदी,बारां, झालावाड़ जिले एवं सवाई माधोपुर का कुछ भाग	65-100 सेमी	27.0	ज्वार, सोयाबीन, गेंहू, सरसों	कृषि अनुसंधान केन्द्र उम्मेदगंज (कोटा)

→ योजना आयोग ने 1989 ई. में भारतीय कृषि जलवायुविक प्रदेश को **15 वृहत् भागों** में विभाजित किया है। जिसमें से राजस्थान का अधिकांश भाग (14) **पश्चिमी शुष्क प्रदेश** में आता है, शेष भाग (8) **मध्य पठारी व पहाड़ी क्षेत्र** में आता है। उत्तरी राजस्थान का कुछ हिस्सा (6) **ट्रांस गंगा मैदानी क्षेत्र** में आता है।

❐ 10वीं कृषि गणना 2015-16

✦ भारत में कृषि गणना का कार्य हर **5 वर्ष में** कृषि व सहकारिता विभाग करता है भारत में प्रथम कृषि गणना 1970-71 में हुई थी। 2015-16 में **10 वीं कृषि गणना** हुई थी।

✦ राजस्थान में कुल **क्रियाशील कृषि जोतों** की संख्या **76.55 लाख** है। 2010-11 में **68.88 लाख** थी, अर्थात् भूमि जोतों की संख्या में 11.14% की वृद्धि हुई है।

✦ वर्ष 2010-11 में कुल जोतों का क्षेत्रफल **211.36 लाख हैक्टेयर** था, जो वर्ष 2015-16 में घटकर **208.73 लाख हैक्टेयर** हो गया, अर्थात् जोतों के कुल क्षेत्रफल में **1.24% की कमी** हुई।

✦ कुल कृषि जोतों में **महिला प्रचालित** कृषि जोतों की संख्या- **7.75 लाख**

✦ **पुरुष प्रचालित** कृषि जोतों की संख्या- **68.66 लाख**

✦ महिला भूमि जोतों का क्षेत्रफल- **16.55 लाख हैक्टेयर**

12 राजस्थान में अपवाह व नदियाँ

राजस्थान का अपवाह तंत्र-

- राजस्थान की गणना भारत के शुष्क प्रदेशों में की जाती है अतः नदियों और झीलों अर्थात् जल राशियों का विशेष महत्त्व है, किन्तु दुर्भाग्य से इस प्रदेश में नदियाँ न केवल कम हैं, अपितु वर्ष-पर्यन्त प्रवाहित होने वाली नदियों का भी अभाव है।
- केवल **चम्बल नदी** ही एक ऐसी नदी है जो वर्षभर बहती है। **चम्बल** और **माही नदी** मूलतः राजस्थान की नदियाँ नहीं कही जा सकती। पश्चिमी राजस्थान में केवल **लूनी** और उसकी सहायक नदियाँ एक सीमित क्षेत्र में हैं। इसी प्रकार **घग्घर नदी** केवल वर्षाकाल में बहती है।
- **नदी-** धरातल पर प्राकृतिक रूप से एक धारा के रूप में बहने वाले जल को **नदी** कहा जाता है, जो हमेशा ढ़ाल के अनुसार ऊपर से नीचे की ओर बहती है।
- **सहायक नदियाँ-** वे छोटी-छोटी नदियाँ जो अपने क्षेत्र का जल आगे ले जाकर बड़ी नदियों में उड़ेलती हैं, उन्हें **सहायक नदियाँ** कहते हैं।
- **अपवाह-** निश्चित वाहिकाओं के माध्यम से हो रहे जल प्रवाह को '**अपवाह**' कहते हैं।
- **अपवाह तंत्र-** से तात्पर्य नदियाँ एवं उनकी सहायक नदियों से है जो एक **तंत्र या प्रारूप** का निर्माण करती हैं।

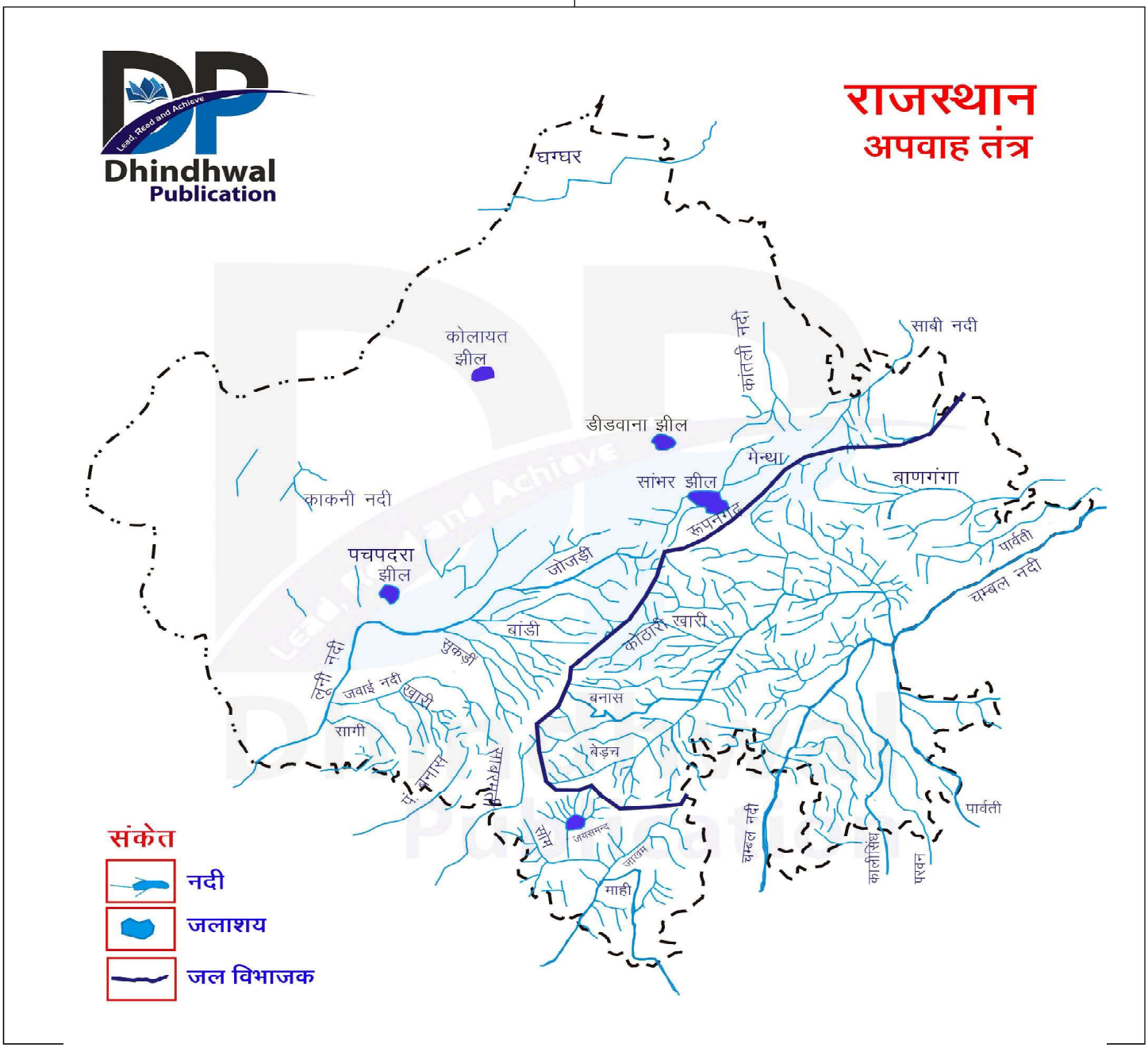

- **जल संसाधन**– जल के वे स्रोत जो मानव के लिए उपयोगी हों या जिनके उपयोग की संभावना हो उनको **जल संसाधन** कहते हैं।
- **जलग्रहण**– नदी एक विशिष्ट क्षेत्र से अपना जल बहाकर लाती है जिसे '**जलग्रहण**' कहते हैं।
- राजस्थान की अपवाह प्रणाली यहाँ की भूगर्भिक संरचना, धरातल विशेषकर **अरावली पर्वत श्रृंखला** एवं **जलवायु** द्वारा नियंत्रित है।
- यहाँ के अपवाह तंत्र की एक प्रमुख विशेषता यह है कि यहाँ **आन्तरिक जल प्रवाह प्रणाली** पायी जाती है जिसमें नदियाँ कुछ दूरी तक प्रवाहित होकर रेत अथवा भूमि में समाहित हो जाती हैं। जल की दृष्टि से प्रदेश में देश के जल का केवल 1.16% **सतही जल** उपलब्ध है।
- प्रवाह के आधार पर **राजस्थान की अपवाह प्रणाली** को 3 भागों में विभाजित किया जा सकता है।

1. **बंगाल की खाड़ी** की ओर जाने वाली नदियाँ (24%)
2. **अरब सागर** की ओर जाने वाली नदियाँ (16%)
3. **आंतरिक जल प्रवाह** की नदियाँ (60%)–

☞ **नोट**– राजस्थान का 60.02% भाग **आंतरिक प्रवाह प्रणाली** के अन्तर्गत आता है।

बंगाल की खाड़ी की तरफ जाने वाली नदियाँ–

- इसके अन्तर्गत चम्बल, बनास, बाणगंगा, गम्भीर और इनकी सहायक नदियाँ सम्मिलित हैं।
- राजस्थान के पूर्वी भाग से बाहर निकलकर **यमुना** में सीधा अपना जल ले जाने वाली नदियाँ– **चम्बल** व **गम्भीर**।

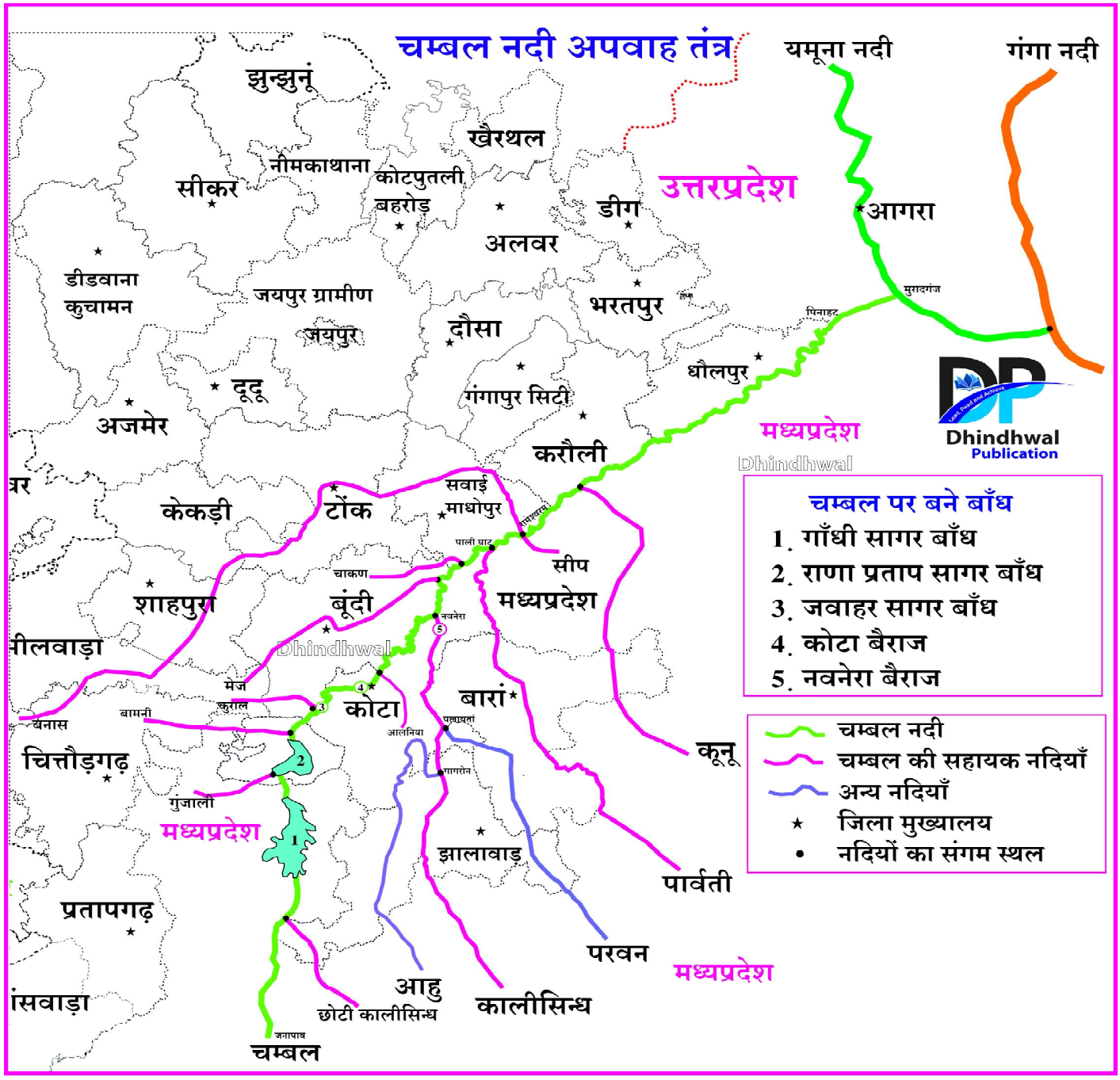

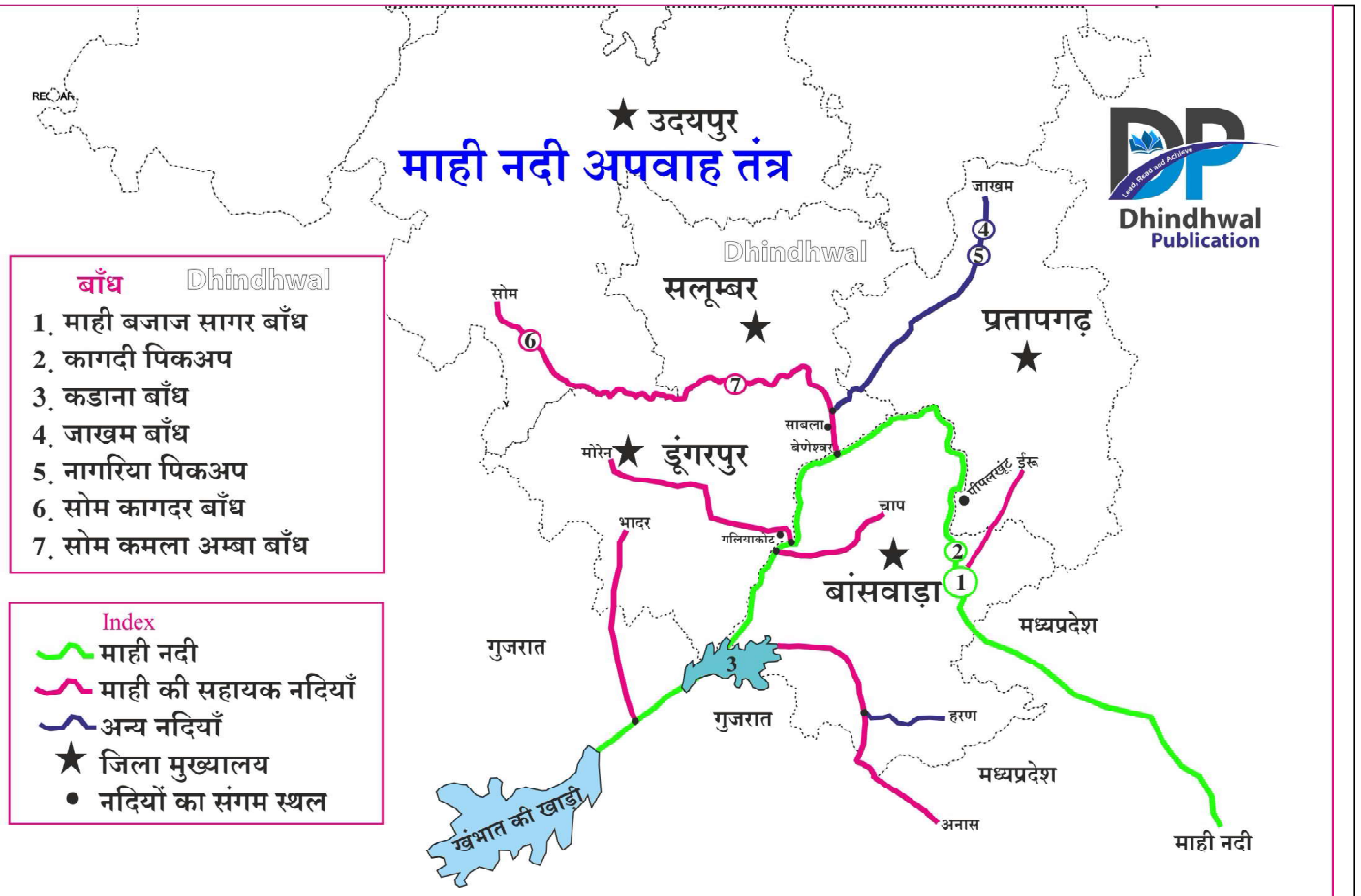

❖ **अरवरी नदी–** उद्गम– **सकरा बाँध** (थानागाजी, अलवर)

* 45 किमी लम्बी यह नदी पूर्णतया सूख गई थी, बाद में **तरुण भारत संघ** के प्रयासों और जागरूकता अभियान से इसके नदी किनारे के गाँवो के प्रयासों से इसे पुनर्जीवित किया गया है।
* इस नदी को बचाए रखने के लिए 1999 में **'अरवरी संसद'** बनायी गई। इस नदी का समापन **सरसा नदी** में होता है।

❖ **जगर नदी–**

* **डांग क्षेत्र** की पहाड़ियाँ (हिंडौन, करौली) से निकलती है। जगर बाँध– **हिंडौन**(करौली) के पास। समापन– **गम्भीर नदी में**

❖ **भगाणी नदी–** यह नदी अलवर में **कांकणवाड़ी किले** के पास से निकलती है, **मानसरोवर बाँध** (अलवर) को भरती है।

❖ **सरसा नदी–**

* अलवर के थानागाजी तहसील से इसका उदगम होता है। इसे **'सावा'** नदी के नाम से भी जाना जाता है। आगे चलकर यह नदी बाणगंगा में मिल जाती है।
* प्रवाह क्षेत्र– अलवर, दौसा।
* सहायक नदी– **अरवरी, भगाणी, तिलदह**

अरब सागर की तरफ जाने वाली नदियाँ

राजस्थान के कुल क्षेत्रफल के **16% भाग में** ये अपवाह प्रणाली पायी जाती है, इसके अन्तर्गत माही, साबरमती, पश्चिमी बनास व लूनी नदी व इनकी सहायक नदियाँ सम्मिलित हैं, जो **अरब सागर** में अपना जल डालती हैं।

❖ **माही नदी–**

* उपनाम– **आदिवासियों की गंगा/वागड़ की गंगा/कांठल की गंगा/दक्षिणी राजस्थान की स्वर्णरेखा**
* उद्गम– **मेहद झील** (धार जिला, मध्यप्रदेश) **अमरोरू की पहाड़ियों** से।
* माही की **कुल लम्बाई**– 576 कि.मी.,
* राजस्थान में लम्बाई– 171 कि.मी.
* प्रवेश– राजस्थान में प्रवेश **खांदू गाँव** (बाँसवाड़ा) से
* प्रवाह वाले जिले– **बाँसवाड़ा, प्रतापगढ़, डूँगरपुर,**
* समापन– **खम्भात की खाड़ी** (अरब सागर) में।

विशेषताएँ–

* माही नदी **उलटे 'यू'** के आकार में बहती है।
* यह राजस्थान की **एकमात्र नदी है,** जिसका **प्रवेश एवं निकास** दोनों ही दक्षिण दिशा से होता है।

✦ नदियों किनारे बसे शहर -

नदी	शहर	नदी	शहर
घग्घर	हनुमानगढ़, सूरतगढ़, अनुपगढ़	जवाई	श्योगंज (पाली) सुमेरपुर, एरिनपुरा
चम्बल	रावतभाटा, भैंसरोड़गढ, कोटा, केशोरायपाटन,	बेड़च	उदयपुर, चित्तौड़गढ़
बनास	नाथद्वारा, रेलमगरा, मातृकुंडिया, बीसलपुर, टोंक,	खारी	आसीन्द, विजयनगर, गुलाबपुरा
लूनी	बालोतरा, बिलाड़ा, गोविन्दगढ़	कालीसिन्ध	झालावाड़,
बांडी	आउवा, पाली	माही	पीपलखूंट, बेणेश्वर, गलियाकोट
सूकड़ी	रानी (पाली)	मघाई नदी	रणकपुर
मिठड़ी	बाली, फालना (पाली)	रूपनगढ़	सलेमाबाद (अजमेर)
जोजड़ी	पीपाड़ सिटी(जोधपुर ग्रामीण)	कालीसिल	कैला देवी
हिरण नदी	कालिन्जरा(बांसवाड़ा)	कोठारी	भीलवाड़ा,
पश्चिमी बनास	आबू रोड, चन्द्रावती, डीसा	चन्द्रभागा	आमेट (राजसमंद)
सोम नदी	देवसोमनाथ	पार्वती	किशनगंज (बारां)
पीपलाज	पंचपहाड़(झालावाड़)	चन्द्रभागा	झालरापाटन

प्रतियोगी परीक्षाओं में आये हुए महत्वपूर्ण प्रश्न

1. राजस्थान में स्थित 'वागड़' ऊबड़-खाबड़ सतह एवं विच्छेदित स्थलाकृति किस नदी कार्य के द्वारा निर्मित है?
बनास/लूनी/चंबल/माही
माही (वरिष्ठ अध्यापक-2023)

2. वह कौन सी नदी है जो अरावली के पश्चिमी ढालों से निकल कर, सिरोही के कुछ क्षेत्रों से बहते हुए कच्छ की खाड़ी में लीन हो जाती है?
माही/पश्चिम बनास/साबरमती/मोरेन
पश्चिम बनास (वरिष्ठ अध्यापक- 2023)

3. वाकल तथा सेई धारा के मिलने से जो नदी बनती है, वो है-
माही नदी/साबरमती नदी/पार्वती नदी/बनास नदी
साबरमती नदी (FSO- 2023)

4. निम्नांकित कथनों पर विचार कीजिए तथा नीचे दिए गए कूटों से सही कथन चुनिए-
(a) लूनी नदी क्रम का अधिकांश अपवाह क्षेत्र राजस्थान में है।
(b) खारी नदी बनास नदी की सहायक नदी है।
(c) बनास नदी खमनौर की पहाड़ियों से निकलती है।
(a), (b) तथा (c) सही हैं।
(वरिष्ठ अध्यापक ग्रुप- A (संस्कृत शिक्षा) 2023)

5. राजस्थान की निम्नलिखित नदियों को उनकी सहायक नदियों से सुमेलित कीजिए-

(i) चम्बल	(a) खारी, बांडी
(ii) माही	(b) सिवान, परवन
(iii) साबरमती	(c) अनास, चाप
(vi) बनास	(d) वाकल, हथमति

(i)-(b), (ii)-(c), (iii)-(d), (iv)-(a)
(वरिष्ठ अध्यापक ग्रुप-B (संस्कृत शिक्षा) 2023)

☞ **नोट-** परवन नदी सीधे रूप से चम्बल की सहायक नदी नहीं है। परवन नदी अपना जल कालीसिंध में डालती है, उसके बाद कालीसिंध नदी चम्बल में मिल जाती है।

6. चम्बल नदी निम्नलिखित किस राज्य-समूह से होकर प्रवाहित होती है
मध्य प्रदेश, राजस्थान, उत्तर प्रदेश (CET 10+2- 2023)

7. गंभीरी तथा बेड़च नदियों के संगम पर कौनसा किला स्थित है?
चित्तौड़गढ़ किला (CET 10+2- 2023)

8. बीकानेर जिला से प्रवाहित होने वाली नदी का नाम है-
कोई नदी नहीं (CET 10+2- 2023)

9. निम्नांकित में से कौन-सी लूनी नदी की सहायक नदी अरावली पहाड़ियों से उद्गमित नहीं होता है?
जवाई नदी/सूकड़ी नदी/सागी नदी/जोजरी नदी
जोजरी नदी (CET 10+2- 2023)

10. जल उपलब्धता के आधार पर कौन सा नदी बेसिन राजस्थान में द्वितीय स्थान पर है?
बनास बेसिन/माही बेसिन/लूनी बेसिन/साबरमती बेसिन
बनास बेसिन (CET Graduation- 2023)

11. निम्नलिखित में से कौनसा (नदी-सम्बन्धित जिला) सुमेलित नहीं है?
डाई-अजमेर/बाणगंगा-जयपुर/
काकणी-जैसलमेर/वात्रक- बांसवाड़ा
वात्रक-बांसवाड़ा (CET Graduation- 2023)

12. निम्नलिखित नदियों में से कौन अध्यारोपित नदी का उदाहरण है?
घग्गर/माही/बनास/जाखम
बनास (CET Graduation- 2023)

13. बनास नदी का उद्गम है-
खमनौर पहाड़ियाँ (REET L- 1 2023)

14. निम्न में से कौन सी राजस्थान में आन्तरिक अपवाह की नदी नहीं है?
मसूरदी/जाखम/कांतली/साबी
जाखम (REET L- 2 (Math) 2023)

15. रूपारेल नदी का उद्गम होता है-
उदयनाथ (REET L- 2 (Hindi) 2023)

16. मदार बाँध..... नदी पर बनाया गया था।
बेड़च (REET L- 2 (Math) 2023)

17. वह नदी जो 'वन की आशा' के नाम से जानी जाती है-
बनास नदी (REET L- 2 (Hindi) 2023)
(वरिष्ठ अध्यापक ग्रुप-C-2023)

18. राजस्थान के.....जिले में बाणगंगा नदी बेसिन का सर्वाधिक प्रतिशत भाग स्थित है। अलवर/जयपुर/भरतपुर/दौसा
भरतपुर (REET L- 2 (English) 2023)

13 राजस्थान की झीलें व बावड़ियाँ

❖ **झील**– वे सभी जलराशियाँ जो स्थल पर बने किसी भूखण्ड या बेसिन को घेरे रहती हैं, **झील** कहलाती हैं। राजस्थान में **प्राकृतिक व कृत्रिम** दोनों प्रकार की झीलें पायी जाती हैं। राजस्थान में **वर्षा जल संग्रहण** की बहुत प्राचीन परम्परा रही है। ये झीलें पेयजल के साथ-साथ सिंचाई के साधन के रूप में भी काम आती रही है। राजस्थान में झीलों का निर्माण यहाँ के **शासकों** के साथ **सेठ-साहुकारों** द्वारा भी करवाया गया है।

☞ **झीलों के प्रकार–**

- **बॉलसन झील**– पहाड़ियों से घिरे **अभिकेन्द्रीय अपवाह** वाले विस्तृत समतल गर्त को **बॉलसन** कहते हैं। जैसे– **सांभर झील**
- **प्लाया झील**– मरुस्थलीय क्षेत्र में चौरस सतह और अनप्रवाहित द्रोणी वाली **खारे पानी की छोटी झीलों** को प्लाया कहते हैं। इसमें वर्षा का पानी जमा होता है, परन्तु जल्दी ही भाप बनकर उड़ जाता है। राजस्थान के **पश्चिमी** मरूस्थलीय प्रदेश में प्लाया झीलें पायी जाती हैं। उदाहरण– **डीडवाना झील**
- **विवर्तनिका झील**– पृथ्वी में होने वाली आन्तरिक हलचलों के कारण बनी झीलें। उदाहरण– **नक्की झील**, वूलर झील, कैस्पियन सागर।
- **कालाडेरा झील**– ज्वालामुखी से निकलने वाले लावा के प्रवाह से बनी झील। उदाहरण– **पुष्कर झील**, लोनार झील (बूलढाना, महाराष्ट्र)

☞ **नोट**– रेगिस्तान में **खारे पानी की झीलों** को **'प्लाया'** तथा तटीय प्रदेशों में स्थित खारे पानी की झीलों को **कयाल/ लेगून** कहते हैं।

- पानी की गुणवता के आधार पर राजस्थान की झीलों को दो भागों में विभाजित किया जाता है–
  1. **खारे पानी की झीलें**
  2. **मीठे पानी की झीलें**

खारे पानी की झीलें–

✦ राजस्थान में खारे पानी की झीलें सर्वाधिक पायी जाती हैं, जिसके **प्रमुख कारण** निम्न हैं–

1. राजस्थान के पश्चिमी भाग का **टेथिस महासागर का अवशेष** होना।
2. दक्षिण-पश्चिमी मानसूनी हवाएँ अपने साथ कच्छ की खाड़ी से **सोडियम क्लोरायड के कणों** को राजस्थान में लाती हैं।
3. झीलों के नीचे स्थित **नमकीन चट्टानों** से केशाकर्षण पद्धति से नमक ऊपर आना।

- राजस्थान में खारे पानी की झीलें मुख्यतः **उत्तर पश्चिमी मरुस्थलीय भाग** में पायी जाती हैं।
- खारे पानी की सर्वाधिक झीलें **डीडवाना-कुचामन** जिले में हैं।
- **अमील**– नमक से संबधित अधिकारी।
- **देवल**– नमक निर्माण में लगी निजी संस्थाओं को।

❖ सांभर झील– फूलेरा तहसील (जयपुर ग्रामीण)

* यह झील जयपुर से 70 कि.मी. दूर स्थित है। इसका विस्तार **जयपुर ग्रामीण, डीडवाना-कुचामन, अजमेर** तीनों जिलों में है।
* यह भारत की **सबसे प्राचीन** खारे पानी की झील है।
* यह भारत की खारे पानी की **दूसरी सबसे बड़ी** झील है। भारत की सबसे बड़ी खारे पानी की झील **चिलका (उड़ीसा)** है, जो एक तटीय झील (लैगून) है।
* यह भारत की **अन्तःप्रवाह की सबसे बड़ी झील** है।
* क्षेत्रफल की दृष्टि से यह राजस्थान की **सबसे बड़ी झील** है।
* अपवाह क्षेत्र– 500 वर्ग कि.मी., आकार– **लगभग आयताकार,**
* लम्बाई– 32 कि.मी., चौड़ाई– 3 से 15 कि.मी. तक।
* इस झील की स्थिति 27^0 से 29^0 उत्तरी अक्षांश व 74^0 से 75^0 पूर्वी देशान्तरों के मध्य है।
* झील में गिरने वाली नदियाँ **(4)** (जलस्रोत)– **मेन्था/मेंढ़ा** (उत्तर दिशा से), **रूपनगढ़** (दक्षिण दिशा से), **खारी** (डीडवाना-कुचामन की तरफ से) व **खंडेला** (सीकर की तरफ से)
* **सर्वाधिक नमक** बहाकर लाने वाली नदी– **मेन्था**।
* देश के कुल उत्पादन का लगभग **8.70% नमक** सांभर झील से प्राप्त होता है।
* यहाँ नमक उत्पादन का कार्य **सांभर साल्ट लिमिटेड** (केन्द्र सरकार) करती है। जो **हिन्दूस्तान साल्ट लिमिटेड** की सहायक कम्पनी है। इसमें **केन्द्र की 60%** व **राज्य की 40%** हिस्सेदारी है। इसकी स्थापना 30 सितम्बर, 1964 को की गई थी।
* **क्यार**– **वाष्पोत्सर्जन पद्धति** द्वारा क्यारी बनाकर तैयार किया गया नमक।
* सांभर झील को **अंग्रेजो** ने 1869 में जयपुर व जोधपुर रियासतों से **लीज पर** लिया था।
* सांभर में **साल्ट म्यूजियम** स्थित है, जो 1870 में अंग्रेजों द्वारा निर्मित है। यह राजस्थान का **एकमात्र** साल्ट म्यूजियम है।
* **बिजोलिया शिलालेख** (1170 ई.) के अनुसार सांभर झील का निर्माण **चौहान शासक वासुदेव** ने कराया था, भौगोलिक दृष्टि से सांभर झील मूलतः **प्राकृतिक झील** है।
* गुजरात का राज्य पक्षी **राजहंस** व विरह का प्रतीक **कुरजां** पक्षी (खींचन गाँव से) यहाँ विचरण करने आते है।
* जयपुर-फुलेरा-नागौर **रेलमार्ग** इस झील से गुजरता है।
* **देश की सबसे बड़ी पक्षी त्रासदी** – **नवम्बर, 2019** में सांभर झील में हजारों पक्षियों की **'एवियन बोटुलिज्म'** नामक बीमारी से मौत हो गई थी, इस कारण सांभर झील काफी चर्चाओं में रही थी।
* **सांभर लेक मैनेजमेंट प्रोजेक्ट** – सांभर झील के प्रबन्धन, विकास एवं संरक्षण के लिए इसे प्रारम्भ किया जाएगा।(बजट– 2022)

सीकर सम्भाग		
चेतनदास की बावड़ी	लोहार्गल, झुंझुनूं	
मेड़तणी की बावड़ी	झुंझुनूं	इसका निर्माण बखत कंवर ने अपने पति शार्दुल सिंह की स्मृति में करवाया था। ये झुँझुनूँ की सबसे पुरानी बावड़ी है।
तुलस्यानों की बावड़ी	झुंझुनूं	
खेतानों की बावड़ी	झुंझुनूं	इसका निर्माण गिरधारी खेतान ने 1780 ई. में करवाया था।
झालरा बावड़ी	सीकर	
सेठानी का जोहड़ा	चुरू	चुरू से रतनगढ़ जाने वाली सड़क के पास 1886 ई. मे सेठ भगवानदास बागला की पत्नी श्रीमती बृज कुंवरी ने अपने पति की स्मृति में बनवाया था। इसका वास्तविक नाम भगवान सागर है, परन्तु लोग इसे सेठानी का जोहड़ा कहते हैं। (स्रोत– सुजस पेज नं. 414)
पिथाणा जोहड़ा	चुरू	इसका प्राचीन नाम बीजाणा जोहड़ा है।
अजमेर सम्भाग		
भिकाजी की बावड़ी	अजमेर	
हाड़ी रानी की बावड़ी	टोडारायसिंह (केकड़ी)	यहीं पर पहेली फिल्म की शुटिंग हुई थी। यह बावड़ी बूँदी की राजकुमारी द्वारा निर्मित है, जिसका सोलंकी शासक टोडारायसिंह से विवाह हुआ था।
ख्वाजा बावड़ी	टोंक	
चमना बावड़ी	शाहपुरा	उम्मेद सिंह ने 1858 ई. में अपनी गणिका चमना के नाम से बनवाई थी।
बाई राज की बावड़ी	बनेड़ा (शाहपुरा)	
चौखी बावड़ी	बनेड़ा (शाहपुरा)	
फूल बावड़ी	छोटी खाटू (डीडवाना–कुचामन)	
पाली सम्भाग		
रानी बाब	नाडोल (पाली)	
दूध बावडी	माउन्ट आबू (सिरोही)	ये बावड़ी अधरदेवी की तलहटी में स्थित है, इसका पानी दूध जैसा सफेद है।
जोधपुर सम्भाग		
तापी बावड़ी	जोधपुर	इसका निर्माण तापोजी तेजावत ने 1675 ई. में करवाया। यह बावड़ी जोधपुर शहर की समस्त बावड़ियों में सबसे लम्बी है। (स्रोत– सुजस पेज नं. 417)
हरबोला की बावड़ी	जोधपुर	
सुगंदा की बावड़ी	जोधपुर	
एंजन बावड़ी,	जोधपुर	
चांद बावड़ी	जोधपुर	राव जोधा की रानी चाँद कुंवरी ने निर्माण करवाया था।
तूर जी का झालरा	जोधपुर	अभयसिंह की रानी तंवर (तूर कंवर) ने 1748 (विक्रम संवत 1805) में बनवाई थी। 29 दिसम्बर 2017 को इस बावड़ी पर 5 रुपये का डाकटिकट जारी हुआ है।
कांतन बावड़ी	औसिया (जोधपुर ग्रामीण)	
बाटाडू का कुआँ	बाटाडू गाँव (बायतु, बालोतरा)	रावल गुलाब सिंह द्वारा निर्मित संगमरमर का कलात्मक कुआँ है। यह (रेगिस्तान का जलमहल कहलाता है)
पग बावड़ी	मोकलसर (बालोतरा)	
पर्चा बावड़ी	रूणेचा (जैसलमेर)	
बीकानेर सम्भाग		
चौतीना का कुंआ (अनूपसागर)	बीकानेर	

14 प्रमुख बाँध, सिंचाई परियोजनाएँ व जल संसाधन योजनाएँ

- जल ही जीवन है सम्पूर्ण प्रगति का आधार है। राजस्थान राज्य के लिए जल का महत्व ओर भी बढ़ जाता है क्योंकि राजस्थान का आधे से अधिक भाग **शुष्क और अर्द्धशुष्क** है। इस प्रदेश में सूखा और अकाल सामान्य है। आज भी राजस्थान में कुछ क्षेत्र ऐसे हैं जहाँ अति सीमित जल उपलब्ध है।
- राजस्थान में लोक निर्माण विभाग से अलग कर 14 दिसम्बर, 1949 को **सिंचाई विभाग की स्थापना** की गई थी। अब सिंचाई विभाग का परिवर्तित नाम **'जल संसाधन विभाग'** है।
- स्वतंत्रता से पूर्व राजस्थान में केवल **4 लाख हैक्टेयर क्षेत्र** में सतही जल परियोजनाओं से सिंचाई सुविधा उपलब्ध थी, वर्तमान में **वर्ष 2021-22 तक** राजस्थान में वृहत्, मध्यम एवं लघु सिंचाई परियोजनाओं से **39.07 लाख हैक्टयेर क्षेत्र** में सिंचाई की सुविधा प्रदान की गई। वित्तीय वर्ष 2022-23 के दौरान दिसम्बर 2022 तक **710 हैक्टेयर** अतिरिक्त सिंचाई क्षमता का सृजन किया गया है। **(स्रोत- आर्थिक समीक्षा रिपोर्ट 2022-23)**
- वर्ष 2022-23 में राजस्थान में निम्न **8 वृहद् सिंचाई परियोजनाएँ** (नर्मदा नहर परियोजना, परवन सिंचाई परियोजना, धौलपुर लिफ्ट परियोजना, मरुक्षेत्र के **जल पुनर्गठन परियोजना** (RWSRPD), नौनेरा बाँध परियोजना, ऊपरी उच्च स्तरीय नहर, पीपलखूंट परियोजना व कालातीर लिफ्ट परियोजना) व **5 मध्यम सिंचाई परियोजनाएँ** (गरड़दा, तकली, गागरिन, ल्हासी, हथियादेह) तथा **41 लघु सिंचाई परियोजनाओं** का कार्य प्रगति पर है।
  (स्रोत- आर्थिक समीक्षा रिपोर्ट 2022-23)
- भारत में कुल कृषि योग्य भूमि 1808.88 लाख हैक्टेयर है। राजस्थान में **254.84 लाख हैक्टेयर क्षेत्र** कृषि योग्य भूमि है, जो देश की कुल कृषि योग्य भूमि का **14.09%** है।
  (स्रोत- Rajasthan Agriculture Statistics at a Glance 2021-2022)
- राजस्थान में **15 नदी बेसिन** चिन्हित किए गए हैं। इन्हें 58 उप बेसिनों तथा 541 सूक्ष्म जलग्रहण क्षेत्र (Micro Watershade Areas) में विभाजित किया गया हैं। **(स्रोत- राजस्थान का भूगोल (सक्सेना))**
- वर्तमान में राजस्थान में **15 नदी बेसिनों** में कुल उपलब्ध सतही जल की मात्रा लगभग **158.60 लाख एकड़ फीट** (15.86 MAF) है जो देश में कुल उपलब्ध जल संसाधन का **1.16%** हिस्सा ही है।
- राजस्थान को **145 लाख एकड़ फीट** पानी पड़ौसी राज्यों से आवंटित होता है।
- देश में प्रति व्यक्ति प्रति वर्ष पानी की उपलब्धता- 1700 घन मीटर
- राजस्थान में प्रति व्यक्ति प्रतिवर्ष पानी की उपलब्धता- 640 घन मीटर
- राजस्थान में देश के कुल भूजल संसाधन का 1.7% ही उपलब्ध है।
- देश के 98% **लवणता प्रभावित** एवं 89% **नाइट्रेट प्रभावित** गाँव व ढ़ाणियाँ राजस्थान में है। **(स्रोत- सूजस मई 2022)**

- राजस्थान का **सर्वाधिक सिंचित क्षेत्रफल** वाला जिला- **गंगानगर**
- राज्य का **न्यूनतम सिंचित क्षेत्रफल** वाला जिला- **राजसमंद**
- जिले के कृषित क्षेत्र के आधार पर सर्वाधिक सिंचित प्रतिशत वाला जिला- **गंगानगर**
- जिले के कृषित क्षेत्र के आधार पर न्यूनतम सिंचित प्रतिशत वाला जिला- **चुरू**
- राजस्थान का सर्वाधिक सिंचाई वाला हिस्सा- **पूर्वी भाग**

- राजस्थान में वर्ष 2020-21 में शुद्ध बोया गया क्षेत्रफल 179.47 लाख हैक्टेयर है तथा शुद्ध सिंचित क्षेत्रफल 87.78 लाख हैक्टेयर है। इस प्रकार कृषि के शुद्ध बोये गये क्षेत्रफल के लगभग **48.9%** हिस्से पर सिंचाई होती है। **स्रोत- Rajasthan Agriculture Statistics at a Glance 2021-22**
- राजस्थान में सिंचाई के प्रमुख जल स्रोत- **नदियाँ, झीलें, तालाब, कुएँ, नलकूप, नहरें।**

सिंचाई के नवीनतम आंकड़े

- कृषि विभाग की नवीनतम रिपोर्ट **Rajasthan Agriculture Statistics at a Glance 2021-22** में राजस्थान में सकल सिंचित क्षेत्र (**Gross Irrigated Area**) के निम्न आँकड़े दिये गये हैं।

- राजस्थान में सकल सिंचित क्षेत्र के **68.54% भाग** पर सिंचाई कुएँ व नलकूपों से होती है।
- **राजस्थान में कुओं से (Open Wells)- 19.81%**
- **राजस्थान में नलकूपों से (Tube Wells)- 48.73%**
- **राजस्थान में नहरों से (Canals)- 29.52%**
- **राजस्थान में तालाबों से (Tanks)- 0.41%**
- **अन्य साधनों से (Other Sources)- 1.53%**

- कुएँ व नलकूपों से **दोनों के संयुक्त आंकड़ों** के आधार पर **सर्वाधिक सिंचाई** वाला जिला- **जोधपुर**

झालावाड़	किशनसागर, भीमसागर, छापी, चंवली बाँध, पीपलाद, गागरीन बाँध (आहू), भीमनी, रेवा, सारोला, कालीखार, गावड़ी तालाब, बड़बेला तालाब
भरतपुर सम्भाग	
भरतपुर	चिकसाना बाँध, सेवर बाँध, सीकरी बाँध, लालपुर बाँध
धौलपुर	रामसागर बाँध, उर्मिला सागर
करौली	पाँचना बाँध, कालीसिल बाँध, चूलीदेह बाँध, जग्गर बाँध, शाही कुंड
गंगापुर सिटी	बिसन समन्द, मोरा सागर
सवाई माधोपुर	ढ़ील बाँध, मानसरोवर, गलाई सागर, मोरेल बाँध, सूरवाल
जयपुर सम्भाग	
जयपुर	पाटन टैंक, हिंगोनिया बाँध
जयपुर ग्रामीण	कानोता बांध, बूचारा बांध, खरड बांध, रामगढ़ बाँध,
दूदू	छापरवाड़ा बांध
अलवर	जयसागर, जयसमंद बाँध, मंगलसर, मानसरोवर
खैरथल-तिजारा	हरसौरा
दौसा	माधोसागर, कालाखो बाँध, सैंथल सागर, रेड़ियो बाँध, झील-मिली, गेटोलाव, चांदराना
सीकर सम्भाग	
झुंझुनू	मोदी लाखर
सीकर	राणासर
नीमकाथाना	अजीतसागर, पन्नालाल शाह का तालाब, (खेतड़ी) सरजूसागर बाँध (कोट बाँध), रायपुर पाटन बाँध, भूदोली
चुरू	सेठानी का जोहड़ा
अजमेर सम्भाग	
अजमेर	रामसर बाँध, गूंदोलाव तालाब (किशनगढ़), फूलसागर जालिया, लाखोलाव हनोतिया
ब्यावर	नारायण सागर बाँध
केकड़ी	बुद्ध सागर (टोडारायसिंह) मदन सरोवर धानवा,
शाहपुरा	उम्मेद सागर बाँध, नाहरसागर
टोंक	टोरड़ी सागर, बीसलपुर बाँध, मोती सागर, मासी बाँध, गलवानिया, चाँदसेन, शिवदानपुरा, दौलत सागर, ईसरदा बाँध
नागौर	हरसौर, पीर जी का नाका, प्रतापसागर, भांकरी बाँध
जोधपुर सम्भाग	
जोधपुर	सुरपुरा सागर, महिला बाग का झालरा, गुलाबसागर
जोधपुर ग्रामीण	जसवंत सागर (पिचियाक बाँध),
जैसलमेर	बुझ झील, अमरसागर, गजरूप सागर, मूल सागर
बालोतरा	मेली टेंक, नाकोड़ा बाँध
पाली सम्भाग	
जालौर	बांकली बाँध, बाण्डी सेणधरा, बीठन
सांचौर	पाँचाला बांध
पाली	जवाई बाँध, सरदार समंद, हेमावास बाँध (बांडी), हरिओम सागर, रामेलाव तालाब (सोजत), कण्टालिया, सादड़ी बाँध, खारदा बाँध, फुलाद
सिरोही	स्वरूपसागर, सुकली सेलवाड़ा, टोकरा बाँध, अणगौर बाँध (कृष्णावती नदी), ओरा टैंक, कालीबोर बाँध, भूला बाँध
बीकानेर सम्भाग	
बीकानेर	सूरसागर, कोडमदेसर तालाब, अनूपसागर (चौतीना कुआं)
हनुमानगढ़	तलवाड़ा, बड़ोपल

स्रोत- रिपोर्ट, जलसंसाधन विभाग राजस्थान

प्रमुख जलसंसाधन योजनाएँ

➢ **सिंचित क्षेत्र विकास कार्यक्रम** - यह कार्य भारत सरकार द्वारा 1974-75 में प्रारम्भ किया गया। **विश्व बैंक** की आर्थिक सहायता से संचालित था।

- अब इसे प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना के अन्तर्गत लागू किया जा रहा है।

➢ **जीवनधारा योजना**- 1988-89 में प्रारम्भ, इस योजना में बी.पी.एल. किसानों, छोटे व सीमान्त किसानों, अनुसूचित जाति व अनुसूचित जनजाति के किसानों को सिंचाई सुविधा उपलब्ध कराने के लिए बिना किसी खर्चे के **सिंचाई कुओं का निर्माण** किया जाता है। अब इस योजना को जवाहर रोजगार योजना के अन्तर्गत संचालित किया जा रहा है।

➢ **RIDF**- यह योजना 1995-96 में प्रारम्भ हुई। वर्तमान में 2022-23 में इसका **28वां चरण** चल रहा है। इस योजना में नाबार्ड द्वारा राज्य सरकार को सिंचाई परियोजनाओं हेतु वित्तीय पोषण दिया जा रहा है।

➢ **राजस्थान लघु सिंचाई सुधारीकरण परियोजना** - (RAJMIP राजमिप)

- **31 मार्च, 2005** से प्रारम्भ यह योजना JICA (जापान अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग एजेन्सी) द्वारा वित पोषित परियोजना है।

➢ **यूरोपीयन यूनियन राज्य सहभागिता कार्यक्रम** (EU-SPP)- राजस्थान के **11 चयनित जिलों** (बीकानेर, चुरू, जैसलमेर, जालौर, बाड़मेर, जोधपुर, नागौर, पाली, राजसमंद, झुंझुनूं व सीकर) के 82 ब्लॉक्स में लागू है। यह समझौता **11 अगस्त, 2006** को राज्य सरकार व यूरोपीयन यूनियन के मध्य हुआ। यह कार्यक्रम जनवरी 2007 से शुरू हुआ। राजस्थान के जल प्रबन्धन व जल क्षेत्र में सुधार, भूजल व सतही जल के संरक्षण हेतु यह योजना लागू थी।

➢ **राजस्थान ग्रामीण जलप्रदाय एवं फ्लोरोसिस निराकरण परियोजना- नागौर**, जापान सरकार की ऋण प्रदाय एजेन्सी **JICA** (जापान अन्तर्राष्ट्रीय को-ऑपरेशन एजेन्सी) की सहायता से **जनवरी 2013** में प्रारम्भ की गई। इसमें **नागौर जिले** के 968 ग्राम एवं 7 कस्बों को IGNP से पीने का पानी उपलब्ध कराया जा रहा है। परियोजना के क्रियान्वयन हेतु कार्यो को दस पैकेजों में विभक्त किया गया है। जिनमें पैकेज 10 का कार्य प्रगतिरत है।

➢ **सिंगापुर की कम्पनी से समझौता - अक्टुबर 2014**

- राजस्थान सरकार ने अक्टुबर 2014 में सिंगापुर की राष्ट्रीय कम्पनी **'सिंगापुर कॉरपोरेशन एंटरप्राईजेज'** के साथ पेयजल प्रबंधन एवं अपशिष्ट जल को पुनः चक्रित कर उपयोग में लेने की योजनाओं में तकनीकी सहयोग व अधिकारियों की दक्षता बढ़ाने के कार्य में सहयोग दिये जाने का एक समझौता किया है।

➢ **सेन्टर ऑफ एक्सीलेन्स की स्थापना (RaCEWaRM)**- राजस्थान सरकार व **दक्षिण आस्ट्रेलिया सरकार** के मध्य एक **सिस्टर स्टेट समझौता** 2015 में किया गया था। जिसके तहत राजस्थान में जल एवं पर्यावरण प्रबंधन की महती चुनौती के परिपेक्ष्य में **'राजस्थान सेन्टर ऑफ एक्सीलेन्स फॉर वाटर रिसोर्स मैनेजमेन्ट' (RaCEWaRM)** की स्थापना हेतु 2016 में एम.ओ.यू किया गया है।

15 राजस्थान की नहरें

इन्दिरा गाँधी नहर परियोजना

उपनाम– राजस्थान की मरुगंगा/रेगिस्तान की स्वर्ण रेखा /राजस्थान की जीवनरेखा।

- यह एशिया की **सबसे बड़ी मानव निर्मित नहर परियोजना** है।
- **मुख्य उद्देश्य–** रावी व व्यास नदियों के जल से राजस्थान को आवंटित 8.6 MAF पानी में से 7.59 MAF पानी का उपयोग कर मरुस्थलीय क्षेत्र में पेयजल व सिंचाई सुविधा उपलब्ध कराना है। इस परियोजना के उद्देश्यों में सूखा प्रभावित, पर्यावरण और वन सुधार, रोजगार सृजन और पुनर्वास भी सम्मिलित हैं।
- उद्गम– सतलज व्यास के संगम पर स्थित हरिके बैराज बाँध से (फिरोजपुर, पंजाब), 1952 में बना।
- राजस्थान में प्रवेश– खारा खेड़ा गाँव, टिब्बी तहसील (हनुमानगढ़) यह नहर राजस्थान में प्रवेश के समय **राजस्थान हरियाणा की सीमा पर** बनी है।
- IGNP की मुख्य नहर राजस्थान के **6 जिलों** क्रमशः **हनुमानगढ़, गंगानगर, अनूपगढ़, बीकानेर, फलौदी, जैसलमेर** से होकर गुजरती है।
- इस नहर की परिकल्पना की शुरुआत महाराजा गंगासिंह ने की तथा इस दिशा में पहला सार्थक कदम महाराजा सार्दुल सिंह ने उठाया।
- महाराजा सार्दुल सिह ने पंजाब के मेधावी इंजीनियर कंवरसेन को बीकानेर के मुख्य सिंचाई अभियंता के पद पर नियुक्त किया। उन्होंने राजस्थान नहर की रूपरेखा तैयार कर 'बीकानेर राज्य में पानी की आवश्यकता' नामक एक रिपोर्ट तैयार कर 29 अक्टूबर,1948 को भारत सरकार को भेजी।
- नहर का जन्मदाता व योजनाकार– कंवरसेन (बीकानेर रियासत का इंजीनियर)
- विश्व बैंक की टीम व केन्द्र सरकार की स्वीकृति के बाद, इस परियोजना का शिलान्यास 31 मार्च, 1958 को गोविन्द वल्लभ पंत **(केन्द्रीय गृहमंत्री)** द्वारा किया गया।
- अंतर्राज्यीय राजस्थान नहर बोर्ड– 19 दिसम्बर, 1958 को नहर परियोजना के निर्माण हेतु इस बोर्ड का गठन किया गया। इसका प्रथम अध्यक्ष कंवर सेन को बनाया गया।

- कंवर सेन– रायबहादुर कंवर सेन गुप्ता
- जन्म–1899 टोहाना (हिसार, हरियाणा)
- **पद्मभूषण से सम्मानित प्रथम व्यक्ति–** कंवर सेन, 1956

- नहर का उद्घाटन– 11 अक्टुबर, 1961 को उपराष्ट्रपति सर्वपल्ली डॉ. राधकृष्णन ने नोरंगदेसर वितरिका (रावतसर शाखा, हनुमानगढ़) में पानी छोड़कर इसका उद्घाटन किया।
- **नाम परिवर्तन**– 2 नवम्बर, 1984 को इसका नाम राजस्थान नहर से बदलकर इन्दिरा गाँधी नहर परियोजना कर दिया। (31 अक्टुबर, 1984 को इंदिरा गाँधी के निधन के बाद)
- इंदिरा गाँधी नहर की कुल लम्बाई– 649 कि.मी.।
  फीडर नहर– 204 कि.मी. (**हरिके बैराज से मसीतावाली हैड** तक),
  मुख्य नहर– 445 कि.मी. (मसीतावाली से मोहनगढ़ तक)
- **राजस्थान फीडर**– 204 कि.मी., जिसका 150 कि.मी. भाग पंजाब में, 19 कि.मी. भाग हरियाणा में तथा 35 कि.मी. भाग राजस्थान में है। फीडर– हरिके बैराज से मसीतावाली (हनुमानगढ़) तक है।
- जून 1964 में राजस्थान फीडर (204 किमी.) का निर्माण पूर्ण हुआ।

- फीडर का मुख्य कार्य– मुख्य नहर में जलापूर्ति करना है। किसी मुख्य नहर का ऐसा हिस्सा, जहाँ से पानी का कोई उपयोग नहीं किया जाता है उसे 'फीडर नहर' कहते हैं

- मुख्य नहर मसितावाली **(हनुमानगढ़) से** मोहनगढ़ (जैसलमेर) तक है।
- नहर का अंतिम छोर मोहनगढ़ (जैसलमेर) है।
- इसको मोहनगढ़ (जैसलमेर) से गडरा रोड़ (बाड़मेर) तक ले जाया जाना प्रस्तावित है, जिसकी लम्बाई 165 कि.मी. (मोहनगढ़ से गडरा रोड़) होगी। लेकिन मोहनगढ़ से लगभग 83 कि.मी. का निर्माण होने के बाद आगे का निर्माण राष्ट्रीय मरु उद्यान के कारण अधूरा पड़ा है इस प्रकार इंदिरा गाँधी नहर का पानी अभी तक **गडरा रोड़** तक नहीं गया है।
- नहर की वितरिकाओं की कुल लम्बाई– **9413 कि.मी.**।

(स्रोत– सुजस मई–2022)

☞ इस परियोजना का **निर्माण दो चरणों में** पूरा हुआ है।

➢ **प्रथम चरण**– हरिके बैराज से 393 कि.मी. नहर का निर्माण। जिसमें से पंजाब से मसीता वाली हैड तक 204 कि.मी. फीडर नहर व मसीतावाली से **सत्तासर गाँव (अनूपगढ़)** तक 189 कि.मी. मुख्य नहर का निर्माण किया गया। 3075 कि.मी. लम्बी वितरिकाओं का निर्माण किया गया।

- इस प्रथम चरण में सूरतगढ़, अनूपगढ़, पूगल शाखाओं का निर्माण व एकमात्र लिफ्ट नहर कंवरसेन लिफ्ट नहर (बीकानेर जलोत्थान नहर) का निर्माण हुआ, वर्ष 1992 में प्रथम चरण का कार्य पूर्ण हो गया था।

➢ **द्वितीय चरण**– सतासर**(अनूपगढ़)** से मोहनगढ़ **(जैसलमेर)** तक।

- इस चरण में 256 कि.मी. मुख्य नहर का निर्माण किया गया। दिसम्बर 1986 में मुख्य नहर का निर्माण पूर्ण हुआ। अब नहर का अंतिम स्थान **गडरा रोड़** (बाड़मेर) तक प्रस्तावित किया गया है (165 कि.मी. ओर बढ़ा दी)।
- द्वितीय चरण में 6 शाखाएँ व 6 लिफ्ट नहर का निर्माण किया गया है।

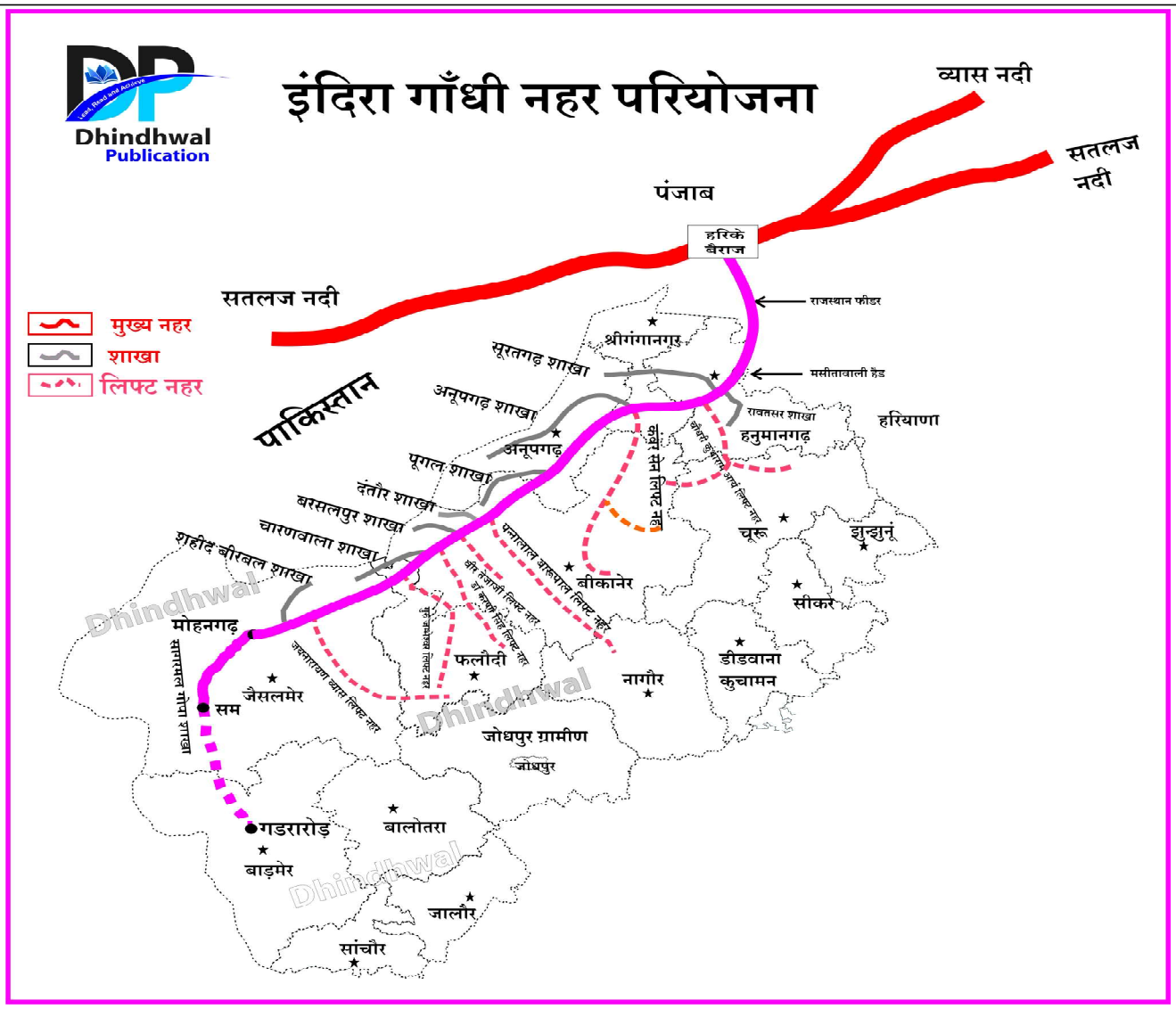

- 1 जनवरी, 1987 को तत्कालीन **वित्तमंत्री विश्वनाथ प्रताप सिंह** ने इसका उद्घाटन किया।
- इंदिरा गाँधी नहर के **दायीं तरफ** का क्षेत्र नहर के पानी के तल से नीचा है, इसी कारण इंदिरा गाँधी नहर के **दायीं तरफ शाखाओं** का निर्माण किया गया।

☞ इंदिरा गाँधी नहर की **9 शाखाएँ**–

1. **रावतसर शाखा**– हनुमानगढ़ (पहली शाखा), एकमात्र शाखा, जो नहर के बांयी तरफ निकाली गयी। शेष 8 शाखाएँ दांयी तरफ से निकाली गयी हैं।
2. **सूरतगढ़ शाखा** – **हनुमानगढ़, गंगानगर, अनूपगढ़** (लघुपन विद्युत गृह)
3. **अनूपगढ़ शाखा**– गंगानगर, अनूपगढ़ (लघुपन विद्युत गृह)
4. **पूगल शाखा**– अनूपगढ़, बीकानेर (लघुपन विद्युत गृह)
5. **दंतोर शाखा** – बीकानेर
6. **बरसलपुर शाखा** – बीकानेर (लघुपन विद्युत गृह)
7. **चारणवाला शाखा**– बीकानेर, फलौदी, जैसलमेर (लघुपन विद्युत गृह)
8. **शहीद बीरबल राम शाखा** – जैसलमेर
9. **सागरमल गोपा शाखा**– जैसलमेर, इसी शाखा के अंतिम छोर से **बरकतुल्ला खाँ लिफ्ट नहर** (वर्तमान नाम बाबा रामदेव लिफ्ट नहर) निकाली गई है जिसे गडरा रोड़ तक ले जाया जाना प्रस्तावित है, इस प्रकार IGNP का पानी **मोहनगढ़** (जैसलमेर) तक जाता है।

- नहर के अंतिम छोर मोहनगढ़ से दो बड़ी **उपशाखाएँ** निकाली गयी है– **लीलवा व दीघा** (जो लाठी सीरिज को जलापूर्ति करती है)

लिफ्ट नहरें– (सभी बांयी तरफ निकाली गई हैं) इंदिरा गाँधी नहर के **बांयी तरफ** का ईलाका नहर के तल से ऊँचा होने के कारण बांयी तरफ सिंचाई के लिए 7 **लिफ्ट नहरों** का निर्माण किया गया है।

- इंदिरा गाँधी नहर परियोजना से 13 **जिले लाभान्वित हो रहे है।** जिनमें से 7 **जिलों (श्रीगंगानगर, अनूपगढ़, हनुमानगढ़, चुरू, बीकानेर, फलौदी** व **जैसलमेर)** को सिंचाई व पेयजल सुविधा मिलती है जबकि **6 जिलों** (नागौर, जोधपुर, जोधपुर ग्रामीण, बाड़मेर, झुंझुनूं, सीकर) को पेयजल सुविधा मिलती है।
- इंदिरा गाँधी नहर से पश्चिमी राजस्थान के बड़े उद्योगों, सूरतगढ पॉवर प्लांट, बरसिंहसर पॉवर प्लांट, **पचपदरा रिफायनरी** को भी जलापूर्ति की जा रही है।

16 राजस्थान के उद्योग

राजस्थान का औद्योगिक परिदृश्य	
सर्वाधिक औद्योगिक इकाईयों वाला जिला	जयपुर
न्यूनतम औद्योगिक इकाईयों वाला जिला	जैसलमेर
राज्य में सर्वाधिक मध्यम व वृहद औद्योगिक इकाईयाँ	जिला- अलवर स्थान- भिवाड़ी
सर्वाधिक लघु औद्योगिक इकाईयों वाला जिला	जयपुर व अलवर
न्यूनतम वृहद औद्योगिक इकाईयों वाला जिला	करौली
सर्वाधिक पंजीकृत औद्योगिक इकाईयाँ	जयपुर, जोधपुर
सबसे कम पंजीकृत औद्योगिक इकाईयाँ	जैसलमेर, बारां
राजस्थान का सबसे बड़ा औद्योगिक नगर	जयपुर
राजस्थान का सबसे छोटा औद्योगिक नगर	करौली
सर्वाधिक बहुराष्ट्रीय औद्योगिक इकाईयाँ	भिवाड़ी (खैरथल-तिजारा)
शुन्य उद्योग जिले	जैसलमेर, बाड़मेर, चुरू, सिरोही

राज्य में उद्योगों में क्षेत्रवार योगदान		
विवरण	वर्ष 2021-22	वर्ष 2022-23
सकल राज्य मूल्य वर्धन (GSVA) में स्थिर (2011-12) कीमतों पर उद्योगों का योगदान	28.17%	27.76%
सकल राज्य मूल्य वर्धन (GSVA) में प्रचलित कीमतों पर उद्योगों का योगदान	27.45%	27.31%
स्रोत- आर्थिक समीक्षा रिपोर्ट 2022-23		

- **वर्ष 2022-23 में राजस्थान के सकल राज्य मूल्य वर्धन (GSVA)** में **स्थिर कीमतों** पर **उद्योग क्षेत्र** का योगदान-27.76%
- **वर्ष 2022-23 में राजस्थान के सकल राज्य मूल्य वर्धन (GSVA)** में **प्रचलित कीमतों** पर **उद्योग क्षेत्र** का योगदान-27.31%
- वर्ष 2022-23 में राजस्थान में **स्थिर कीमतों** (2011-12) पर सकल राज्य मूल्य वर्धन (GSVA) में **विनिर्माण क्षेत्र का योगदान**-14.25%
- वर्ष 2022-23 में राजस्थान में **प्रचलित कीमतों** पर **सकल राज्य मूल्य वर्धन (GSVA)** में **विनिर्माण क्षेत्र का योगदान**-11.27%
- **उद्योग क्षेत्र** के अंतर्गत खनन एवं उत्खनन, विनिर्माण, विद्युत, गैस, जलापूर्ति एवं अन्य उपयोगी सेवाएँ तथा निर्माण क्षेत्र शामिल है।

औद्योगिक क्षेत्रों के उपक्षेत्रों का **प्रचलित मूल्यों** पर वर्ष 2022-23 (अग्रिम अनुमान) में योगदान	
विनिर्माण	41.26%
निर्माण	32.76%
विद्युत, गैस, जलापूर्ति एवं अन्य उपयोगी सेवाएँ	13.38%
खनन एवं उत्खनन	12.60%

- औद्योगिक दृष्टि से राजस्थान की गणना **पिछड़े राज्यों में** होती है।
- राजस्थान में **31 मार्च, 2022** तक **239 वृहद् उद्योग** कार्यरत हैं।
- **सर्वाधिक वृहद् स्तरीय उद्योग- भिवाड़ी** (77)
  द्वितीय स्थान- **भीलवाड़ा** (21)
  तीसरा स्थान- अलवर (19)
  (**स्रोत-** प्रगति प्रतिवेदन 2022-23 उद्योग एवं वाणिज्य विभाग, राजस्थान)
- **सर्वाधिक मध्यम स्तरीय उद्योग- भिवाड़ी** में
  द्वितीय स्थान- **भीलवाड़ा**
  तीसरा स्थान- कोटा

☞ **नोट-** नवगठित जिलों के आँकड़े उद्योग एवं विभाग की आगामी प्रगति प्रतिवेदन में जारी होगें।

❖ **उद्यम स्थापित करने हेतु प्रक्रियाओं का सरलीकरण (ईज ऑफ डूइंग बिजनेस)-** राज्य सरकार द्वारा व्यवसायों और उद्योगों की स्थापना के लिए नियामक प्रक्रिया को युक्ति संगत बनाने के लिए निरंतर प्रयास किए गए हैं।

- उद्योग संवर्द्धन एवं आंतरिक व्यापार विभाग राज्यों के वार्षिक व्यापार सुधार कार्य योजना जारी करते हैं और राज्यों के लिए **ईज ऑफ डूइंग बिजनेस रैंकिंग** जारी करता है।
- **बिजनेस सुधार प्लान 2020- इसमें राजस्थान** को निष्पादन **एस्पायर श्रेणी** में सम्मिलित किया गया है।
- **बिजनेस सुधार प्लान 2022-** इसमें **कुल** 352 सुधार बिन्दु सम्मिलित हैं, जिन्हें दो भागों में विभक्त किया गया है-
- **एक्शन प्लान ए** में 261 व्यवसाय केन्द्रित सुधार बिन्दु शामिल है।
- **एक्शन प्लान बी** में 91 नागरिक केन्द्रित सुधार बिन्दु सम्मिलित हैं।
  (स्रोत- आर्थिक समीक्षा रिपोर्ट 2022-23)

❖ निर्यात-

- राजस्थान में वित्तीय वर्ष 2021-22 में कुल निर्यात **71,999.72 करोड़ रु.** का हुआ है।
- राजस्थान से सर्वाधिक निर्यात होने वाली **शीर्ष वस्तुएँ** निम्न है-

क्र.सं.	वर्ष 2021-22 में राजस्थान से निर्यात	
1.	इंजीनियरिंग वस्तुएँ	16.62%
2.	कपड़ा	12.85%
3.	धातुएँ	11.44%
4.	हस्तशिल्प	10.88%
5.	रासायनिक एवं सम्बद्ध	9.72%
6.	रत्न एवं आभूषण	9.46%
7.	कृषि	7.19%
8.	आयामी पत्थर	6.22%
9.	अन्य	15.62%
कुल		100%

- सिकन्दरा (दौसा) में ग्रोथ पोल का विकास।

→ **नोड-9 अजमेर-किशनगढ़ इन्वेस्टमेंट रीजन**

- किशनगढ़ (अजमेर) में **टैक्सटाईल पार्क** का निर्माण होगा।

→ **नोड-10 राजसमंद-भीलवाड़ा औद्योगिक क्षेत्र**

- उदयपुर एयरपोर्ट का विकास किया जाएगा।

→ **नोड-11 जोधपुर-पाली-मारवाड़ औद्योगिक क्षेत्र**

- इस औद्योगिक क्षेत्र को 12 अक्टूबर 2020 को विशेष निवेश क्षेत्र के रूप में अधिसूचित किया गया है। इसमें लगभग 154 वर्ग किमी. क्षेत्र और पाली जिले रोहट तहसील के 9 गाँव सम्मिलित है। इस औद्योगिक क्षेत्र की जिम्मेदारी **रीको** को सौंपी गई है।
- जोधपुर हवाई अड्डे का आधुनिकीकरण
- पाली में एग्रोफूड प्रोसेसिंग जोन
- पाली में टैक्सटाईल पार्क का निर्माण
- मारवाड़-जंक्शन (पाली) में **ICD** इनलैण्ड कन्टेनर डिपो का निर्माण
- जोधपुर-पाली को जोड़ने के लिए रेपिड ट्रांजिट सिस्टम

→ इसके **प्रथम चरण** में **खुशखेड़ा-भिवाड़ी-नीमराणा इन्वेस्टमेंट रीजन** व **जोधपुर-पाली-मारवाड़ औद्योगिक क्षेत्र** को विकसित किया जा रहा है। इन दोनों नोड्स के विकास हेतु एक संयुक्त स्पेशल पर्पज व्हीकल कम्पनी **'राजस्थान इंडस्ट्रीयल डवलपमेंट कॉर्पोरेशन'** की स्थापना **15 मार्च, 2022** को की गई।

☞ **नोट-** इस कॉरिडोर की बिजली की जरूरतों की पूर्ति के लिए दिल्ली मुम्बई इंडस्ट्रियल कॉरिडोर द्वारा राजस्थान में **दो विद्युत संयंत्र** स्थापित किये जायेंगे।
1. 1000 मेगावाट का गैस आधारित प्लांट- **बांसवाड़ा** में
2. 50 मेगावाट का सौर ऊर्जा प्लांट- **पश्चिमी राजस्थान** में।

प्रतियोगी परीक्षाओं में आये हुए महत्त्वपूर्ण प्रश्न

1. कौनसा सुमेलित नहीं है? **(उद्योग-स्थिति)**
हाई टेक ग्लास - धौलपुर/सफेद सीमेण्ट - निम्बाहेड़ा/टायर-ट्यूब - अलवर/पॉलिमर - शाहपुरा
सफेद सीमेण्ट-निम्बाहेड़ा **(वरिष्ठ अध्यापक ग्रुप-A 2023)**

2. 26 जून,2023 को वाणिज्य भवन, नई दिल्ली में आयोजित क्रेता विक्रेता गौरव सम्मान समारोह में केन्द्र सरकार द्वारा राजस्थान के उद्योग एवं वाणिज्य विभाग को कौन सा पुरस्कार दिया है?
जैम एक्सीलेंस **(वरिष्ठ अध्यापक ग्रुप-B 2023)**

3. राजस्थान में पहला सीमेंट उद्योग 1916 में ..... में स्थापित किया गया था। गोटन/खारिया खंगार/लाखेरी/पैंटाल
लाखेरी **(E.O./R.O. 2023)**

4. निम्नलिखित में से किस वर्ष में राजस्थान की पहली कपड़ा मील-कृष्णा मील, ब्यावर में स्थापित की गई थी? 1998/1857/1947/1889
1889 **(E.O./R.O. 2023)**

5. भीलवाड़ा को राजस्थान के ..... के रूप में जाना जाता है।
मैनचेस्टर **(E.O./R.O. 2023)**

6. ए सी सी लिमिटेड की एक सीमेन्ट इकाई है-
लाखेरी में **(वरिष्ठ अध्यापक (SST)(संस्कृत शिक्षा) 2023)**

7. राजस्थान का कौन-सा शहर भारत में सबसे बड़े ऊन के बाजार के रूप में जाना जाता है? **बीकानेर** **(CET 10+2- 2023)**

8. राजस्थान में फुटवीयर डिजाइन एण्ड डेवलपमेन्ट इन्स्टिट्यूट कहाँ पर स्थापित किया गया है?
जोधपुर **(CET 10+2- 2023)**

9. निम्न में से कौन-सा पुरस्कार राजस्थान में एम.एस.एम.ई. नीति, 2022 के अन्तर्गत सर्वोत्तम कार्य करने वाले उपक्रमों हेतु प्रस्तावित नहीं है?
उत्पाद गुणवत्ता सुधार/महिला उद्यमी-अनुसूचित जनजाति-अनुसूचित जाति के उद्यमी/असाधारण प्रक्रिया/उत्पाद का नवाचार
उत्पाद गुणवत्ता सुधार **(CET 10+2- 2023)**

10. अशोक लीलेंड फेक्ट्री राजस्थान में कहाँ स्थित है?
अलवर **(CET 10+2- 2023)**

11. राजस्थान पेट्रो-जोन कहाँ स्थित है?
बाड़मेर **(CET 10+2- 2023)**

☞ नोट- नवगठित जिलों के अनुसार राजस्थान पेट्रो-जोन वर्तमान में बालोतरा जिले में स्थित है।

12. निम्न में से कौन-सी संस्था राजस्थान के औद्योगिक विकास को गति देने वाली शीर्ष संस्था है?
रीको **(CET 10+2- 2023)**

13. राजस्थान राज्य हस्तकरघा विकास निगम किस वर्ष में संविधित हुआ था? **1984** **(CET 10+2- 2023)**

14. राजस्थान में स्थापित पहली सूती वस्त्र मिल का नाम है-
कृष्णा मिल **(CET 10+2- 2023)**

15. राजस्थान में सूक्ष्म, लघु व मध्यम उपक्रम नीति, 2022 के अनुसार कितने नये औद्योगिक क्षेत्र स्थापित करने का प्रावधान किया गया था?
147 **(CET 10+2- 2023)**

16. बड़ली औद्योगिक क्षेत्र की स्थापना निम्नलिखित में से किस जिले में की जाएगी? **अजमेर** **(CET 10+2- 2023)**

☞ नोट- नवगठित जिलों के अनुसार बड़ली औद्योगिक क्षेत्र वर्तमान में केकड़ी जिले में स्थित है।

17. महाराजा श्री उम्मेद मिल्स राजस्थान में कहाँ स्थित है?
पाली **(CET 10+2- 2023)**

18. 'मुख्यमंत्री लघु उद्योग प्रोत्साहन योजना' का उद्देश्य है-
आर्थिक असमानताओं को कम करना/उपक्रमों की स्थापना करना/नये रोजगार अवसर उपलब्ध करवाना/उपक्रमों की स्थापना करना एवं नये रोजगार अवसर उपलब्ध करवाना दोनों
उपक्रमों की स्थापना करना एवं नये रोजगार अवसर उपलब्ध करवाना दोनों **(CET 10+2- 2023)**

19. रीको ने महिन्द्रा ग्रूप के सहयोग से राजस्थान में कहाँ बहुउत्पाद सेज स्थापित किया है? **जयपुर** **(CET 10+2- 2023)**

20. राजस्थान के किस जिले में हैवेल्स इंडिया की फैक्ट्री स्थित है?
अलवर **(CET 10+2- 2023)**

17 राजस्थान के खनिज संसाधन

- खनिज सम्पदा की दृष्टि से राजस्थान की गिनती देश के सम्पन्न राज्यों में होती है। देश के खनिज मानचित्र पर राजस्थान महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है। राजस्थान में खनिजों में काफी विविधता पायी जाती है इसलिए राजस्थान को **'खनिजों का अजायबघर/खनिजों का संग्रहालय'** कहते हैं।
- राजस्थान में सर्वाधिक खनिज **अरावली पर्वतमाला** व **पठारी क्षेत्र** से निकाले जाते हैं।
- राजस्थान में **81 प्रकार** के खनिज पाये जाते हैं, जिनमें से वर्तमान में **58 खनिजों का उत्खनन** हो रहा है।

(स्रोत- आर्थिक समीक्षा रिपोर्ट 2022-23)

- राजस्थान में वर्तमान में खनन पट्टों का आवंटन **ई-निलामी बोली प्रक्रिया** द्वारा किया जा रहा है। राजस्थान में प्रधान खनिजों के **169 खनन पट्टे** व अप्रधान खनिजों के **15,759 खनन पट्टे** व **17,462 खदान लाईसेन्स** जारी किए गए हैं।

(स्रोत- आर्थिक समीक्षा रिपोर्ट 2022-23)

- **प्रधान खनिज व अप्रधान खनिज क्या है?-**

✦ **प्रधान खनिज-** 1960 के खनिज रियायती नियम **(MCR)** के अन्तर्गत आने वाले खनिज प्रधान खनिज माने जाते हैं, प्रधान खनिज के लिए रॉयल्टी व नियमों का निर्धारण केन्द्र सरकार द्वारा किया जाता है।

✦ **अप्रधान खनिज-** अप्रधान खनिज रियायती नियम **(MMCR)** के अन्तर्गत आने वाले खनिज अप्रधान खनिज माने जाते हैं, इन खनिजों के लिए आवंटन व रॉयल्टी के नियम राज्य सरकार निर्धारित करती है। केन्द्र सरकार ने **2015 में जिप्सम**, बेराइटस, डोलोमाइट, क्वार्टज, फेल्सपार, माइका, चाईना क्ले सहित **31 प्रधान** खनिजों को अप्रधान खनिजों की सूची में डाला है, अब इन खनिजों के आवंटन व रॉयल्टी के नियम राज्य सरकार निर्धारित करती है।

✦ **खान एवं भू-विज्ञान विभाग-** राजस्थान में खनिजों की खोज एवं उनके व्यवस्थित दोहन के लिए खान एवं भू-विज्ञान विभाग की स्थापना 1949 में की गई, जिसका **मुख्यालय उदयपुर** में है तथा पंजीकृत **कार्यालय जयपुर** में है।

✦ **खान एवं भू-विज्ञान निदेशालय-** उदयपुर

✦ **राजस्थान राज्य खनिज अन्वेषण न्यास- जयपुर**

✦ **राजस्थान राज्य खनिज विकास निगम (RSMDC)-** 27 सितम्बर, 1979 को स्थापना। 20 फरवरी, 2003 को **RSMDC** का विलय **'राजस्थान राज्य खान व खनिज लिमिटेड' (RSMML)** में कर दिया गया।

✦ **'राजस्थान राज्य खान व खनिज लिमिटेड' (RSMML)-** 30 अक्टुबर, 1974 को इसकी स्थापना उदयपुर में की गई। पहले इसे 1947 में **'बीकानेर जिप्सम लिमिटेड'** के नाम से स्थापित की गई थी, जिसे कम्पनी अधिनियम के तहत 1974 में **'राजस्थान राज्य खान व खनिज लिमिटेड'** के नाम से स्थापना की गई। जिसका **मुख्यालय उदयपुर** में है तथा पंजीकृत **कार्यालय जयपुर** में है।

- राजस्थान खान एवं खनिज लिमिटेड द्वारा स्टील ऑथोरिटी ऑफ इण्डिया के साथ **हल्की सिलिका लाइमस्टोन** आपूर्ति के लिए दीर्घकालीन अनुबंध किए गए हैं।
- **RSMML (Rajasthan State Mines and Minerals)** का मुख्य कार्य राज्य में किफायती तकनीकों का उपयोग करते हुए खनिज सम्पदा का दोहन करना और खनिज आधारित परियोजनाओं को बढ़ावा देना है। कम्पनी की मुख्य गतिविधियों को **4 भागों** में बांटा गया है-

1. स्ट्रेटजिक बिजनेस यूनिट एवं प्रोफिट सेन्टर- **रॉक फॉस्फेट, झामरकोटड़ा (उदयपुर)**
2. स्ट्रेटजिक बिजनेस यूनिट एवं प्रोफिट सेन्टर-जिप्सम **(बीकानेर)**
3. स्ट्रेटजिक बिजनेस यूनिट एवं प्रोफिट सेन्टर-लाईमस्टोन **(जोधपुर)**
4. स्ट्रेटजिक बिजनेस यूनिट एवं प्रोफिट सेन्टर- लिग्नाईट **(जयपुर)**

(स्रोत- आर्थिक समीक्षा रिपोर्ट 2022-23)

❖ **प्रमुख तथ्य-**

✦ **अप्रधान/गौण खनिजों के उत्पादन** में राजस्थान का स्थान- **प्रथम**।

✦ भारत में **संसूचित खानों की दृष्टि से** राजस्थान का स्थान- **8वाँ**
प्रथम स्थान- **मध्यप्रदेश**

✦ खनिजों की **किस्मों की दृष्टि से** राजस्थान का स्थान- **प्रथम**

✦ **खनिज भण्डारों (उपलब्धता) के आधार पर** राजस्थान का स्थान- **द्वितीय** (प्रथम- **झारखंड**)
(स्रोत- आर्थिक समीक्षा रिपोर्ट 2022-23)

✦ वर्ष 2021-22 के आंकड़ों (परमाणु व ईंधन खनिजों को छोड़कर) के अनुसार **खनिज उत्पादन मूल्य** की दृष्टि से राजस्थान का स्थान- **तीसरा**
ओडिशा (44.11%), **छतीसगढ़** (17.34%), **राजस्थान** (14.10%)

✦ **अलौह धातु के उत्पादन** में मूल्य की दृष्टि से राज. का स्थान- **प्रथम**

✦ **लौह धातु के उत्पादन में मूल्य की दृष्टि से** राज. का स्थान- **चौथा**।

✦ वर्ष 2022-23 में राजस्थान में स्थिर कीमतों (2011-12) पर **सकल राज्य मूल्य वर्धन (GSVA)** में **खनन क्षेत्र का योगदान**-3.23%

✦ वर्ष 2022-23 में राजस्थान में प्रचलित कीमतों पर **सकल राज्य मूल्य वर्धन (GSVA)** में **खनन क्षेत्र का योगदान**-3.44%

(स्रोत- आर्थिक समीक्षा रिपोर्ट 2022-23)

☞ विभिन्न खनिजों के उत्पादन में **राजस्थान की स्थिति-**

✦ राजस्थान **सीसा-जस्ता अयस्क** (100%), **सेलेनाईट** (100%), **वुलेस्टोनाईट**(100%) **जास्पर**(100%),**तामड़ा/गारनेट** (100%) का एकमात्र उत्पादक राज्य है।

'**राष्ट्रीय खनिज विकास पुरस्कार**' में राजस्थान के खान व गोपालन मंत्री प्रमोद जैन भाया को यह पुरस्कार प्रदान किया गया है।

- यह पुरस्कार राजस्थान को अप्रधान खनिज के लिए राष्ट्रीय स्तर पर **द्वितीय स्थान** प्राप्त करने पर पुरस्कृत किया गया।
- यह पहला मौका है जब माइन्स क्षेत्र में राजस्थान को राष्ट्रीय स्तर पर सम्मानित किया है।

→ **राष्ट्रीय सुरक्षा पुरस्कार (खनन)**– केन्द्रीय श्रम एवं रोजगार मंत्रालय द्वारा **8 मार्च, 2022** को प्रदत 'राष्ट्रीय सुरक्षा पुरस्कार' **खनन राजस्थान स्टेट माइंस एण्ड मिनरल्स लिमिटेड** को वर्ष 2019 व 2020 के लिए यह पुरस्कार प्रदान किया गया।

- **बाड़मेर लिग्नाइट माइनिंग लिमिटेड कंपनी** को यह पुरस्कार वर्ष 2017 व 2018 के लिए प्रदान किया गया।
- राष्ट्रीय स्तर का यह पुरस्कार **कोयला, धातु और तेल** की खदानों को **प्रतिवर्ष 2 श्रेणियों** में प्रदान किया जाता है।

प्रतियोगी परीक्षाओं में आये हुए महत्वपूर्ण प्रश्न

1. भुखिया–जगपुरा–देलवारा पट्टा जाना जाता है?
टंग्स्टेन के भंडार के लिए/सोने के भंडार के लिए/क्वार्ट्ज के भंडार के लिए/मैंगनीज के भंडार के लिए
सोने के भंडार के लिए **(F.S.O.–2023)**

2. पाली जोधपुर पट्टे–फलसुंड, मंगलोद क्षेत्र निम्नलिखित में से किस खनिज के खनन के लिए प्रसिद्ध है? हीरा/जिप्सम/पेट्रोलियम/ग्रेफाइट
जिप्सम **(E.O./R.O. 2023)**

3. निम्नलिखित में से कौनसा गारनेट का प्रमुख उत्पादक जिला है?
बाड़मेर/टोंक/जैसलमेर/बीकानेर
टोंक **(E.O./R.O. 2023)**

4. झुंझुनूं का खेतड़ी–सिघाना किस खनिज/धातु का उत्पादक है?
कोयला/ताँबा/अभ्रक/जिप्सम
ताँबा **(E.O./R.O. 2023)**

☞ **नोट**– खेतड़ी–सिघाना वर्तमान में **नीमकाथाना जिले** में स्थित है।

5. बीकानेर के पलाना में ..... के निक्षेप हैं।
कोयला (लिग्नाइट)/यूरेनियम/ग्रेफाइट/लिथियम
कोयला (लिग्नाइट) **(E.O./R.O. 2023)**

6. राजस्थान के झुन्झुनूं जिले में 'खेतड़ी कॉपर कॉम्पलैक्स' भारत सरकार द्वारा किस वर्ष में स्थापित हुआ था?
1967 **(वरिष्ठ अध्यापक ग्रुप–A(संस्कृत शिक्षा)2023)**

☞ **नोट**– 'खेतड़ी कॉपर कॉम्पलैक्स' वर्तमान में **नीमकाथाना जिले** में स्थित है।

7. **निम्नलिखित में से कौन–सा एक सही सुमेलित नहीं है?**
लौह–अयस्क खनन क्षेत्र व जिला लोहारपुरा– अजमेर /चौमू–सामोद– जयपुर /सराय–पचलंगी– झुन्झुनू /नीमला– दौसा
लोहारपुरा– अजमेर **(CET 10+2- 2023)**

☞ **व्याख्या**– लोहारपुरा लौह अयस्क खनन क्षेत्र बूँदी जिले में है।

8. राजस्थान के किस जिले में जिप्सम का उत्पादन सर्वाधिक होता है?
कोटा/अजमेर/बाड़मेर/बीकानेर
बीकानेर **(CET 10+2- 2023)**

9. बाड़मेर जिले में अच्छी किस्म के लिग्नाइट के निक्षेप कहाँ मिले है?
मेड़ता/पलाना/कपूरड़ी/बरसिंहसर
कपूरड़ी **(CET 10+2- 2023)**

10. कौनसा (खनिज–खनन क्षेत्र) सही सुमेलित नहीं है?
रॉक फॉस्फेट– झामर–कोटड़ा/मैंगनीज– काला–खूंटा
तामड़ा– कालागुमान/लौह अयस्क– मोरीजा–डाबला
तामड़ा– कालागुमान **(CET Graduation-2023)**

11. राजस्थान के किस जिले में, जियो लॉजिकल सर्वे ऑफ इण्डिया 2021 के नवीनतम सर्वेक्षण में, सीमेंट ग्रेड लाइमस्टोन के विशाल भण्डार मिले हैं? **जैसलमेर** **(CET Graduation-2023)**

12. कौन सा (खनिज–खनन क्षेत्र) सुमेलित नहीं है?
डोलोमाइट– बाजला–काबरा/फ्लोराइट– मांडो की पाल
सीसा और जस्ता– रामपुरा–अगुचा/रॉक फॉस्फेट– बरोडिया
रॉक फॉस्फेट– बरोड़िया **(CET Graduation-2023)**

☞ **नोट**– बरोदिया (बूँदी) में सिलिका सैण्ड के भण्डार हैं।

13. राजस्थान में ऑयल रिफायनरी की स्थापना कहाँ की जा रही है?
बाड़मेर **(CET Graduation- 2023)**

☞ **नोट– ऑयल रिफायनरी** वर्तमान में **बालोतरा जिलें** में स्थित है।

14. कालागुमान और तीखी क्षेत्र ..... उत्पादन हेतु जाने जाते हैं।
पन्ना के **(CET Graduation- 2023)**

15. निम्नलिखित में से कौन सा जिला, राजस्थान का अधिकतम फैल्सपार उत्पादक है? **अजमेर** **(CET Graduation- 2023)**

16. टोंक जिले के जनकपुरा और कुशालपुरा खानें जिस खनिज के उत्पादन हेतु जानी जाती है, वह हैं–
गार्नेट **(CET Graduation- 2023)**

17. राजस्थान में 'टंगस्टन' का उत्पादन कहाँ होता है?
डेगाना **(CET Graduation- 2023)**

18. मानहेरा टीब्बा.....का प्रमुख खनन क्षेत्र है।
प्राकृतिक गैस **(REET L- 1 2023)**

19. अकवाली निक्षेप ..... के लिए प्रसिद्ध हैं।
ताँबा **(REET L-2 (SST)2023)**

20. बिलारा चूना पत्थर क्षेत्र ..... में स्थिर नहीं है।
जोधपुर/नागौर/बीकानेर/श्रीगंगानगर
श्रीगंगानगर **(REET L-2(SST) 2023)**

21. बाल्दा (सिरोही) ..... के लिए प्रमुख भण्डारण क्षेत्र है।
टंगस्टन **(REET L-2(SST) 2023)**

22. चन्देरिया ..... संयंत्र चित्तौड़गढ़ में स्थित है।
जस्ता **(REET L-2(SST) 2023)**

23. बांसवाड़ा जिले के सिवानिया, कालाखूंटा, घाटिया क्षेत्र..... खनिज के भण्डारों के लिये जाने जाते हैं।
मैंगनीज **(REET L-2(Hindi) 2023)**

18 राजस्थान में ऊर्जा संसाधन

- ऊर्जा या शक्ति हमारे दैनिक जीवन की आवश्यकता है, खाना पकाने से लेकर यातायात के साधन जैसे- रेल, बस, गाड़ी, मोटरसाईकिल, हवाई जहाज, सहित भौतिक संसाधन जैसे- पंखा, फ्रीज, रेडियो, टेलीविजन, उद्योग, पर्यटन, कृषि आदि सभी में ऊर्जा का महत्त्व है। वर्तमान युग **औद्योगिक युग** है, जिसका मुख्य आधार ही शक्ति संसाधन हैं।
- आज के औद्योगिक विकास के लिए और मनुष्य के अस्तित्व के लिए शक्ति के संसाधन अपरिहार्य हैं। स्वतंत्रता के पश्चात् देश में विद्युत उत्पादन एवं आपूर्ति को विनियमित करने हेतु **बिजली आपूर्ति अधिनियम 1948** पारित किया गया। इसके पश्चात् विभिन्न पंचवर्षीय योजनाओं में विद्युत उत्पादन बढ़ाने हेतु विभिन्न परियोजनाएँ स्थापित की गई।
- देश का प्रथम जल विद्युत गृह प्रारम्भ- **सिद्रापोंग**, **दार्जिलिंग** (पश्चिमी बंगाल) 1897 में।
  दूसरा जल विद्युत गृह- **शिवसमुद्र** (कर्नाटक) 1902 में कावेरी नदी पर।
- 1948 में देश में **विद्युत आपूर्ति अधिनियम 1948** लागू किया गया।
- विद्युत/ऊर्जा को **समवर्ती सूची** में शामिल किया गया है।
- स्वतंत्रता प्राप्ति के समय राजस्थान में **15 विद्युत गृह** थे जिनकी उत्पादन क्षमता 13.27 MW थी। उस समय 26 शहरों व 16 गाँवों को ही विद्युत प्राप्त होती थी।
- **1 जुलाई, 1957** को **राजस्थान राज्य विद्युत मंडल** (RSEB) की स्थापना की गई।

❖ **राजस्थान विद्युत नियामक आयोग** का गठन- 2 जनवरी, 2000
प्रथम अध्यक्ष- **अरुण कुमार।**

- कार्य- राजस्थान में विद्युत उत्पादन, प्रसारण एवं वितरण कंपनियों को लाइसेन्स प्रदान करने एवं राज्य में विद्युत की दरें निर्धारित करने का कार्य राजस्थान राज्य विद्युत नियामक आयोग द्वारा ही किया जाता है।

❖ **राजस्थान विद्युत क्षेत्र सुधार अधिनियम 1999**- राज्य के विद्युत तंत्र में सुधार करने के लिए 1 जून, 2000 को लागू किया गया।

- इसके तहत **राजस्थान राज्य विद्युत मंडल** (RSEB) का विभाजन कर राजस्थान में 19 जुलाई 2000 को **5 नई कम्पनियों** का गठन किया गया।

1. **राजस्थान राज्य विद्युत उत्पादन निगम लिमिटेड** - मुख्यालय **जयपुर।** राजस्थान सरकार की सभी **विद्युत उत्पादन परियोजनाओं पर नियंत्रण** रखने एवं राज्य में विद्युत उत्पादन के लिए उत्तरदायी।
2. **राजस्थान राज्य विद्युत प्रसारण निगम लिमिटेड** - मुख्यालय जयपुर। 765 के.वी., 400 के.वी., 220 के.वी. एवं 132 के.वी. विद्युत प्रसारण संबंधी लाइनों, सब स्टेशनों का निर्माण एवं परिचालन व संचालन का कार्य।
3. **जयपुर विद्युत वितरण निगम लिमिटेड**- जयपुर, 12 जिलों में विद्युत वितरण का कार्य करती है।
4. **अजमेर विद्युत वितरण निगम लिमिटेड**- अजमेर, 11 जिलों में विद्युत वितरण का कार्य करती है।
5. **जोधपुर विद्युत वितरण निगम लिमिटेड**- जोधपुर, 10 जिलों में विद्युत वितरण का कार्य करती है।

❖ **राजस्थान ऊर्जा विकास निगम लिमिटेड** (RUVNL) - 4 दिसम्बर, 2015 विद्युत के थोक क्रय, विक्रय संबंधी कार्यों के लिए गठित की गई है।

- राजस्थान **देश का पहला राज्य** है जिसने एक ही चरण में **विद्युत क्षेत्र सुधार कार्यक्रम** को अपनाया है। इसके लिए **विश्व बैंक** से 18 करोड़ डॉलर की ऋण सहायता प्राप्त हुई थी। अब यह समझौता समाप्त हो गया है।
- 11वीं व 12वीं **पंचवर्षीय योजना** में सर्वोच्च प्राथमिकता **ऊर्जा** को दी गई थी।

☞ **ऊर्जा के मुख्य स्त्रोत-**

1. **परम्परागत स्रोत** (Conventional Energy Resources)- **जल विद्युत, तापीय विद्युत** (कोयला, प्राकृतिक गैस, तेल) एवं **आणविक ऊर्जा** आदि।
2. **गैर परम्परागत स्रोत**(Non-Conventional Energy Resources)- सौर ऊर्जा, पवन ऊर्जा, ज्वारीय ऊर्जा, बायो गैस, बायो मास व भूतापीय ऊर्जा आदि।

❖ **अनवीकरणीय स्रोत**(Non-Renewable Energy Resources) - ऊर्जा के वे स्रोत जिनका एक बार उपयोग करने के बाद पुनः उपयोग में नहीं ले सकते और न ही पुनः उससे ऊर्जा प्राप्त की जा सके, **अनवीकरणीय स्रोत** कहलाते हैं। इनके भंडार सीमित होते हैं। जैसे- **तापीय विद्युत** (कोयला, प्राकृतिक गैस, तेल) एवं **आणविक (परमाणु) ऊर्जा** आदि।

❖ **नवीकरणीय स्रोत**(Renewable Energy Resources)- ऊर्जा के वे स्रोत जिनका एक बार उपयोग करने के बाद पुनः उपयोग में ले सकते हैं और पुनः उनसे ऊर्जा प्राप्त की जा सके, **नवीकरणीय स्रोत** कहलाते हैं। इनके भंडार असीमित होते हैं। जैसे- जल विद्युत, सौर ऊर्जा, पवन ऊर्जा, ज्वारीय ऊर्जा, बायो गैस, बायो मास व भूतापीय ऊर्जा आदि।

✦ **सौर ऊर्जा**- सूर्य के प्रकाश से प्राप्त ऊर्जा।
✦ **पवन ऊर्जा**- तीव्र गति से चलने वाली हवाओं से उत्पन्न ऊर्जा।
✦ **बायोगैस ऊर्जा**- जानवरों के मल-मुत्र से वायु रहित अवस्था में अपघटन से जीवाणुओं की क्रिया से प्राप्त एक ज्वलनशील गैस है। इसमें सर्वाधिक मात्रा मिथेन की होती है।
✦ **बायोमास ऊर्जा**- कचरा, धान की भूसी एवं सरसों की भूसी से प्राप्त ऊर्जा।
✦ **ज्वारीय तरंग ऊर्जा**- समुद्री तरंगों एवं ज्वारभाटे से उत्पन्न ऊर्जा।

19 पर्यटन

- पर्यटन उद्योग को **निर्धूम उद्योग** (धुँआ रहित) कहते हैं।
- यह उद्योग बिना पूंजी निवेश के करोड़ों रुपए की विदेशी मुद्रा का अर्जन करता है ऐसा माना जाता है कि भारत में आने वाला प्रत्येक पाँचवां पर्यटक राजस्थान भ्रमण के लिए अवश्य आता है। पर्यटन की दृष्टि से राजस्थान **अग्रणी राज्यों** में से एक है और भारत के सबसे आकर्षक स्थलों में से एक है।
- राजस्थान **इतिहास, सौन्दर्य एवं त्याग की त्रिवेणी** है। यहाँ पग-पग पर वीरों ने जन्म लिया है यहाँ पर कई वीरों ने अपनी मृत्यु के बाद भी अपने कर्म और यश को इस प्रकार से छोड़ा है कि विश्व के पर्यटन मानचित्र पर राजस्थान के कई स्थानों का नाम आता है इसी कारण राजस्थान को **सैलानियों का स्वर्ग** कहते है।

✦ पर्यटन का महत्त्व –

- विदेशी मुद्रा का अर्जन होता है।
- सांस्कृतिक एवं कलात्मक धरोहर का संरक्षण होता है।
- रोजगार उपलब्धि का साधन है।
- अंतर्राष्ट्रीय व्यापार में वृद्धि होती है।

- **विश्व पर्यटन दिवस** – 27 सितम्बर
- **विश्व पर्यटन दिवस 2022 की थीम** – **पर्यटन पर पुनर्विचार** (Rethinking Tourism)
- **भारतीय पर्यटन दिवस** – 25 जनवरी
- भारतीय पर्यटन दिवस 2022 की थीम– **आजादी का अमृत महोत्सव**
- भारतीय पर्यटन दिवस 2023 की थीम– **ग्रामीण और सामुदायिक केन्द्रित पर्यटन**

- पर्यटन को समर्पित बजट– **2002-03 (राजस्थान सरकार)**
- **UNO द्वारा वर्ष 2017** को **'अन्तर्राष्ट्रीय पर्यटन वर्ष'** के रूप में मनाया गया।
- भारत का पर्यटन स्लोगन– **अतिथि देवो भवः**।
- राजस्थान का **पर्यटन लोगो (पधारो म्हारे देश)** 1993 में लांच किया गया था, उसके बाद– 2008 में– **'कलरफुल राजस्थान'**
- 15 जनवरी, 2016 को– **'जाने क्या दिख जाये'**
- **30 जनवरी, 2019** को पुनः **'पधारो म्हारे देश'** को राजस्थान का पर्यटन लोगो बना दिया गया है।
- राजस्थान के पर्यटन विभाग का **पंचवाक्य**– **राजस्थानः भारत का अतुल्य राज्य।**
- **रंग श्री द्वीप** एवं **Island of Glory**– जयपुर को (डॉ. सी.वी. रमन ने कहा)
- **ट्रेवल्स इन वेस्टर्न इंडिया** (पश्चिमी भारत की यात्रा) नामक पुस्तक के लेखक– कर्नल टॉड।
- राजस्थान में पर्यटन को **उद्योग का दर्जा** देने की सिफारिश **मोहम्मद युनूस समिति** ने 1989 में की। इन्हीं की सिफारिश पर 4 मार्च, 1989 को पर्यटन को **निर्धूम उद्योग** का दर्जा दिया गया है। पर्यटन को उद्योग का दर्जा देने वाला **राजस्थान** देश का पहला राज्य है। राजस्थान में पर्यटन को जन उद्योग का दर्जा– **2004-05**।

✦ पर्यटन एवं हॉस्पिटैलिटी क्षेत्र को उद्योग का पूर्ण दर्जा–

- **प्रारम्भ– 18 मई, 2022** (स्रोत–DIPR Website)
- वर्षों से पर्यटन क्षेत्र को उद्योग का दर्जा देने की मांग की जा रही थी। **वर्ष 1989** से अब तक इस तरह की कई घोषणाएँ की गई हैं, लेकिन वास्तविक रूप से उद्योग का दर्जा नहीं मिल पाया था।
- राज्य सरकार द्वारा इस क्षेत्र को सम्बल प्रदान करने के दृष्टिकोण से **ट्यूरिज्म** एवं **हॉस्पिटैलिटी** सेक्टर को इंडस्ट्री सेक्टर के रूप में पूर्ण मान्यता दी गई है। अब इससे भविष्य में इस क्षेत्र पर इंडस्ट्रियल नोर्म्स के अनुसार ही गवर्नमेंट टैरिफ एवं लेवीज देय होंगे।

राजस्थान में पर्यटकों का आगमन

	विदेशी पर्यटक	देशी पर्यटक	कुल पर्यटक
वर्ष 2021	0.30 लाख	219.89 लाख	220.24 लाख
वर्ष 2022	3.97 लाख	1083.28 लाख	1087.25 लाख
वृद्धि/कमी	+1039.70 %	+ 392.65%	+393.68%

- राजस्थान में सर्वाधिक **विदेशी पर्यटकों** वाला जिला– **जयपुर** (1,59,210) द्वितीय स्थान पर– **उदयपुर** (54,399)
  तृतीय स्थान पर – **अजमेर** (40,092)
- राजस्थान में सर्वाधिक देशी पर्यटकों वाला जिला– **अजमेर।** (1,32,99,972) द्वितीय स्थान पर– **सीकर** (1,16,25,503)
  तृतीय स्थान पर– **सवाईमाधोपुर** (1,11,09,170)
- सर्वाधिक विदेशी पर्यटक किस देश से आये हैं– **अमेरिका** (64,891)
  द्वितीय स्थान पर– **फ्रांस** (34,999)
  तृतीय स्थान पर– **युनाईटेड किंगडम** (29,532)

  नोट– विदेशी पर्यटकों के आंकड़े **नवम्बर 2022** तक के हैं।
- सर्वाधिक राजस्व जुटाने वाला पर्यटन स्थल– **आमेर महल (जयपुर)**
- राजस्थान में सर्वाधिक विदेशी पर्यटकों के आगमन वाला महीना– **नवम्बर**
- राजस्थान में न्यूनतम विदेशी पर्यटकों के आगमन वाला महीना– **जनवरी**
- राजस्थान में सर्वाधिक देशी पर्यटकों के आगमन वाला महीना– **अगस्त**
- राजस्थान में न्यूनतम देशी पर्यटकों के आगमन वाला महीना– **जनवरी**

(स्रोत– प्रगति प्रतिवेदन पर्यटन विभाग राजस्थान 2022-23)

☞ **नोट–** अन्तर्राष्ट्रीय बिजनेस पत्रिका फोर्ब्स द्वारा जारी **वर्ष 2023** की घूमने के लिए **23 बेस्ट टूरिज्म लोकेशन** में भारत से **एकमात्र राज्य राजस्थान** को शामिल किया गया है।

बाँसवाड़ा संभाग-

- गोविन्द गुरु स्मृति उद्यान - **मानगढ़ धाम** (बांसवाड़ा)
- मानगढ़ धाम शहीद स्मारक - **मानगढ़ धाम** (बांसवाड़ा)
- जनजातीय स्वतंत्रता संग्राम संग्रहालय - **मानगढ़** (बांसवाड़ा)
- कालीबाई पैनोरमा- **माण्डवा खापरड़ा** गाँव (डूँगरपुर)
- मावजी महाराज पैनोरमा- **डूँगरपुर।**
- गोविन्द गुरु पैनोरमा- छाणी मगरी (डूँगरपुर) (प्रस्तावित)

कोटा संभाग-

- हाड़ौती पैनोरमा - बारां।
- संत पीपाजी पैनोरमा- **झालावाड़।**
- बूंदा मीणा पैनोरमा- **बूंदी** (प्रस्तावित)

भरतपुर संभाग-

- अजय यौद्धा महाराजा सूरजमल पैनोरमा - भरतपुर।
- राणा सांगा पैनोरमा- खानवा (भरतपुर)
- महाराजा सुरजमल पैनोरमा- **डीग** (प्रस्तावित)
- धौलपुर पैनोरमा - धौलपुर।
- हम्मीर पैनोरमा- सवाई माधोपुर (प्रस्तावित)

जयपुर संभाग-

- पड़ित दीनदयाल उपाध्याय स्मृति स्मारक- धानक्या गाँव, (जयपुर ग्रामीण) (पं. दीनदयाल का जन्म स्थान है)
- राव शेखा जी पैनोरमा - **अमरसर** (जयपुर ग्रामीण)
- गुरुगोविन्द सिंह पैनोरमा - **नरायणा (दूदू)**
- स्वतंत्रता सेनानियों का पैनोरमा- **जयपुर** (प्रस्तावित)
- संत सुंदरदास पैनोरमा- दौसा।
- वीर हसन खां पैनोरमा- अलवर।
- कृष्णभक्त अलीबक्श पैनोरमा- मुंडावर (खैरथल-तिजारा)
- राजा भृतहरि पैनोरमा- अलवर
- राजा हेमु का पैनोरमा- **मचाड़ी** (अलवर) (प्रस्तावित)

सीकर संभाग-

- वार मेमोरियल (शौर्य उद्यान)- दोरासर (झुंझुनूं)
- भक्त शिरोमणी करमेती बाई पैनोरमा- खण्डेला (सीकर)
- रावत कान्धल पैनोरमा- **साहवा (चुरू)**

अजमेर संभाग-

- नागरी दास का स्मारक- किशनगढ़ (अजमेर)
- निम्बार्काचार्य पैनोरमा- सलेमाबाद (अजमेर)
- श्री सैन महाराज पैनोरमा - पुष्कर (अजमेर)
- धन्ना भगत का पैनोरमा - धुआंकला (टोंक)
- देवनारायण पैनोरमा - जोधपुरिया (टोंक)
- रामस्नेही सम्प्रदाय के संतों का पैनोरमा- **शाहपुरा**
- केसरी सिंह बारहठ का पैनोरमा- शाहपुरा (प्रस्तावित)
- गुरु जंभेश्वर जी पैनोरमा- पीपासर (नागौर)
- वीर तेजाजी पैनोरमा- खरनाल (नागौर)
- वीर अमरसिंह राठौड़ का स्मारक - नागौर
- भक्त शिरोमणि मीरां बाई पैनोरमा- मेड़ता सिटी (नागौर)
- संत शिरोमणि लिखमीदास महाराज का स्मारक- अमरापुर (नागौर)

पाली संभाग

- सुगाली माता पैनोरमा- आउवा (पाली)
- स्वतंत्रता संग्राम पैनोरमा- आउवा (पाली)
- गिरी सुमेल महासंग्राम पैनोरमा - रायपुर (पाली)
- बीकाजी सोलंकी का पैनोरमा- **देसुरी** (पाली) (प्रस्तावित)
- महाकवि माघ व गणितज्ञ ब्रह्मगुप्त पैनोरमा- भीनमाल (जालौर)
- लीलूड़ी बड़ली शहीद स्मारक- **भूला गाँव** (सिरोही)

जोधपुर संभाग-

- पाबूजी पैनोरमा- कोलू (फलौदी)
- देवराजजी का पैनोरमा- **सेतरावा** (फलौदी) (प्रस्तावित)
- वीर दुर्गादास पैनोरमा- जोधपुर (प्रस्तावित)
- लोकदेवता रामदेव पैनोरमा - रामदेवरा (जैसलमेर)
- श्री खेमा बाबा पैनोरमा- बायतु (बालोतरा) **(निर्माणाधीन)** बाड़मेर में लोकदेवता की तरह पूजे जाते हैं।
- चालकनेची पैनोरमा- चालकना गाँव (बाड़मेर)
- संत ईशरदास पैनोरमा- **जालीपा** (बाड़मेर)
- सिद्ध श्री खेमा बाबा पैनोरमा- **बायतु** (बालोतरा) (निर्माणाधीन)
- महर्षि नवल पैनोरमा- **जोधपुर**

बीकानेर संभाग-

- भगत सुक्खा सिंह व मेहताब सिंह जी का पैनोरमा - गुरुद्वारा बुड्ढा जोहड़ (अनूपगढ़)
- गुरु गोविन्द सिंह जी का पैनोरमा- गुरुद्वारा बुड्ढा जोहड़ (अनूपगढ़)
- लोक देवता गोगाजी पैनोरमा - गोगामेड़ी (हनुमानगढ़)
- करणी माता का पैनोरमा - देशनोक (बीकानेर)
- जसनाथ जी पैनोरमा -कतरियासर (बीकानेर) (निर्माणाधीन)

- विश्व संग्रहालय दिवस- 18 **मई**
- विश्व विरासत दिवस- 18 **अप्रैल**
- विश्व कृषि पर्यटन दिवस- 16 **मई**

20 राजस्थान में परिवहन के साधन

➢ सामान्यतः परिवहन के 4 प्रकार होते हैं–

1. सड़क परिवहन 2. रेल परिवहन 3. वायु परिवहन 4. पाइप लाईन परिवहन

❖ सड़क परिवहन–

- क्षेत्रफल की दृष्टि से राजस्थान देश का **सबसे बड़ा राज्य** है, परन्तु परिवहन की दृष्टि से यह पिछड़ा हुआ है। पिछले कुछ सालों में राजस्थान में सड़कों व राष्ट्रीय राजमार्गो का पर्याप्त विकास हुआ है।
- विश्व में सड़क निर्माण की कला का सर्वप्रथम आविष्कार **जॉन मेंकाडम (स्कॉटलैण्ड)** ने किया था।
- **सड़क निर्माता**– अफगान बादशाह **शेरशाह सूरी** को सड़क निर्माता कहा जाता है, जिसने बंगाल के ढाका से वाराणसी, आगरा, दिल्ली होते हुये लाहौर और वहाँ से क्वेटा (पाकिस्तान) तक **ग्रांड ट्रंक रोड़** बनवाई।
- 1949 में राजस्थान में **सड़कों की कुल लम्बाई** 13,553 कि.मी. थी। उस समय सड़कों का घनत्व **3.96 कि.मी.** प्रति 100 वर्ग कि.मी. था। वर्तमान में वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार कुल 43264 गाँवों में से 31 मार्च, 2022 तक **39,139 गाँव (90.46%)** सड़कों से जुड़ चुके हैं, कुल 11341 ग्राम पंचायतों में से **11314 ग्राम पंचायत** सड़कों से जुड़ चुकी हैं।
  (स्रोत– वार्षिक प्रगति प्रतिवेदन, सार्वजनिक निर्माण विभाग, राजस्थान 2022-23 पेज नंबर– 25)

31 मार्च, 2022 तक राजस्थान में सड़कों की स्थिति–		
सड़क का प्रकार	31 मार्च 2021 तक लम्बाई	31 मार्च 2022 तक लम्बाई
राष्ट्रीय राजमार्ग	10618.09 किमी	10618.09 किमी
राज्य राजमार्ग	15544.95 किमी	17237.59 किमी
मुख्य जिला सड़कें	8964.55 किमी	13270.93 किमी
अन्य जिला सड़कें	54745.67 किमी	51224.52 किमी
ग्रामीण सड़कें	183086.02 किमी	186462.10 किमी
कुल योग	272959.28 किमी	278813.23 किमी
स्रोत– वार्षिक प्रगति प्रतिवेदन 2022-23, सार्वजनिक निर्माण विभाग, राजस्थान		

- राजस्थान में **सार्वजनिक निर्माण विभाग की सड़कों की सर्वाधिक लम्बाई वाला जिला** – बाड़मेर **(12493 कि.मी.)**
  जोधपुर (11256 कि.मी.)
- राजस्थान में **सार्वजनिक निर्माण विभाग की** सड़कों की **न्यूनतम लम्बाई वाला जिला** – धौलपुर **(2283.40 कि.मी.)**
  सिरोही (2294.62 कि.मी.)

  (स्रोत– वार्षिक प्रगति प्रतिवेदन, सार्वजनिक निर्माण विभाग, राजस्थान 2022-23, पेज नंबर– 80)
- राजस्थान में सड़कों से जुड़े **सर्वाधिक गाँव वाला जिला**– गंगानगर **(2209 गाँव)**, उदयपुर (2124 गाँव)
- राजस्थान में सड़कों से जुड़े **न्यूनतम गाँव वाला जिला**– सिरोही **(458 गाँव)**, जैसलमेर (582 गाँव)
- सड़कों से जुड़े सर्वाधिक **ग्राम पंचायत मुख्यालयों वाला जिला** – बाड़मेर **(681 ग्रा.पं.)**, उदयपुर (648 ग्रा.पं.)
- सड़कों से जुड़े **न्यूनतम ग्राम पंचायत मुख्यालयों वाला जिला** – कोटा **(158 ग्रा.पं.)**, सिरोही (170 ग्रा.पं.)

  (स्रोत– वार्षिक प्रगति प्रतिवेदन, सार्वजनिक निर्माण विभाग, राजस्थान 2022-23)

- मार्च 2022 तक **राजस्थान में सड़क** घनत्व–81.47 किमी./100 वर्ग किमी
- **राष्ट्रीय स्तर** पर सड़क घनत्व– 165.24 किमी. **(स्रोत– Basic Road Statistics Of India, 2018-19)**
- राजस्थान में सड़क घनत्व प्रति लाख व्यक्ति– 406.7 किमी (2011 की जनगणना के अनुसार)
- राजस्थान में **सर्वाधिक सड़क घनत्व वाला जिला** – डूँगरपुर
- राजस्थान में **न्यूनतम सड़क घनत्व वाला जिला** – जैसलमेर

  (स्रोत– वार्षिक प्रगति प्रतिवेदन, सार्वजनिक निर्माण विभाग, राजस्थान 2022-23)

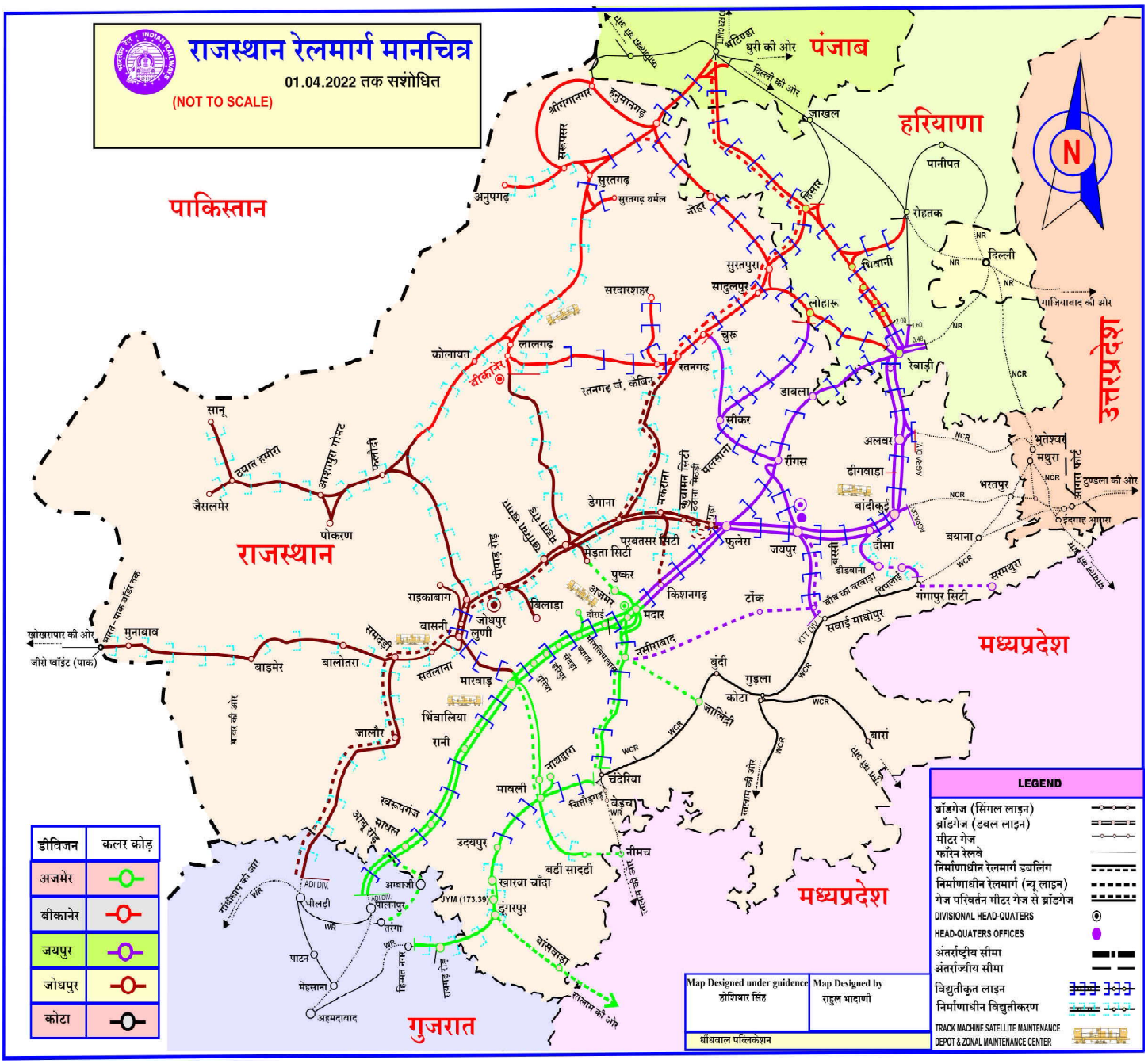

- ✦ राजस्थान का **सबसे छोटा राज्य उच्चमार्ग-SH 34B**(3 कि.मी.) **NH 52 सरोली मोड़ से दुनी** (टोंक) तक
- ● दूसरा सबसे छोटा राज्य उच्चमार्ग- **SH 111A** (8 कि.मी.) **माजरी से नीमराना** (कोटपूतली-बहरोड) तक
- ✦ राज्य उच्चमार्गो की सर्वाधिक संख्या वाला जिला- **नागौर** (30), **जयपुर** (19)
- ✦ राज्य उच्चमार्गो की सर्वाधिक लम्बाई वाला जिला- **नागौर** (1498 कि.मी.) **जोधपुर** (1202 कि.मी.)
- ✦ राज्य उच्चमार्गो की न्यूनतम लम्बाई वाला जिला- **सिरोही** (126 किमी) धौलपुर (186 किमी)
- ✦ **राजस्थान राज्य राजमार्ग अधिनियम 2014** को 8 मई, 2015 से लागू किया गया है।
- ✦ **राजस्थान स्टेट हाईवेज अथॉरिटी का गठन**- 2 जून, 2015 को किया गया।
- ✦ **मुख्य जिला सडकें**- वे महत्वपूर्ण मार्ग, जो विभिन्न जिलों को आपस में व जिलों को मुख्य राज्य राजमार्ग से जोड़ते हैं।
- ✦ **अन्य जिला सडकें**- तहसील मुख्यालयों, खण्ड मुख्यालयों तथा अन्य सड़कों को आपस में जोड़ती हैं।
- ✦ **ग्रामीण सड़कें**- विभिन्न गाँवों को आपस में जोड़ती हैं।

राजस्थान में सड़क विकास हेतु परियोजनाएँ-

- ✦ **चेतक परियोजना**- सीमा सड़क संगठन (BRO) द्वारा 1962 में प्रारम्भ, चेतक परियोजना का मुख्यालय- **बीछवाल (बीकानेर)**।
- ● इस परियोजना में राजस्थान (पंजाब, गुजरात भी) के **सीमावर्ती जिलों** गंगानगर, बीकानेर, जैसलमेर व बाड़मेर में सामरिक महत्व की सीमावर्ती सड़कें बनाने व उनकी देखरेख का कार्य किया जाता है।

21 राजस्थान की जनगणना–2011

- भारत में सबसे पहले मौर्य काल के प्रसिद्ध ग्रन्थ कौटिल्य के 'अर्थशास्त्र' में उस समय के जन्म मृत्यु के आँकड़े रखे जाने का प्रमाण मिलता है, यह भारत में जनगणना के सम्बन्ध में **प्रथम लिखित प्रमाण** है। इसके बाद में अबुल फजल द्वारा लिखित 'आईने अकबरी' में भी जनगणना का उल्लेख मिलता है।
- जनगणना से प्राप्त सूचनाओं के आधार पर सरकार आगामी दस वर्षों की नीतियों व योजनाओं का निर्माण करती है। जनगणना जनसंख्या सम्बन्धी आँकड़ों का प्रमुख स्रोत है इससे सूक्ष्म स्तर पर ग्राम एवं ढाणी तक की जानकारी मिल जाती है। सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, धर्म, मातृभाषा, राज्य, जिला, तहसील, नगर, गाँव आदि के **आधारभूत आँकड़े** जनगणना के माध्यम से ही प्राप्त होते हैं।
- भारत में सबसे पहले जनगणना– 1872 ई. में लार्ड मेयो के काल में हुई थी।
- परन्तु प्रथम व्यवस्थित जनगणना– 1881 ई. में लार्ड रिपन के समय।
- राजस्थान में भी जनगणना 1872 ई. में ब्रिटिश शासनकाल में ही प्रारम्भ हो गयी थी परन्तु यह अव्यवस्थित व अनियमित थी।
- मुहणौत नैणसी की पुस्तक 'मारवाड़ रा परगना री विगत' में उस समय की **मारवाड़ रियासत** के प्रत्येक गाँव की जनसंख्या का विवरण दिया गया है इसी कारण मुहणौत नैणसी को 'राजस्थान में जनगणना का 'अग्रज' कहा जाता है।
- ध्यान रहे– जनगणना संघ सूची का विषय है।
- मार्च 2011 में हुई जनगणना भारत की 15वीं जनगणना थी।
  स्वतंत्रता के पश्चात– 7वीं जनगणना थी।

राजस्थान की जनगणना का तुलनात्मक अध्ययन–

जनसंख्या (Population)

- राजस्थान की **कुल जनसंख्या**– 6.86 करोड़ (6,85,48,437)
  भारत की जनसंख्या का– 5.67%
- राजस्थान की जनसंख्या विश्व की जनसंख्या का लगभग 1.6% है। राजस्थान की जनसंख्या थाईलैण्ड (6.90 करोड़), फ्रांस (6.71 करोड़) के लगभग बराबर है।
- **जनसंख्या की दृष्टि से राजस्थान का स्थान** – 7 वाँ
- ध्यान रहे– 2011 की जनगणना के अनुसार जनसंख्या की दृष्टि से राजस्थान का 8वाँ स्थान था, लेकिन जून 2014 में आन्ध्रप्रदेश से तेलंगाना पृथक होने से राजस्थान का 7 वाँ स्थान हो गया है।
- राजस्थान का **सर्वाधिक जनसंख्या वाला जिला** – जयपुर (66.26 लाख)
- जो राजस्थान की कुल जनसंख्या का 9.67% है।
- जनसंख्या की दृष्टि से **पाँच सबसे बड़े जिले**–
  जयपुर (66.26 लाख)
  जोधपुर (36.87 लाख)
  अलवर (36.74 लाख)
  नागौर (33.07 लाख)
  उदयपुर (30.68 लाख)
- राजस्थान का **न्यूनतम जनसंख्या वाला जिला** – जैसलमेर (6.7 लाख)
- जो राजस्थान की कुल जनसंख्या का 0.98% है।

	2001 की जनगणना	2011 की जनगणना	राजस्थान का स्थान	अंतर
कुल जनसंख्या	5,65,07,188	6,85,48,437	7वाँ	1,20,41,249
		पुरूष– 3,55,50,997		
		महिला– 3,29,97,440		
जनसंख्या वृद्धि दर	28.4%	21.3%	8 वाँ (मणिपुर की संशोधित जनगणना जारी होने के बाद 9वां स्थान)	7.10 की कमी
लिंगानुपात	921	928	22 वाँ	7 की वृद्धि
जनघनत्व	165	200	19 वाँ	35 की वृद्धि
0–6 आबादी	1,06,51,002	1,06,49,504 (15.54%)	--	
0–6 लिंगानुपात	909	888	25 वाँ	21 की कमी
साक्षरता	60.41%	66.11%	26वाँ	5.70 की वृद्धि
पुरूष साक्षरता	75.7%	79.20%	19वाँ	3.5 की वृद्धि
महिला साक्षरता	43.9%	52.12%	27वाँ	8.22 की वृद्धि

22 क्षेत्रीय विकास कार्यक्रम

❖ मुख्यमंत्री क्षेत्रीय विकास योजना-

- बजट घोषणा 2022-23 के अनुसरण में वर्ष **2022-23** में यह योजना प्रारंभ की गयी है।
- योजनान्तर्गत प्रदेश के **दुर्गम, दूरस्थ** एवं **पिछड़े** सहित राज्य के संपूर्ण क्षेत्र में व्यवस्थित आधारभूत संरचना एवं ग्रामीण विकास के लिए प्रदेश की भौगोलिक-आर्थिक-सामाजिक स्तर पर क्षेत्रीय भिन्नताओं, आवश्यकताओं तथा संभावनाओं को ध्यान में रखते हुए समग्र विकास करना है।
- इस योजना में कुल बजट प्रावधान **100 करोड़ रु.** है।

❖ बीस सूत्री कार्यक्रम 2006 -

- बीस सूत्री कार्यक्रम की शुरुआत **1975** में की गई थी तथा वर्ष 1982, 1986, 2006 में पुनः संचरित किया गया। जो **1 अप्रैल, 2007** से लागू हुआ।
- इस कार्यक्रम का **मूल उद्देश्य** पिछड़े एवं निर्धन व्यक्तियों के जीवन स्तर में सुधार करना है।
- इस कार्यक्रम के अन्तर्गत **गरीबी हटाओ जनशक्ति**, **किसान को सहयोग,** श्रमिक कल्याण, खाद्य सुरक्षा, **सबके लिए आवास**, शुद्ध पेयजल, **जन-जन का स्वास्थ्य, सबके लिए शिक्षा**, अनुसूचित जाति, जनजाति, अल्पसंख्यक एवं अन्य पिछड़ा वर्ग कल्याण, **महिला कल्याण,** बाल कल्याण, युवा विकास, **बस्ती सुधार,** पर्यावरण संरक्षण एवं वन वृद्धि सामाजिक सुरक्षा, **ग्रामीण सड़क**, ग्रामीण ऊर्जा, **पिछड़ा क्षेत्र विकास** आदि बिन्दु सम्मिलित है।

❖ मगरा क्षेत्र विकास कार्यक्रम-

- राजस्थान का दक्षिणी मध्य भाग, जो कि पहाड़ी क्षेत्र से घिरा हुआ है, विशेषतः **अजमेर, भीलवाड़ा, पाली, चित्तौड़गढ़ एवं राजसमंद** जो जनजाति क्षेत्र के अन्तर्गत नहीं आता है, **मगरा क्षेत्र** के नाम से जाना जाता है। मगरा क्षेत्र विकास कार्यक्रम **2005-06** में शुरू किया गया, जो उक्त **5 जिलों** के **16 विकास खण्डों** में क्रियान्वित है।

➢ **उद्देश्य**- इस क्षेत्र के निवासियों के आर्थिक एवं सामाजिक स्तर में सुधार लाना।

❖ डांग क्षेत्रीय विकास कार्यक्रम-

- बीहड़ क्षेत्र तथा संकुचित घाटी युक्त दस्यु ग्रस्त क्षेत्र को **डांग क्षेत्र** के नाम से जाना जाता है।
- यह कार्यक्रम **1994-95** में राजस्थान के **8 जिलों** (सवाई माधोपुर, करौली, धौलपुर, कोटा, बूँदी, बारां, झालावाड़, व भरतपुर) में 21 पंचायत समितियों के 357 ग्राम पंचायतों में प्रारम्भ किया गया।
- यह कार्यक्रम वर्ष **2005-06** से पुनः प्रारंभ किया गया है। वर्तमान में उक्त **8 जिलों** की **26 पंचायत समितियों** में संचालित है।

➢ **मुख्य उद्देश्य**- इस क्षेत्र का आर्थिक-सामाजिक विकास करना, डाकुओं से मुक्ति दिलाना व पर्यावरण का विकास करना।

❖ सीमान्त क्षेत्रीय विकास कार्यक्रम (BADP)-

- भारत सरकार द्वारा एक विशेष कार्यक्रम के रूप में सीमावर्ती क्षेत्र विकास कार्यक्रम वर्ष **1993-94** से लागू किया गया।
- सातवीं पंचवर्षीय योजना के दौरान प्रारम्भ यह कार्यक्रम राज्य के **4 सीमावर्ती जिलों** (बाड़मेर, जैसलमेर, बीकानेर व गंगानगर) के **16 खंडों** में क्रियान्वित है।

➢ **मुख्य उद्देश्य**- आधारभूत ढांचे के विकास और सीमावर्ती आबादी के मध्य सुरक्षा की भावना को बढ़ावा देने के माध्यम से सीमावर्ती क्षेत्रों में संतुलित विकास को सुनिश्चित करना।

➢ **नोट**- सीमा प्रबन्धन विभाग (गृह मंत्रालय, भारत सरकार) के पत्र **06 अप्रैल, 2022** के अनुसार ये कार्यक्रम वर्तमान स्वरूप में सितम्बर, 2022 तक ही क्रियाशील रहेगा।

❖ समेकित बंजर भूमि विकास कार्यक्रम-

- केन्द्र सरकार ने इस कार्यक्रम की शुरुआत **1989-90** में की। राजस्थान के **10 जिलों** (जयपुर, सीकर, जोधपुर, टोंक, उदयपुर, अजमेर, भीलवाड़ा, झालावाड़, जैसलमेर व पाली) में इसे **1992-93** प्रारम्भ किया गया।
- इसे **ग्रामीण विकास एवं पंचायतीराज विभाग** के माध्यम से क्रियान्वित किया जा रहा है। इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य **पर्यावरण संतुलन बनाए रखना** व **वनों की कटाई** पर रोक लगाना है।

❖ अरावली वृक्षारोपण योजना-

- 1 अप्रैल, **1992** से प्रारम्भ की गई, 31 मार्च, 2000 तक **जापान की OECF** के सहयोग से राजस्थान के **10 जिलों** (जयपुर, अलवर, नागौर, झुंझुनूं, पाली, सिरोही, दौसा, उदयपुर, बाँसवाड़ा, चित्तौड़गढ़) में संचालित थी। **31 मार्च,** 2000 को यह योजना समाप्त हो गई।

❖ कंदरा सुधार कार्यक्रम-

- इस कार्यक्रम की शुरुआत वर्ष **1987-88** में की गई थी।
- यह कार्यक्रम **8 प्रभावित जिलों** (कोटा, बूँदी, बारां, झालावाड़, सवाईमाधोपुर, करौली, भरतपुर व धौलपुर) में संचालित है।
- यह कार्यक्रम में **कंदराओं** व **बीहड़ों** के फैलाव को रोकने तथा बीहड़ क्षेत्रों की खोई हुई उत्पादन क्षमता को वापस प्राप्त करने हेतु चलाई जा रही है।

23 राजस्थान के प्रमुख अनुसंधान केन्द्र

राजस्थान के प्रमुख अनुसंधान केन्द्र			
क्र.सं.	नाम अनुसंधान केन्द्र	स्थान	विशेष विवरण
1	केन्द्रीय शुष्क क्षेत्र अनुसंधान संस्थान (CAZRI)	जोधपुर	इसकी स्थापना 1959 में ऑस्ट्रेलिया व यूनेस्को के सहयोग से की गई। वर्तमान में काजरी के 5 उपकेन्द्र (बीकानेर, जैसलमेर, पाली, भुज व लद्दाख) हैं। काजरी का मुख्य कार्य राजस्थान में शुष्क व अर्द्धशुष्क क्षेत्रों में वनों का विकास, मरूस्थल की रोकथाम, शोध व अध्ययन का कार्य करना है।
2	शुष्क वन अनुसंधान संस्थान (AFRI)	जोधपुर	इसकी स्थापना भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद् द्वारा 30 जून, 1987 में जोधपुर में की गई। 1988 में इसका नाम 'आफरी' रखा गया। इसका मुख्य कार्य राजस्थान, गुजरात, दादर नगर हवेली तथा दमन दीव (केन्द्रशासित प्रदेश) में शुष्क व अर्द्धशुष्क क्षेत्रों में वानिकी संबंधी अनुसंधान करना है।
3	राष्ट्रीय सरसों अनुसंधान केन्द्र	सेवर (भरतपुर)	इसकी स्थापना 8वीं पंचवर्षीय योजना में 20 अक्टुबर, 1993 को की गई। फरवरी 2009 में इसका नाम बदलकर 'राष्ट्रीय सरसों अनुसंधान निदेशालय' कर दिया गया है।
4	राष्ट्रीय बीजीय मसाला अनुसंधान केन्द्र	तबीजी (अजमेर)	भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् द्वारा 2000 में स्थापित।
5	केन्द्रीय शुष्क क्षेत्र उद्यानिकी (बागवानी) अनुसंधान केन्द्र(NRCAH)	बीछवाल (बीकानेर)	स्थापना– 1993 में
6	खजूर अनुसंधान केन्द्र	बीकानेर	स्थापना– 1978 में
7	बेर अनुसंधान केन्द्र	बीकानेर	
8	राष्ट्रीय ऊँट अनुसंधान केन्द्र	जोड़बीड़ (बीकानेर)	भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् ने 'ऊष्ट्र परियोजना निदेशालय' की स्थापना 5 जुलाई, 1984 को बीकानेर में की थी। जिसे 20 सितम्बर, 1995 को क्रमोन्नत कर 'राष्ट्रीय ऊष्ट्र अनुसंधान केन्द्र' नाम दिया गया।
9	राष्ट्रीय अश्व अनुसंधान केन्द्र	जोड़बीड़ (बीकानेर)	राष्ट्रीय अश्व अनुसंधान केन्द्र का मुख्यालय हिसार (हरियाणा) में है, लेकिन इसका एक परिसर जोड़बीड़ (बीकानेर) में स्थित है। 1989 में बीकानेर में राष्ट्रीय अश्व अनुसंधान केन्द्र के इस उप परिसर की स्थापना की गई।
10	कपास सुधार परियोजना केन्द्र	गंगानगर	स्थापना– 1967
11	केन्द्रीय कृषि फार्म	सूरतगढ़ (गंगानगर)	15 अगस्त, 1956 को रूस की सहायता से स्थापना। यह एशिया का सबसे बड़ा कृषि फार्म है।
12	केन्द्रीय कृषि फार्म	जैतसर (अनूपगढ़)	1962 में कनाडा की सहायता से स्थापना।
13	पश्चिम क्षेत्रीय बकरी अनुसंधान केन्द्र	अविकानगर (टोंक)	
14	भैंस प्रजनन एवं अनुसंधान केन्द्र	वल्लभनगर (उदयपुर)	राजुवास (बीकानेर) द्वारा संचालित है।
15	केन्द्रीय भेड़ व ऊन अनुसंधान केन्द्र	अविकानगर (टोंक)	भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् द्वारा 1962 में स्थापना।
16	मत्स्य सर्वेक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र	उदयपुर	स्थापना– 1958
17	बाजरा अनुसंधान केन्द्र	मण्डोर (जोधपुर)	ध्यान रहे– बाड़मेर में भी बाजरा अनुसंधान केन्द्र खोलने की घोषणा हुई, लेकिन अभी तक नहीं खुला है।

24 राजस्थान में सहकारिता

❖ **सहकारिता–** सहकारिता दो शब्दों **सह+कारिता** से मिलकर बना है जिसका अर्थ है **मिलजुल कर कार्य करना**/अनेक व्यक्तियों या संस्थाओं द्वारा किसी समान उद्देश्य की प्राप्ति के लिए मिलकर प्रयास करना **सहकार** (Cooperation) कहलाता है। **समान उद्देश्य** की पूर्ति के लिए अनेक व्यक्तियों या संस्थाओं की सम्मिलित संस्था को **सहकारी संस्था** कहते है।

- **नारा–** एक सबके लिए सब एक के लिए।

➢ **उद्देश्य–** सहकारिता आन्दोलन का ध्येय **किसानों, श्रमिकों शिल्पकारों**, लघु व्यवसायियों तथा विविध स्तरों पर उत्पादक गतिविधियों में संलग्न जन साधारण को **बिचौलियों के शोषण से मुक्त कराना,** सामाजिक एवं सांस्कृतिक विकास सुनिश्चित करना, **श्रम एवं उत्पाद** का उचित मुल्य उपलब्ध करवाना आदि।

➢ **सहकारिता के सिद्धान्त–**

1. स्वैच्छिक तथा खुली सदस्यता
2. सदस्यों का लोकतांत्रिक नियंत्रण
3. सदस्यों की आर्थिक भागीदारी
4. स्वायत्तता तथा स्वाधीनता
5. शिक्षा, प्रशिक्षण तथा जानकारी
6. सहकारी सोसायटियों में सहयोग
7. समुदाय के लिए सरोकार

✦ सहकारिता **'राज्य सूची'** का विषय है।
✦ राजस्थान में सहकारी आन्दोलन की शुरुआत **सन् 1904** में **अजमेर** से हुई।
✦ राज्य के प्रथम सहकारी कृषि बैंक की स्थापना **1904** में **डीग** में की गई।
✦ 26 अक्टूबर, 1905 को **भिनाय** (केकड़ी) में राज्य की पहली **'सहकारी समिति'** की स्थापना की गई।
✦ राजस्थान सहकारी समिति अधिनियम,1953
✦ राजस्थान सहकारी समिति अधिनियम, 2001

❖ सहकारी साख संरचना–

- राजस्थान में सहकारिता क्षेत्र में **29 केंद्रीय सहकारी बैंक,** 24 दुग्ध संघ, 38 उपभोक्ता थोक भण्डार, **36 प्राथमिक भूमि विकास बैंक,** 7523 प्राथमिक कृषि साख सहकारी समितियाँ, 275 फल एवं सब्जी विपणन समितियाँ है।
- राज्य में 22 संघों सहित कुल **38,950 सहकारी समितियाँ** प्रदेश में पंजीकृत है।
- वर्तमान में राज्य में **अर्बन कॉपरेटिव बैंकों** की संख्या– **37**
- राज्य में कार्यरत क्रय–विक्रय सहकारी समितियाँ– **275**
- राज्य में पंजीकृत सहकारी उपभोक्ता हॉलसेल भण्डार– **38**
- राज्य में पंजीकृत महिला सहकारी समितियाँ– **6087**
- राज्य में पंजीकृत राजीविका महिला सर्वांगीण विकास सहकारी

(स्रोत– आर्थिक समीक्षा रिपोर्ट– 2022–23)

❖ प्रमुख सहकारी संस्थाएँ–

✦ **राजस्थान राज्य सहकारी बैंक लिमिटेड (अपेक्स बैंक)–** **04 अक्टूबर, 1953** (जयपुर)

✦ **राजस्थान राज्य सहकारी बुनकर संघ –** **26 अगस्त, 1957** सहकारिता के माध्यम से हथकरघा से जुड़े बुनकरों की समस्याओं के समाधान के लिए गठित की गई है।

✦ **राजस्थान राज्य सहकारी विपणन संघ लिमिटेड (राजफैड)–** **26 नवंबर, 1957** को स्थापना।

- **कार्य–** कृषि उत्पादों की समर्थन मूल्य पर खरीद करना व प्राथमिक क्रय–विक्रय सहकारी समितियों के माध्यम से किसानों को उन्नत खाद, बीज व दवाइयाँ उपलब्ध कराना।

✦ **राजस्थान राज्य सहकारी मुद्रणालय लिमिटेड–** **1960** (जयपुर)

✦ **राजस्थान राज्य सहकारी उपभोक्ता संघ लिमिटेड (कॉनफैड)–** **1967** (जयपुर), राज्य में उपभोक्ताओं को **उत्तम गुणवता** की वस्तुओं को उचित मूल्य पर दिलवाने के लिए।

✦ **श्री गंगानगर सहकारी तिलहन प्रोसेसिंग मिल्स लि.– गजसिंहपुरा,** 1976, वर्तमान में बंद है।

✦ **राजस्थान सहकारी डेयरी संघ –** (RCDF) – जयपुर **1977** में स्थापना। दुग्ध संयंत्र व अवशीतन केन्द्र संचालित करता है।

✦ **श्री गंगानगर सहकारी कॉटन कॉम्प्लेक्स–** 1986 राष्ट्रीय सहकारी विकास निगम व **विश्व बैंक** के सहयोग से स्थापित मॉर्डन सहकारी कताई मिल है।

✦ **राजस्थान राज्य तिलहन उत्पादक सहकारी संघ (तिलम संघ)– 3 जुलाई, 1990**

- **यूरोपियन आर्थिक समुदाय** व **विश्व बैंक** के सहयोग से स्थापित है। राज्य में इसकी **आठ ईकाईयाँ** (जालौर, झुंझुनूं, मेड़ता सिटी, गंगानगर, गंगापुर, बीकानेर, कोटा, फतेहनगर) हैं, जिनमें से वर्तमान में **तीन** (**फतेहनगर, कोटा, गंगानगर**) ही संचालित हैं।

✦ **राजस्थान सहकारी शिक्षा और प्रबंधन संस्थान (RICEM)–** **1990** (जयपुर)

✦ **राजस्थान राज्य सहकारी स्पिनिंग व जिनिंग मिल्स फेडरेशन लिमिटेड–** (SPINFED) **1 अप्रैल, 1993** को स्थापना।

- **गुलाबपुरा, गंगापुर** (भीलवाड़ा) व **हनुमानगढ़** की तीन सहकारी कताई मिलों व गुलाबपुरा की सहकारी जिनिंग मिल को मिलाकर स्पिनफैड की स्थापना की गई।

25 राजस्थान में जनजातियाँ

- राजस्थान का **दक्षिणी** एवं **दक्षिणी पूर्वी भाग** जनजाति बहुल क्षेत्र है। राजस्थान में मुख्यतः **भील, मीणा, गरासिया, सहरिया, कथौड़ी** व **डामोर** जनजातियाँ पायी जाती हैं। राजस्थान भारत के 4 प्रमुख जनजाति बहुल राज्यों में आता है।
- **वर्ष 2011 की जनगणना** के अनुसार राजस्थान में जनजाति की आबादी 92,38,534 है। जो राजस्थान की कुल जनसंख्या का 13.48% है।
- जनजाति **जनसंख्या के आधार पर** राजस्थान का देश में **चौथा स्थान** है। राज्य की कुल जनसंख्या में **प्रतिशत के हिसाब** से राजस्थान का देश में **13वाँ स्थान** है।

- **नोट-** 1951 में राजस्थान में जनजाति आबादी 3.36 लाख थी, जो राजस्थान की उस समय की कुल जनसंख्या की 2.04% थी।

- **प्रतिशत की दृष्टि** से भारत में सर्वाधिक जनजातियाँ **मिजोरम** (94.4%) में है, तथा **जनसंख्या की दृष्टि** से सर्वाधिक जनजाति आबादी **मध्यप्रदेश** (153.1 लाख) में है।
- राजस्थान में **सर्वाधिक** जनजाति जनसंख्या वाले जिले-
  उदयपुर (15.25 लाख) **बाँसवाड़ा** (13.73लाख)
- राजस्थान में **न्यूनतम** जनजाति जनसंख्या वाले जिले-
  बीकानेर (7779) **नागौर** (10412)
- राजस्थान में प्रतिशत की दृष्टि से **सर्वाधिक जनजाति प्रतिशत** वाले जिले- **बाँसवाड़ा (76.4%), डूँगरपुर (70.8%)**
- राजस्थान में प्रतिशत की दृष्टि से **न्यूनतम जनजाति प्रतिशत** वाले जिले- **नागौर (0.3%), बीकानेर (0.3%)**
- राजस्थान में जनसंख्या की दृष्टि से **जनजातियों का क्रम-**
  मीणा (43.46 लाख), **भील** (41 लाख), **गरासिया** (3.14 लाख), **सहरिया** (1.11 लाख), **डामोर** (91.5 हजार)

❖ मीणा जनजाति-

- संख्या की दृष्टि से मीणा जनजाति **राजस्थान की सबसे बड़ी जनजाति** है। मीणा जनजाति राजस्थान के मुख्यतः **उदयपुर, सलूम्बर, जयपुर, जयपुर ग्रामीण, प्रतापगढ़, दौसा, सवाईमाधोपुर, गंगापुर सिटी व करौली** जिलों में पायी जाती है।
- इनकी राजस्थान में लगभग 43,45,528 (2011 के अनुसार) आबादी है। जो राजस्थान की कुल जनजातियों का लगभग 47% है।
- राजस्थान में **सर्वाधिक** मीणा जनजाति की संख्या वाले जिले **उदयपुर** (7,17,696), **जयपुर** (4,67,364) व **प्रतापगढ** (4,47,023) **करौली** (3,23,342) **व अलवर**(2,73,327) हैं।

  स्रोत- जनगणना विभाग, भारत सरकार।
- **मीणा शब्द** का शाब्दिक अर्थ **मत्स्य/मछली** होता है। मीणा जाति की उत्पत्ति भगवान **विष्णु के मत्स्यावतार** से मानी जाती है। मीणा जनजाति के लिए **मछली का माँस** खाना निषेध है। मुनि मगन सागर ने अपने ग्रन्थ **'मीणा पुराण'** में मीणा जाति को भगवान **मीन का वंशज** बताया है। मीणाओं का उल्लेख **मत्स्य पुराण** में भी मिलता है।
- आमेर रियासत में कछवाहों का शासन प्रारम्भ होने से पहले इस इलाके पर **मीणाओं का शासन** था। आमेर रियासत में नये राजा के राज्यारोहण के मौके पर **मीणा सरदार** द्वारा ही राजतिलक किया जाता था।
- **कर्नल जेम्स टॉड** ने इनका मूल निवास **'कालीखोह पर्वतमाला'** (अजमेर, आगरा के मध्य) माना है।
- मीणा जनजाति के भाट के अनुसार मीणों में **13 पाल, 32 तड़** तथा **5200 गोत्र** पाए जाते हैं।
- मीणा जनजाति की **दो उपजातियाँ** (वर्ग) है।
  1. जमींदार मीणा 2. चौकीदार मीणा
- **रावत मीणा- अजमेर जिले** में सर्वाधिक निवास करते हैं।
- **सुरतेवाल मीणा-** मीणा जाति के पुरूष द्वारा **दूसरी जाति की स्त्री** से शादी पर उत्पन्न संतान सुरतेवाल कहलाते हैं।

❖ भील जनजाति-

- भील जनजाति संख्या की दृष्टि से राजस्थान की **दूसरी बड़ी जनजाति** है। भील राजस्थान की **सबसे प्राचीन जनजाति** है।
- भील शब्द द्रविड़ भाषा के **'बील'** का अपभ्रंश है जिसका अर्थ है- **तीर कमान**। ऐसा माना जाता है कि धनुष बाण चलाने में प्रवीण होने के कारण ही सम्भवतः यह जाति **भील** नाम से प्रसिद्ध हुई।
- कुशलगढ़ स्थान पर **कुशला भील**, डूंगरपुर पर **डूंगरिया भील**, बांसवाड़ा पर **बांसिया भील** तथा कोटा पर **कोटिया भील** शासकों का शासन था।
- राजस्थान के दक्षिण क्षेत्र, दक्षिण पश्चिम क्षेत्र में भील आबादी सर्वाधिक पायी जाती है। राजस्थान के **बाँसवाड़ा, डुँगरपुर, उदयपुर, सलूम्बर, भीलवाड़ा, शाहपुरा** व **सिरोही** जिलों में भील सर्वाधिक पाये जाते हैं।
- राजस्थान में भीलों की कुल संख्या लगभग 41,00,264 है। जो राजस्थान की कुल जनजातियों का लगभग 44.3% है।
- राजस्थान में भीलों की सर्वाधिक आबादी वाले जिले-
  बाँसवाड़ा (13,39,679) **डूँगरपुर** (6,86,981)
  उदयपुर (6,52,005) **प्रतापगढ़** (99,429)
- **भीलों की उत्पत्ति** के बारे में विभिन्न **विद्वानों के मत** निम्न प्रकार हैं-
  कर्नल टॉड ने- **वनपुत्र** की संज्ञा दी है।
  रिजले एवं **क्रुक** - **द्रविड़ों से उत्पत्ति**
  थॉमसन - **गुजराती**
- **रोने** ने अपनी पुस्तक **Wild Tribes of India** में भीलों का मूल स्थान **मारवाड़** बताया है।
- **जी. एस. थॉमसन** ने **'भीली व्याकरण'** नामक पुस्तक लिखी है।

❖ गरासिया जनजाति-

- राजस्थान में जनसंख्या की दृष्टि से जनजातियों में गरासिया **तृतीय स्थान** पर हैं। इनकी कुल आबादी **3,14,194** है, जो राजस्थान की कुल जनजातियों का लगभग **3.4%** है।